बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका

बालप्रहरी

अक्टूबर–दिसंबर, 2020

मूल्य 25 रुपए

पेपरमैसी : रद्दी कागज से गिलास,थाली व मुखौटा तैयार करें

- उदय किरौला

नीचे प्लेट, थाली और लोटे के चित्र तुम्हें दिखाई दे रहे हैं। इस चित्र में बना लोटा, थाली व प्लेट बाजार से खरीद कर नहीं लाये गये हैं। इसे बच्चों ने स्वयं बनाया है। आप भी ऐसा लोटा, थाली, प्लेट, गिलास या मुखौटा बनाकर अपने घर की सजावट कर सकते हैं।

तुम्हें पता है इस लोटे व थाली को रद्दी अखबार के कागज से बनाया गया है। रद्दी कागज से लोटा, थाली, गिलास आदि बनाने की इस विधा को 'पेपर मैसी' कहा जाता है। पेपर मैसी फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है MASHED PAPER अर्थात मसला हुआ कागज। इस विधा में कागज को पानी में भिगोकर इस्तेमाल किया जाता है।

पेपर मैसी के तहत हम लोटा, थाली, गिलासा कटोरे, मुखौटे आदि तैयार कर सकते हैं। इसके लिए हमें पुराने अखबार या रद्दी कागज की जरूरत होती है। हम थाली, गिलास, कटोरा, लोटा या बोतल जो वस्तु बनाना चाहते हैं। सांचे के बतौर हमें वह सामान चाहिए। यदि हम मुखौटा बना रहे हैं तो हमें बड़े गुब्बारों की जरूरत होगी। यदि हम कठपुतली के लिए छोटा मुखौटा बना रहे हैं। तब हमें छोटे गुब्बारों की जरूरत होगी।

सबसे पहले हमें अखबार या रद्दी कागज के छोटे-छोटे टुकड़े बनाने हैं। इन टुकड़ों को बाल्टी या किसी चौड़े मुंह वाले बरतन में भिगोना है। प्लेट, थाली, गिलास या कटोरा बनाना हो तो गिलास आदि के बाहरी ओर भीगे कागज की एक परत लगानी है। एक परत पानी लगे कागज की परत लगाने के बाद हमें दूसरी परत गोंद लगे कागज की लगानी है। जैसे पहली परत लगाई गई है। दूसरी परत पर आपके कागज पर गोंद लगा हो। यदि आपने पहली परत में बीच में कहीं पर थोड़ी भी जगह छोड़ी होगी तो यह गोंद उस थाली या गिलास आदि पर चिपक जाएगा। दूसरी परत गोंद या लेई की लगाने के बाद हमें लगभग 10 से अधिक परत गोंद लगे कागज के टुकड़े चिपकाने होंगे। यदि घड़ा, परात आदि बना रहे हैं तो बहुत अधिक परतें लगानी होंगी। आपको थोड़ा धैर्य रखना होगा। यदि आपने जल्दीबाजी के चक्कर में कम परतें लगाई तब आपका लोटा या दूसरी वस्तु अच्छी नहीं बन पाएगी। ध्यान देना होगा कि परतें बिल्कुल समान हों। कहीं पर अधिक परत और कहीं पर कम परत होने से हमारी थाली या गिलास सुंदर नहीं दिखेगा। यदि परात, घड़ा या बड़ी थाली बना रहे हों तो बीच में कॉटन के समान टुकड़े काटकर भी चिपका सकते हैं।

थाली, कटोरा या लोटा आदि एक सांचे के तौर पर आप प्रयोग में ला रहे हैं। प्लेट, थाली, लोटे के कोने पर या जहां उभार हो वहां पर आपको सावधानी से कागज के टुकड़े लगाने होंगे। जल्दीबाजी में यदि आपने एक बड़े कागज को काटकर लगाने का प्रयास किया तो आपके लोटे या प्लेट आदि में स्पष्ट लुक नहीं आ पाएगा।

यदि बड़ा मुखौटा बना रहे हैं तब बड़े गुब्बारे के ठीक आधे पर एक ओर कागज की परतें पहले बताए अनुसार लगाएंगे। यदि आप कटपुतली के लिए छोटे मुखौटे बना रहे हैं तब छोटे गुब्बारे के आधे भाग पर कागज की परते चिपकाएंगे। आपने थाली, लोटा, गिलास, मुखौटा या बोतल जो भी बरतन बनाया है। बनाने के बाद उसे कम से कम एक दिन धूप में सुखाएंगे। अगले दिन आप थाली, कटोरा या गिलास को हल्के से बाहर निकालेंगे तो वह आसानी से बाहर निकल जाएगा।

कई लोगों ने तांबे की बड़ी गागर या बड़ा घड़ा भी पेपरमैसी के तहत बनाए हैं। पर जब आप बड़े घड़े, लोटे या बोतल आदि को अलग करेंगे तो यह थाली व गिलास की तरह आसानी से नहीं निकल पाएगा। इसके लिए आपको घड़े, लोटे या बोतल के नीचले हिस्से से एक ओर ऊपरी सिरे तक ब्लेड, चाकू आदि से हल्के से चीरना होगा। इसके बाद घड़ा, लोटा या बोतल अलग निकल जाएगा। अलग निकलने के बाद घड़े, थाली, गिलास, कटोरे के ऊपरी भाग को कैंची से एक सीध में काट लें। घड़ा, लोटा या बोतल जिसे चीरकर आपने बाहर निकाला है। उसको हल्के हाथ से जोड़ते हुए गोंद लगे कागज अंदर और बाहर से चिपका दें। इससे आपका चीरा लगा हुआ भाग पुन: ढक जाएगा। स्पष्ट आकृति तैयार हो जाएगी। इसके लिए आपको पुन: गोंद लगे कागज के छोटे टुकड़े चिपकाने होंगे। प्रयास करें कि पहले गिलास, कटोरा या छोटी वस्तु तैयार करें। सबसे पहले हमने केवल पानी लगे कागजों की एक परत इसलिए लगाई कि बाद में बरतन आसानी से अलग हो जाए। यदि आपने पहली परत लगाते समय कहीं पर थोड़ी सी भी जगह छोड़ दी तो आपकी प्लेट आदि वस्तुएं आसानी से बाहर नहीं निकल पाएंगी।

आपको लगता है कि आपने अपना कटोरा, थाली, बोतल या दूसरी आकृति सही बना दी है। तब उसके बाहर और अंदर गोंद मिला हुआ गेरू या लाल मिट्टी लगाकर उसे फिर सुखाने रख देना है। सूखने पर उसके ग्राउंड पर लाल रंग पोतकर सफेद रंग से कोई डिजाइन बना सकते हैं। या अपने मन पंसद रंगों का प्रयोग कर सकते हैं। तैयार गिलास, लोटे का प्रयोग कलमदान या फूलदान आदि सजावट के लिए उपयोग कर सकते हैं। बड़ी थाली या परात पर आप सजावट के साथ रंगों से कुछ लिख भी सकते हैं।

यदि आपने मुखौटे तैयार किए हैं। तब आप आंख व नाक के लिए बीच में छेद कर सकते हैं। मुखौटे के दोनों ओर कान पर डोरी लगाकर इसे रामलीला या दूसरे नाटकों में लगाए जाने वाले मुखौटे की तरह उपयोग में ला सकते हैं। नाक व मुंह आदि को रंगों से भी सजाया जा सकता है। यदि कठपुतली के मुखौटे बना रहे हैं तब चेहरे को आवश्यक रंगों से सजा सकते हैं। काली ऊन के तागों से आप सिर पर बाल बना सकते हैं। मूंछ बनाने के लिए भी ऊन के तागे या रूई का प्रयोग किया जा सकता है। आप खाली समय का सदुपयोग करके नई-नई वस्तुएं बनाकर अपनी कला का प्रदर्शन कर सकते हैं। आजकल तो व्यवसाय बतौर भी पेपर मैसी को लोगों ने अपनाया है।

RNII UTTHIN/2004/18604
वर्ष-16 अक्टूबर-दिसंबर, 2020 अंक-04

संरक्षक :
डॉ. सरस्वती बाली
डॉ. भैरूंलाल गर्ग
श्री नवीन पाठक
श्री विपिनचंद्र जोशी
डॉ. जे.एस. मेहता
श्रीमती मंजू पांडे 'उदिता'
श्री सुरेंद्रसिंह नेगी
श्री मोहनलाल टम्टा
डॉ. सुनीता रतूड़ी
डॉ. आर.सी.रस्तोगी
डॉ. बी.पी. साह
श्री राजकुमार जैन 'राजन'
श्री के.पी.एस.अधिकारी
डॉ. सलमा जमाल
श्रीमती श्यामा माहेश्वरी
डॉ. दीपा कांडपाल
श्री रतनसिंह किरमोलिया
श्री नीरज पंत
श्री प्रकाश जोशी
सुश्री विनीता जोशी
श्रीमती विमला जोशी 'विभा'
डॉ. कामना सिंह
श्री महेन्द्र सिंह राणा
सुश्री प्रभा किरण जैन
सुश्री कमला मेनन
डॉ. दीक्षा बिष्ट
डॉ(मेजर) शक्ति राज
श्री दयानंद आर्य
श्रीमती पुष्पा पाल
श्री रविकांत खंडेलवाल
श्री संजय प्रजापति
श्री श्याम पलट पांडेय
श्रीमती नीमा पांडेय

संपादक : उदय किरौला
संपादकीय सहयोग : प्रमोद तिवारी
संतोष किरौला
कला पक्ष : मनोज बिनवाल
इंटरनेट संस्करण : वेद प्रकाश

सदस्यता शुल्क

संरक्षक सदस्यता	:	5,000 रु.
आजीवन सदस्यता	:	2,000 रु.
3 वर्ष का शुल्क	:	300 रु.
एक प्रति	:	25 रु.

बालप्रहरी खाता संख्या : 0962000101357002
आई.एफ.सी कोड : पी.यू.एन.बी. 0096200
बैंक नाम : पंजाब नेशनल बैंक, अल्मोड़ा

संपर्क : संपादक बालप्रहरी : दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601
मो.9412162950, 9557619107

E-mail. : balprahri@gmail.com
Web.: www.balprahri.com
Face book- udai kiroula balprahri
Whats App - 94 12 16 29 50

बच्चों के नाम पाती			02
आपके पत्र			03
बच्चों की कलम से			05
कहानी :	स्कूली पिकनिक	नीलू चोपड़ा	23
	चमगादड़ों की अनोखी दुनिया	डॉ. रमेश सोमवंशी	25
	देश प्रेम	मीरा जैन 'भारत'	29
	दशहरे का उपहार	ललित राठौर	33
	धन्यवाद राजू	गोविंद शर्मा	34
	टॉफी	डॉ. प्रभा पंत	35
	तोहमत	डॉ. कुसुम रानी नैथानी	38
	परवाह	आशीष श्रीवास्तव	40
	रिमि का सच	प्रभा पारीक	41
	बिल्ली के गले में घंटी	नफेसिंह कादयान	44
	धौली और देवदार	नंदकिशोर हटवाल	48
कहानी :	कुमाउनी/गढ़वाली कविता	विनीता जोशी/डॉ. प्रीतम अपछ्याण	21
	ओ गौरैया/तिलक	भगवतीप्रसाद गौतम/हेमंतकुमार चावड़ा	30
	किताब/सर्दी	डॉ.जयजयराम 'आनंद'/सुरेश सौरभ	34
	खरबूजा	गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'	34
	भाईचारा/चूहे जी	पवन पहाड़िया/डॉ. शशि गोयल	37
	बस्ता बोला/	श्यामनारायण श्रीवास्तव	37
	दीवाली के दीप	डॉ. राकेश चक्र	42
	किताब/सूरज आया	कैलाश तिवारी/बलदाऊराम साहू	46
	गूगल दादा/रविवार	डॉ. करूणा पांडेय/मुरलीधर वैष्णव	46
	डॉक्टर अंकल	डॉ. नरेंद्रनाथ लाला	46

जानकारी

बालसाहित्य की थाती-डॉ.शेरजंग गर्ग	: डॉ.प्रभा किरण जैन	04
बोलो देवीदा	: देवेंद्र मेवाड़ी	31
राष्ट्रीय धरोहर-हाथी	: कृपालसिंह शीला	32
ऐसा क्यों होता है?	: घमंडीलाल अग्रवाल	43

प्रतियोगिताएं

निबंध प्रतियोगिता - 36	15
कविता लिखो प्रतियोगिता- 65	16
सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-65	18
कहानी लिखो प्रतियोगिता-65	19

अन्य

अंतर बताओ	15
सुडोकू	16
चुटकुले	17
क्या आप जानते हैं?	18
पहेलियां/अनमोल वचन	20
अधूरा चित्र पूरा करो	20

अन्य

पुस्तक समीक्षा	22
अंक पहेली	27
खोजबीन	33
चित्र पहेली	40
बालप्रहरी समाचार	47
पुस्तक प्राप्ति	48

बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा की ओर से प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक उदय किरौला द्वारा प्रकाश पब्लिकेशन हल्द्वानी से मुद्रित तथा दरबारी नगर, पूर्वी पोखरखाली, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) से प्रकाशित। संपादक - उदय किरौला

बच्चों के नाम पाती

दोस्तो,

क्रिसमस पर सारे बच्चे खुश थे। स्कूल की छुट्टी थी। आज छात्रावास से आउटिंग थी। सारे बच्चे छात्रावास से बाजार होते हुए गिरजाघर जा रहे थे। क्रिसमस की वजह से गिरजाघर को सजाया गया था। रेखा मैडम ने सारे बच्चों को गिरजाघर के बाहर मैदान में बैठने को कहा। ग्रुप लीडर कक्षा 12 की अरूणा की पहल पर सारे बच्चे गोल घेरे में बैठ गए। गोल घेरे में ही रेखा मैडम और दूसरी शिक्षिकाएं भी जमीन पर बैठ गई। ग्रुप लीडर अरुणा ने सभी बच्चों से कहा कि जाते समय कोई भी कूड़ा यहां पर न छोड़ें। उसे या तो अपने बैग में रख लें या सामने कूड़ेदान में डाल दें।

रेखा मैडम ने कहा, ''प्यारे बच्चो! तुम सबको क्रिसमस की हार्दिक शुभकामनाएं। तुम सबको पता है आज क्रिसमस का त्यौहार है। क्रिसमस ईसाई धर्म का सबसे बड़ा त्यौहार है। ईसाई धर्म के लोग यीशू को अपना भगवान मानते हैं। माना जाता है कि उनका जन्म 25 दिसंबर को हुआ था, इसलिए उनके जन्म दिन को यादगार बनाने के लिए क्रिसमस का त्यौहार मनाया जाता है।''

कक्षा 6 की प्रियंका ने पूछा, ''मैम! कहते हैं कि क्रिसमस पर शांता क्लाज बच्चों को उपहार देते हैं। इसके बारे में हमें बताएं प्लीज।''

रेखा मैम ने कहा, ''प्यारे बच्चो! संत निकोलस नाम के एक आदमी थे। उनकी प्रभु यीशू में बहुत आस्था थी। बचपन में ही उनके माता-पिता की मृत्यु हो गई। संत निकोलस ने अपनी पढ़ाई जारी रखी। बड़े होकर वे एक चर्च में पादरी बन गए। वे बच्चों से बहुत प्यार करते थे। विशेषकर गरीब एवं असहाय बच्चों की वे मदद करते थे। कहा जाता है कि एक बार एक गरीब की लड़की का विवाह होना था। उस गरीब के पास पैसा नहीं था। एक दिन संत निकोलस ने जुराब के अंदर सोने की अशर्फी रखकर उसे उस गरीब के घर के दरवाजे पर रख दिया। उस गरीब ने उन अशर्फियों से अपनी लड़कियों का विवाह किया। संत निकोलस जिसकी भी मदद करते उसे आभास तक नहीं होता कि किसने उसकी मदद की। वे बच्चों को गिफ्ट भी रात को चुपचाप दे जाते थे, ऐसा कहा जाता है।''

''मैम! ये काम तो शांता क्लाज करते थे। ऐसा हमने सुना है। क्या संत निकोलस ही शांता क्लाज थे?'' रेशमा ने पूछा। रेशमा के प्रश्न का उत्तर देते हुए रेखा मैडम ने कहा, '' प्यारे बच्चो! ये दोनों एक ही हैं। संत निकोलस को ही लोग बाद में शांता क्लाज के नाम से पुकारने लगे। ये नाम ही उनका प्रचलन में आ गया। शांता क्लाज बच्चों को रात में चुपचाप गिफ्ट दे जाते थे। इसलिए वे बच्चों के प्रिय हो गए।''

'' क्रिसमस, होली-दीपावली, ईद, बैशाखी आदि सभी त्यौहारों को हम लोग मिलजुल कर मनाते हैं। हमारे छात्रावास में तो लगभग सभी धर्म के बच्चे रहते हैं। हम सब आपस में मिलकर रहते हैं। कई बार सोशल मीडिया में लोग शेयर करते हैं कि अमुक धर्म के लोग आतंकी होते हैं, अत्याचारी होते हैं। ऐसा क्यों कहा जाता है मैम!'' विनीता ने पूछा।

''प्यारे बच्चो! दुनिया के सारे धर्म एक दूसरे की मदद करने की बात करते हैं। एक दूसरे का सम्मान करने की बात करते हैं। आतंकी किसी एक धर्म या जाति में जन्म नहीं लेते। कई बार तुमने देखा होगा, हमारे अपने ही परिवार में कुछ लोग खूंखार हो जाते हैं। एक दूसरे की जान लेने को तैयार हो जाते हैं। क्या आप इसे किसी एक धर्म से जोड़ेंगे? आतंकी की कोई जाति नहीं होती, उसका कोई धर्म नहीं होता। वह किसी भी परिवार, समाज या धर्म का हो सकता है। इसलिए आतंकी किसी एक धर्म में ही होते हैं, ऐसा कहना उचित नहीं है।''

थोड़ी देर रूककर रेखा मैम ने कहा, ''बच्चो! कुछ लोग अफवाह फैलाकर समाज को जाति, धर्म व क्षेत्र के नाम पर बांटने का काम करते हैं। कुछ लोग चुनाव जीतने के लिए भी समाज को बांटने का काम करते हैं।''

''मैम जी! क्या इंसानों की तरह जानवरों का भी कोई धर्म होता है?'' कक्षा 6 की छोटी बच्ची कोमल ने खड़े होकर पूछा। कोमल की बात पर सारे बच्चे हंस पड़े। कोमल ने कहा, ''मैम जी! पिछले रविवार को मुझे एक चींटी ने काट दिया। सच कहूं मुझे काफी दर्द हुआ। मेरी बहन ने कहा कि जरूर चींटी दूसरे धर्म की होगी। हमारे धर्म के लोग तो इतने खतरनाक नहीं होते हैं।''

''बच्चो! इंसानों की तरह जानवरों का कोई धर्म नहीं होता है। पर वे अपना धर्म पूरा निभाते हैं। कुत्ता अपने घर की रखवाली करने का धर्म निभाता है। शहद बनाने वाली मधुमक्खियां रानी मधुमक्खी के लिए फूलों का रस ले जाकर अपना धर्म निभाती हैं। यानी सब अपना कर्तव्य निभाते हैं। एक मानव है जो समाज को बांटकर अपना उल्लू सीधा करता है।''

''मैम! हमें चर्च भी देखना है।'' पीछे से कुछ बच्चों ने दबी जुबान से कहा। ''चलो! ये बातें तो कभी भी कर लेंगे। पर इतना ध्यान रखना। आप सब लोग अफवाह फैलाने वाले लोगों की बातों पर ध्यान न देना।'' सारे बच्चे बातचीत करते हुए चर्च की ओर चल दिए।

कहानी तुम्हें कैसी लगी, जरूर लिखना। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करूंगा।

- तुम्हारा दोस्त
उदय किरौला

मेरे गांव का नाम सिला है। यह उत्तराखंड के जनपद देहरादून से लगभग 60 किलोमीटर दूर है। हमारे खट का नाम बहलाड़ है। जिसके अंतर्गत 15 गांव शामिल हैं। बहलाड़ के अंतर्गत ही सिला गांव स्थित है। गांव में लगभग 20-21 परिवार रहते हैं। गांव का मुख्य व्यवसाय पशुपालन तथा खेती है। हमारे क्षेत्र में कई प्राथमिक विद्यालय हैं। गांव के अधिकतर बच्चे राजकीय इंटर कालेज नागथात में पढ़ते हैं।

गांव के सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं। त्यौहार के दिन एक दूसरे के घर जाते हैं। पकवान बनाते हैं। त्यौहार में यहां नांच (नृत्य) होता है। जिसमें हम सारे बच्चे भी प्रतिभाग करते हैं। अब गांवों में टी.वी लगभग सभी घरों पर है। बच्चे आंचलिक गीतों के बजाय फिल्मी गीत पसंद करते हैं। मैं तो कहती हूं हमें अपनी संस्कृति को बचाए रखना चाहिए। नौकरी के लिए हम देश व विदेश की भाषाएं सीखें पर हमें अपनी मातृ भाषा को नहीं भूलना चाहिए।

- शिवानी, कक्षा-12
रा.आदर्श इं.का.नागथात, देहरादून

★

मेरा नाम अपूर्व है। मैं कक्षा 5 में पढ़ता हूं। रायबरेली में अपने नाना-नानी के साथ रहता हूं। कोरोना के कारण हम सबके स्कूल बंद हैं। पढ़ाई के बाद मन ऊब जाता है। मैं खाली समय में चित्रकारी करता हूं। मुझे कलाकारी तथा कला कृतियां बनाना पसंद है। मैंने कई कलाकृतियां बनाई है। मुझे अपने स्कूल से अमेजिंग आर्टिस्ट अवार्ड 2019 भी मिला है।

- अपूर्व जायसवाल, कक्षा- 5
रॉयल इंटरनेशनल स्कूल रायबरेली, उ.प्र.

★

आपके पत्र

लॉकडाउन के रहते देर से ही सही बालप्रहरी का अप्रैल-सितंबर, 2020 अंक मिला। बच्चों के नाम पाती में लिखी कहानी अच्छी लगी। बोलो देवीदा लेख में आदरणीय श्री देवेंद्र मेवाड़ी जी के विचार अच्छे लगे। दादाजी और अप्रैल फूल, चित्रा की चित्रकारी, भय का भूत, समझदार चुन्नी आदि सभी कहानियां अच्छी लगी। बालप्रहरी में छोटी-छोटी कहानियां होती हैं। इन्हें मैं एक ही दिन में पढ़ लेता हूं। इस बार हमारे स्कूल में ऑनलाइन कविता हुई। अधिकतर बच्चों ने बालप्रहरी की कविताएं पढ़ी।

मैंने हरदेवसिंह धीमान जी की 'बादल भैया' कविता तथा मेरे भाई प्रदीप ने मधु माहेश्वरी की कविता 'बच्चे' पढ़ी। सभी ने हमारी कविता को सराहा।

लॉकडाउन में मैंने बालप्रहरी की पहेलियों तथा प्रतियोगिताओं का हल निकालने का प्रयास किया। समय काफी लगा। मैं अपनी कहानी तथा कविता भी प्रतियोगिता के लिए भेज रहा हूं। कृपया विचार कीजिएगा।

- अनुराग सक्सेना, कक्षा - 9
एस.बी.मै.विद्यालय लाजपतनगर, दिल्ली

★

मुझे बालप्रहरी में कहानी व कविता अच्छी लगती हैं। इस लॉकडाउन में स्कूल बंद हैं। बच्चे कहीं बाहर घूमने भी नहीं जा रहे हैं। कोरोना से बचाव के लिए हमको घर से बाहर नहीं जाना है। जब बहुत जरूरी हो तभी बाहर जाना चाहिए। घर से बाहर जाते समय मास्क पहिनना जरूरी है। तभी इस बीमारी से बचाव हो सकता है।

- चित्रांशी लोहनी, कक्षा 4
माउंट कार्मल स्कूल, चंपावत

★

मेरा गांव

प्रकृति के अनन्य सौंदर्य से सजा हुआ, रिश्तों की मिठास से भरा हुआ मेरा प्यारा गांव है-'रीठाखाल'। मेरा गांव चंपावत जिले के पाटी विकास खंड में स्थित है। हमारे गांव के सामने वाली पहाड़ी पर महर्षि गर्ग की सिद्ध स्थली है। जिसे गर्गचूला मंदिर के नाम से जाना जाता है। पहले त्यौहार आदि अवसरों पर गांव जाना होता था। अब गांव जाना कम हो गया है। बचपन में जब मैं छोटी थी। तब कई बार गांव जाना होता था। हम भाई-बहन और चाचा-ताऊ के बच्चे गांव में खूब खेला करते थे। हमें भूख भी खूब लगती थी। कभी-कभी मम्मी और चाची हमारे लिए रोटी बनाते थक जाती थी। हम सारे बच्चे लड़ते-झगड़ते पर कुछ ही समय में हमारी सुलह हो जाती थी। काश वे दिन आते रहते।

पहाड़ के गांवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, मोटर मार्ग, बिजली, पानी और मोबाइल नैटवर्क जैसी मूलभूत सुविधाएं नहीं हैं। इस कारण लोग गांव छोड़कर तराई या दूसरे शहरों में आवास बना रहे हैं। आज तक न जाने कितनी सरकारें आई। किंतु किसी भी सरकार ने पहाड़ों का पलायन रोकने का प्रयास नहीं किया। शायद जनता ज्यादा जागरूक नहीं है। पहाड़ों का वातावरण बहुत ही सुंदर है। पहाड़ स्वर्ग समान हैं पर यहां के विकास के लिए नेता लोग कुछ भी नहीं कर रहे हैं।

मेरा सरकार से निवेदन है कि पहाड़ों में भी आवश्यक संसाधन तथा सुविधाएं जुटाई जाएं। जिससे किसी को भी पहाड़ से पलायन न करना पड़े।

- दीपिका, कक्षा 10
नानकमत्ता पब्लिक स्कूल नानकमत्ता, ऊधमसिंहनगर

बालसाहित्यकार : डॉ. शेरजंग गर्ग

साहित्यकार डॉ. शेरजंग गर्ग का जन्म 29 मई,1937 को देहरादून (उत्तराखंड) में हुआ। अटेची में बिस्कुट, सुमन बालगीत, यदि पेड़ों पर उगते पैसे, भालू की हड़ताल, पक्षी उड़ते फुर फुर फुर सहित लगभग डेढ़ दर्जन पुस्तकें उन्होंने बच्चों के लिए लिखी हैं। शिशु साहित्य तथा बालसाहित्य में उन्होंने अनूठे प्रयोग किए हैं। 22 अप्रैल, 2019 को उनका निंधन हो गया। बालसाहित्य के पुरोधा को शत्-शत् नमन। यहां उनकी कुछ रचनाएं दी जा रही हैं। -संपादक

नए साल में

नए साल में ताजे सुंदर, फूल खिलेंगे,
नए साल में नए-पुराने, मित्र मिलेंगे।
नए साल में भैया-दीदी, खूब पढ़ेंगे,
कोई कितनी करे शरारत, नहीं लड़ेंगे।
नए साल में रंग खुशी का, चोखा होगा,
नए साल में हर त्यौहार, अनोखा होगा।
स्वस्थ रहेगी प्यारी दादी,नए साल में,
गुड़िया की भी होगी शादी, नए साल में।
अच्छे-अच्छे काम करेंगे, नए साल में,
सीधे सच्चे नहीं डरेंगे, नए साल में।
भैया की उग आए दाढ़ी, नए साल में,
छुक-छुक चले हमारी गाड़ी,नए साल में।

भालू की हड़ताल

बंद नाचना और कूदना,
भालू ने कर दी हड़ताल।
जंगल में पड़ताल हुई तो,
पता चला यों सच्चा हाल।
भालू की शादी में सचमुच,
हुआ एक से एक कमाल।
दुल्हन बढ़ी उसे वरने तो,
छोटी निकल गई जयमाल।

शिकारी राजू

राजू ने बंदूक मंगाई,
लेकिन नहीं चलानी आई।
ज्यों ही आया पास शिकार,
गोली चली, मगर बेकार।
राजू गए निशाना चूक,
आंखिर क्या करती बंदूक।

जन्म दिन का गीत

जन्म दिन आपको मुबारक हो,
आपका नाम आसमां तक हो।
हर खुशी आपके चरण चूमे,
और आंगन में रोशनी झूमे।
काम भी यादगार लायक हो,
जन्म दिन आपको मुबारक हो।
दर्द शरबत समझ के पी जाएं,
चांद तारों की उम्र जी जाएं।
कोई बाधा कहीं न बाधक हो,
जन्म दिन आपको मुबारक हो।
सबकी आंखों के आप हों तारे,
आप हों प्यार से अधिक प्यारे।
हर जगह आप ही की रौनक हो,
जन्म दिन आपको मुबारक हो।
आपका नाम आसमां तक हो।

उल्लू मियां

उल्लू मियां, उल्लू मियां,
क्यों बंद कर दी खिड़कियां।
कितनी मधुर है रोशनी,
है धूप सोने सी छनी।
हर ओर जीवन दीखता,
पर तू न हंसना सीखता।
खाता हमेशा झिड़कियां,
उल्लू मियां उल्लू मियां।

कक्षा में बच्चे

कक्षा में दस बच्चे नटखट,
काम मगर कर लेते झटपट।
कक्षा में दस बच्चे भोले,
बोल पड़े तो बम के गोले।
कक्षा में कुल बच्चे बीस,
शोर करें तो लगते तीस।

तुमको अपना मित्र बना लूं

नन्हे दुश्मन प्यारे दुश्मन,
यह बंदूक कहां से लाए?
जिसमें बंदूकें रखते हो,
वह संदूक कहां से लाए?
बंदूकों में गोली भरकर,
तुम अब किस-किस को मारोगे?
मार दिया यदि सौ पचास को,
तो भी आखिर में हारोगे।
इसमें प्यारे रंग भरो तो,
तुमको अपना मित्र बना लूं।
कोई बढ़िया काम करो तो,
तुमको अपना मित्र बना लूं।
गलत बात से अगर डरो तो,
तुमको अपना मित्र बना लूं।
अच्छी तरह बनो संवरों तो,
तुमको अपना मित्र बना लूं।
तुमको अपने गले लगा लूं,
यदि तुम यह बंदूक फेंक दो।
एक नया त्यौहार बना दूं,
यदि तुम यह बंदूक फेंक दो।

दादी अम्मां

हलवा खाने वाली अम्मां,
लोरी गाने वाली अम्मां।
मुझे सुनाती रोज कहानी,
नानी की हैं मित्र पुरानी।
पापा की हैं आधी अम्मा,
मेरी पूरी दादी अम्मां।

संकलन : डॉ. प्रभाकिरण जैन, पन्ना भवन, 4240/2 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली

बच्चों की कलम से :

दीवाली

जगमग जगमग आई दीवाली,
ढेरों खुशियां लाई।
खील बतासे भी आए हैं,
सब खाएंगे हम मिठाई।
दीपों से जगमगाता घर,
एक दूजे संग बढ़ता प्यार।
साफ सफाई का अभियान चले,
रंगोली बनी है सबके द्वार।

– नव्या मेहता, कक्षा 4
अशोक हॉल गर्ल्स रेजी. स्कूल मजखाली

बेटी बचाओ

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ,
अपनी सोच को आगे बढ़ाओ।
बेटा घर की आन है,
बेटी घर की शान है।
जब मां बहन है प्यारी,
बेटी है दुनिया सारी।
बेटी का करो सम्मान,
बेटी बढ़ाएगी घर का मान।

– तन्वी मोंगा, कक्षा 8
जी डी गोयनका स्कूल सिरसा, हरियाणा

मेरा स्कूल

राणा प्रताप इंटर कालेज,
खटीमा की शान है।
मैं यहां पढ़ती हूं,
मुझको ये अभिमान है।
बच्चे अनुशासित यहां के,
शिक्षकों का करते सम्मान।
बालप्रहरी की कार्यशाला में,
बच्चों को मिलता काफी ज्ञान।
कहना चाहूं सबसे मैं,
अनुशासन में रहना है।
कड़ी मेहनत करनी होगी,
जीवन में आगे बढ़ना है।

– संध्या गुप्ता, कक्षा 9
राणा प्रताप इंटर कालेज खटीमा,
ऊधमसिंहनगर

दीपावली

दीपावली दीपों का त्यौहार,
मिलकर इसे मनाएं।
आपसी मतभेद भुलाकर,
एकजुट सब हो जाएं।
बम पटाखे दीवाली में,
प्रदूषण फैलाते हैं।
पटाखे के शोर से,
बीमार परेशान हो जाते हैं।
बम पटाखे हैं फिजूलखर्च,
प्रदूषण इससे होता है।
जिसके पास नहीं है पैसा,
वह रोटी को भी रोता है।

– आयुष नाथ गोस्वामी, कक्षा 5
रा.प्रा.विद्यालय नौलाकोट, द्वाराहाट

दीपावली

दीपों का त्यौहार है आया,
देखो कितनी खुशियां लाया।
सबने अपना घर सजाया,
सफाई अभियान चलाया।
सबने घर में दिए जलाए,
सुंदर से पकवान बनाए।
महालक्ष्मी कब आ जाए,
इसलिए सबने घर सजाए।

– महक बिष्ट, कक्षा 8
रेनेसा नर्सरी एंड स्कूल गंगोलीहाट, पिथौरागढ़

दीपावली

दीपों का त्यौहार दीपावली,
हम मिलकर सब मनाएं।
आपसी भेदभाव भूलकर,
प्रेम का दीप जलाएं।
बम पटाखे व फिजूलखर्ची,
पटाखे प्रदूषण फैलाएं।
फुलझड़ी व दीप जलाकर,
मन की ज्योति जलाएं।

– वीरेंद्र कुमार, कक्षा 10
दुखईरामसिंह इं.का. उदितनगर, चुनार,
मिर्जापुर,उ.प्र.

मेरा प्रिय पेड़

पेड़ धरती के आभूषण होते हैं। ये हमारे पर्यावरण को स्वच्छ रखने में सहायक तो होते ही हैं, हमें फल देते हैं तथा छाया देते हैं। पेड़ ठंडी हवा तो देते ही हैं। ये गंदी हवा को ग्रहण कर पर्यावरण को भी साफ रखते हैं। मुझे पेड़ अच्छे लगते हैं। मेरा प्रिय पेड़ नीम है। जिस प्रकार हमारे पहाड़ में दांत साफ करने के लिए तिमूर का उपयोग किया जाता है। उसी प्रकार मैदानी क्षेत्रों में नीम की लकड़ी से लोग अपने दांत सांफ करते हैं। इसकी पत्तियां, छाल, तना सभी काम में लिया जाता हैं। इसकी पत्तियों को उबालकर बनाए गए काढ़ा पीने से कई बीमारियां ठीक हो जाती हैं। खुजली होने पर भी इसकी पत्तियों का रस उबालकर पिया जाता है। नीम की पत्तियां सूखकर कीटनाशक का काम भी करती हैं। कपड़ों व अनाज को सुरक्षित रखने के लिए भी इसकी पत्तियों का उपयोग किया जाता है। सच कहूं मुझे नीम का पेड़ बहुत ही लाभकारी लगता है।

– नमिता अधिकारी, कक्षा 5
रा.प्रा.वि. कुमाल्ट, द्वाराहाट, अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

मां

मेरी मम्मी सबसे अच्छी,
रोज सवेरे हमें जगाती।
देती हमको दूध मलाई,
अच्छी बातें हमें बताती।
जग में सुंदर है मेरी मां,
मुझको देती है वह ज्ञान।
मां को अपना आदर्श मानूं,
सदा बढ़ाऊं उसका मान।

- खुश्बू नयाल, कक्षा-9
कस्तूरबा गां.आ.बा.वि. खनस्यू, नैनीताल

हरिद्वार

गंगा माता की नगरी,
सुंदर हमारा है हरिद्वार।
तीर्थ यात्रा करने यहां,
लोग आते हैं बारंबार।
कुभ को मेला लगता यहां,
लोग दूर-दूर से आते हैं।
गंगा में डुबकी लगाकर,
अपने घर को जाते हैं।

- राजकुमार, कक्षा-7
विशेष आवासीय छात्रावास, लालढांग, हरिद्वार

कंप्यूटर

कंप्यूटर का जमाना है,
सब काम इसमें होते हैं।
जिनको नहीं आता कंप्यूटर,
वे हमेशा ही रोते हैं।
मॉनीटर व सीपीयू,
माउस का इसमें काम है।
जिसने सीख लिया कंप्यूटर,
उसका बस आराम है।

- आरती भोज, कक्षा 8
गोविंद बल्लभ पंत रा.इ.का.खूंट, अल्मोड़ा

तिरंगा

भारत का राष्ट्र ध्वज तिरंगा हमारे देश की शान है। तिरंगा तीन रंगों का समान चौड़ाई की आयताकार पट्टियों से बना है। सबसे ऊपर केसरिया रंग है जो कि देश की शक्ति और साहस का प्रतीक है। सबसे नीचे हरा रंग है। जो कि भूमि की पवित्रता और उर्वरता, वृद्धि का प्रतीक है। बीच की पट्टी सफेद रंग की है। जो कि शांति और सत्य का प्रतीक है। केंद्र में गहरे नीले रंग का अशोक चक्र बना है। इसमें समान दूरी पर स्थित 24 तीलियां बनी हैं। यह अशोक चक्र श्वेत पट्टी पर दोनों तरफ दिखता है। पूरा ध्वज आयताकार है। जिसमें लंबाई और चौड़ाई का अनुपात 3:2 है।

किसी भी देश का अपना ध्वज होता है। भारत की आजादी की लड़ाई में देश के नेताओं ने समय-समय पर राष्ट्रीय ध्वज में परिवर्तन किए। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को इसके वर्तमान स्वरूप में 22 जुलाई,1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक में अपनाया गया। राष्ट्रीय ध्वज को फहराने के लिए बकायदा ध्वज संहिता बनाई गई है। पहले इसे केवल सरकारी कार्यालयों में फहराने की अनुमति थी। अब इसे सरकारी, गैर सरकारी तथा निजी भवनों में भी फहराया जा सकता है। राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करना कानूनी दंडनीय अपराध घोषित किया गया है।

- पूजा कबडोला, कक्षा 11
लक्ष्मी आश्रम कौसानी, अल्मोड़ा

मेरा देश

भारत मेरा देश है,
मुझको ये अभिमान है।
मिल जुल कर सब रहते यहां,
तिरंगा इसकी शान है।
वीरों की धरती है ये,
देश हित हुए वलिदान।
वीरों को मैं करूं नमन,
जिन्होंने बढ़ाई इसकी शान।

- शालू रावत, कक्षा 9
रा.कन्या उ.मा.वि.बांगीधार, सल्ट, अल्मोड़ा

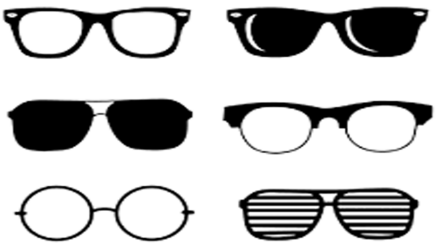

चश्मा

दादा-दादी और बच्चों का,
चश्मा अलग सा होता है।
आंखें खराब होती बच्चों की,
बाद में वह रोता है।
मोबाइल देर तक देखो अगर,
आंखें खराब हो जाती हैं।
चश्मा लग जाएगा आंखों पर,
हमारी मैडम बताती हैं।

- विनीता नेगी, कक्षा-10
कस्तूरबा गांधी आ.बा.वि.तरपालीसैण, पौड़ी

मेरा स्कूल

जी जी आई सी के सारे बच्चे,
स्कूल का मान बढ़ाते हैं।
अनुशासन में रहना है,
स्कूल में हमें बताते हैं।
जीवन में आगे बढ़ना है तो,
पढ़ाई पर मन लगाना होगा।
एक ही जादू कड़ी मेहनत,
हमको कुछ दिखलाना होगा।

- सानिया, कक्षा 7
रा.बा.इं.कालेज कोटद्वार,पौड़ी

बच्चों की कलम से :

पेड़

धरती को सजाते पेड़,
सबको ही ये भाते हैं।
अमीर हो या चाहे गरीब,
सबको छाया दे जाते हैं।
शुद्ध हवा हमको देते,
गंदी हवा स्वयं लेते हैं।
पेड़ हम पर करते उपकार,
फल-फूल हमें ये देते हैं।
पेड लगाओ पेड़ बचाओ,
सबको ही बतलाना है।
हम सब भी एक पेड़ लगाएं,
अभियान ये चलाना है।

- मनीषा बोहरा, कक्षा-9
रा. बालिका इं. कालेज चंपावत

गांव के बच्चे

गांव के बच्चे बहुत मेहनती होते हैं। गांव के बच्चे अपनी पढ़ाई के साथ घर में अपनी माता को भी सहयोग करते हैं। सुबह स्कूल जाने से पहले भी बच्चे घर के कामों में मदद करते हैं। शाम को स्कूल से लौटने के बाद भी घर के कामों में मदद करते हैं।

कुछ लड़के तो स्कूल से आने के बाद खेलने चले जाते हैं। परंतु कुछ बच्चे घर में काम पूरा करने के बाद खेलने जाते हैं।

कई माता-पिता बच्चे अपना ध्यान पढ़ाई में ही लगाएं इसलिए उनसे घर का काम नहीं कराते हैं। परंतु ऐसे बच्चे अपने समय का सदुपयोग नहीं करते हैं। अधिकतर देखने में आता है कि वे बच्चे स्कूल कालेज में आगे रहते हैं जो कि मां-बाप के कामों में भी मदद करते हैं। ऐसे बच्चों को नए कार्य करने की एक दिशा मिलती है। मेरा मानना है कि बच्चों को अपने घर में मां के कामों में हाथ बंटाना चाहिए।

- विनीता भट्ट
तिलसारी, बागेश्वर

पेड़

पेड़ हैं धरती की शान,
हम सब पेड़ लगाएं।
पेड़ों को अपना संसार,
ठंडी बयार ये लाएं।
फल व फूल देते हमको,
हम पर करते ये उपकार।
पेड़ों की है महिमा न्यारी,
ये मेरी कविता का सार।

- माया सक्सेना, कक्षा 8
रा.उ.प्रा.विद्यालय खटीमा,ऊधमसिंहनगर

दादी

दादी होती घर की शान,
बच्चों को वह भाती है।
बच्चों की होती दोस्त,
कहानी रोज सुनाती है।
घर के बड़े लोगों का,
सम्मान हमको करना है।
कहती है मेरी दादी,
गलत काम से डरना है।

- कनिका चौहान, कक्षा 8
रा.इ.का.नागथात, देहरादून

वर्षा

रिमझिम-रिमझिम आई वर्षा,
बच्चे दौड़े आंगन में।
मस्ती की सबने मिलकर,
मजा आया इस सावन में।
मोबाइल से सेल्फी लेकर,
बच्चे सारे खुश हुए।
भीग गए सारे मोबाइल,
पिताजी सबके रूठ गए।

- योगिता मंच्वाड़ी, कक्षा 8
रा.उ.प्रा.वि. देचौरी देगांव, कोटाबाग, नैनीताल

धरती

कितनी सुंदर कितनी प्यारी,
ये प्यारी धरती हमारी।
पेड़ पौधे इसके आभूषण,
नदी पहाड़ इसके आकर्षण।
प्रकृति का ये उपहार,
इसे निहारें बारंबार।
पेड़ लगाकर इसे सजाएं,
जीवन अपना सफल बनाएं।

- अनुष्का पांडेय, कक्षा-10
डायनेस्टी मा.गु.एकेडमी छिनकीफार्म, खटीमा

तितली

रंग बिरंगी तितली,
सब बच्चों को भाती है।
पीती है फूलों का रस,
ये फूलों पर मंडराती है।
इसके पंख देखकर,
बच्चे खुश हो जाते हैं।
इसे पकड़ने के लिए,
बरबस दौड़ लगाते हैं।

- उपासना तिवारी, कक्षा 8
विवेकानंद वि.मंदिर इ.कालेज अल्मोड़ा

तितली

रंग-बिरंगी तितली,
सबके मन को भाती है।
पकड़ना चाहो इसे अगर,
उड़कर चले जाती है।
मैं भी यदि तितली होता,
दूर की सैर कर आता।
होमवर्क न करना होता,
तब मजा बहुत आ जाता।

- हर्ष, कक्षा 8
विशेष आ. छात्रावास, लालढांग, हरिद्वार

बच्चों की कलम से :

लॉकडाउन

मैं और मेरा भाई नई क्लास में जाने को काफी उत्सुक थे। नया बस्ता नई किताब हम बहुत खुश थे। लॉकडाउन क्या हुआ। हमारी खुशियों में पानी भर गया। हम सब घर में बंद हो गए। पर हम अपनी पढ़ाई नियमित करते रहे। खाली समय में हमने घर में झाड़ू लगाना, पोछा लगाना तथा बरतन धोने का काम भी किया। हमारी मम्मी ने हमें इन कामों के लिए शाबासी दी। हमें सच में बहुत अच्छा लगा।

लॉकडाउन में टेलीविजन में रामायण, महाभारत कई सीरियल आने लगे। उन दिनों तो जो सीरियल रात को आता। वह दूसरे दिन सुबह भी आता। यदि रात को नींद आ गई तो सुबह भी देखा जा सकता था। बहरहाल टेलीविजन की वजह से घर में सबका मन लगा रहता। मेरे भाई को तो टेलीविजन में कार्टून बहुत पसंद है। हम लोग कार्टून भी देखते। दिन तो कट जाता। पर दोस्तों के साथ खेलना तो बंद ही हो गया। हां ये हुआ कि लॉकडाउन में घर के लोग भी बाहर नहीं जा सकते थे। इस कारण घर के सभी लोग दिन भर घर पर रहते। सच में बहुत अच्छा लगता।

बाद में हमारी ऑन लाइन क्लास शुरू हो गई। अब तो मासिक टेस्ट भी ऑनलाइन हो रहे हैं। कब स्कूल खुलेंगे, कब दोस्तों से मिलेंगे। ऐसा जानकर मन खुश हो जाता है।

- सृष्टि बिष्ट, कक्षा 5
आर्मी पब्लिक स्कूल बरेली केंट, उ.प्र.

नेहरू

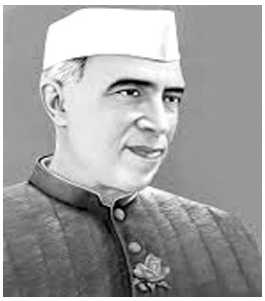

जन्म दिवस चाचा नेहरू का,
बाल दिवस कहलाता है।
बच्चे खुश हो जाते हैं,
ये दिन बच्चों को भाता है।
बच्चों को प्यार करते थे वे,
बच्चों के थे वे प्यारे।
बाल दिवस जब आता है,
बच्चे खुश हो जाते सारे।

- नितीशा भंडारी, कक्षा 8
मानस पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा

बादल

आसमान में आते बादल,
हम सब खुश हो जाते हैं।
अपना रूप बदलते बादल,
सरपट दौड़ लगाते हैं।
बारिश में बादल बरसते,
हमको खूब नहलाते हैं।
छी-छी कितने काले बादल,
ये बादल क्यों नहीं नहाते हैं।

- नवीन रावत, कक्षा 8
सरस्वती शिशु मंदिर कौसानी, अल्मोड़ा

हमारा राजस्थान

नमन करूं अपनी धरती को,
प्यारा हमारा राजस्थान।
उदयपुर सलूंबर की धरती,
सराड़ी की धरती महान।
महाराणा प्रताप की धरती,
इसे नमन हम करते हैं।
मेवाड़ हमारा सुंदर है,
मेवाड़ को प्यार करते हैं।

- अंजली गर्ग, कक्षा 10
रा.उ.मा.विद्यालय सराड़ी, उदयपुर, राजस्थान

मेरा गांव

जीतू बगडवाल की धरती,
गढ़वाल हमारा प्यारा है।
वीरों की धरती है ये,
बगोड़ी हमारा न्यारा है।
शांत यहां की वादियां,
नदियां कल -कल करती हैं।
चिड़िया रोज सुबह ही,
घर आंगन बिचरती हैं।

- स्मृति बिष्ट, कक्षा 8
कस्तूरबा गांधी आ.बा.वि.चिन्यालीसौड़

पर्यावरण

पर्यावरण हमें बचाना है तो,
सबको पेड़ लगाने होंगे।
पानी यदि हमें चाहिए,
हमको पेड़ लगाने होंगे।
पेड़ हैं सांसे पेड़ हैं जीवन,
पेड़ हैं जीवन के आधार।
जन-जन को बतलाना है,
पेड़ बिना सूना संसार।

- सिमरन मेहता, कक्षा 8
यू.सी.एस.एस.चंपावत

तोता

तोता हूं मैं हरे रंग का,
चोंच है मेरी लाल।
जो भी सुनूं बोल देता हूं,
सचमुच मैं हूं कमाल।
मिट्ठू-मिट्ठू गाता हूं मैं,
वन बागों में रहता हूं।
घर पर मुझको जो भी सिखाए,
बात वहीं मैं रटता हूं।

- निशा भंडारी, कक्षा 11
रा.इं.कालेज नाई, अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

कार्यशाला

बच्चों की कार्यशाला में,
सीखा हमने कविता बनाना।
कैसे लिखते हैं कहानी,
ये भी हमने जाना।
खेल-खेल में मस्ती हुई,
सीखे विज्ञान के खेल।
अपनी किताब भी बनाई,
खेल में हुई ठेलम ठेल।
बालप्रहरी की कार्यशाला,
नरेंद्र रौतेला सर ने कराई।
मुख्य अतिथि रस्तोगी जी ने,
हमें खटीमा में पहचान दिलाई।

– रेनू ओझा, कक्षा 8
रा.उ.प्रा.वि.उमरूखुर्द, खटीमा, ऊधमसिंहनगर

बाल मिठाई

पटाल बाजार के नाम से,
अल्मोड़ा जग में छाया है।
अल्मोड़ा की बाल मिठाई ने,
जग में नाम कमाया है।
स्वच्छ वातावरण यहां का,
पर्यटक भी यहां आते हैं।
यहां की बाल मिठाई को,
अपने संग ले जाते हैं।

- गर्विता तिवारी, कक्षा 8
सेंट एग्नेस जू.हा. अल्मोड़ा

मेरी मां

रोज सुबह ही उठ जाती,
घर के काम करती मां।
सुबह से रात तक,
काम करते थक जाती मां।
बच्चों को खाना खिलाकर,
भूखे ही सो जाती मां।
मां सा नहीं दुनिया में कोई,
सचमुच प्यारी होती है मां।

- लक्ष्मी राणा, कक्षा-8
रा.इ.कालेज कौसानी, बागेश्वर

मैं सर्जन बनना चाहती हूं

मैं आस्था बहुगुणा अपने भविष्य में एक सर्जन बनना चाहती हूं। आजकल सभी लोगों का व्यस्त जीवन है। इसलिए लोग अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। अधिकतर घरों में लोग बीमार हैं। सरकारी अस्पतालों में बीमार की अधिक देखभाल नहीं होती। प्राइवेट अस्पतालों में ईलाज बहुत महंगा है। इसलिए लोग इलाज के लिए परेशान रहते हैं। कई लोग इलाज के अभाव में दुनिया तक छोड़ देते हैं।

मैं सर्जन बनकर लोगों को नि:शुल्क सेवा देना चाहती हूं। मैं चमोली जिले के नारायणबगड़ क्षेत्र में रहती हूं । मेरे गांव का नाम पन्ती है। यहां से अस्पताल बहुत दूर है। इस कारण कई लोग इलाज के बिना ही दम तोड़ देते हैं। आप सब जानते हैं कि डॉक्टर को लोग भगवान समझते हैं। वास्तव में यदि सेवाभाव से कोई डॉक्टर मरीज को देखता है तो लोग उसको सम्मान से देखते हैं। ऐसे भी डॉक्टर हैं जो मरीजों को अच्छे ढंग से नहीं देखते। बहरहाल में अपने गांव के लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं देना चाहती हूं। मैं अपने गांव, जिले तथा राज्य का नाम पूरे देश में रोशन करना चाहती हूं।

- आस्था बहुगुणा, कक्षा 9, एम. जी. आर.आर.पब्लिक स्कूल नारायणबगड़, चमोली

फौजी

भारत मां के वीर पुत्र,
हम तूफान उठा देंगे।
अपने भारत देश के खातिर,
जान की बाजी लगा देंगे।
देश हित जीना हमको,
देश हित मरना है।
इसकी रक्षा करेंगे हम,
मौत से नहीं डरना है।

- सिद्धांत, कक्षा 8
डी.ए.वी. पुलिस प. स्कूल सिरसा,हरियाणा

छात्रावास

कस्तूरबा गांधी के नाम पर
गंगाणी में खुला है छात्रावास।
छोटी और बड़ी लड़कियों के
यहां बने हैं दो आवास।
साफ-सफाई का हम बच्चे,
पूरा रखते हैं यहां ध्यान।
गांव-गांव से आती लड़कियां,
ये गंगाणी का बन गया शान।

- काजल, कक्षा-9
कस्तूरबा गांधी आ.बा.वि.गंगाणी,उत्तरकाशी

फौजी हैं भारत की शान,
सीमा पर तैनात रहते हैं।
देश की रक्षा के लिए,
गरमी व ठंडक सहते हैं।
फौजी ड्रैस पहनकर मैं भी,
सीमा पर लड़ने जाऊंगा।
दुश्मन पानी न मांगेगा,
उसको मजा चखाउंगा।

- धीरज, कक्षा 8
विशेष आवासीय छात्रावास, लालढांग, हरिद्वार

बच्चों की कलम से :

दोस्त

राम श्याम और विवेक,
पक्के दोस्त थे तीन।
मेहनत करते तीनों,
पढ़ाई में रहते तल्लीन।
एक दूसरे की मदद करते,
आपस में मिलकर रहते।
तीनों का अपना संसार,
सुख-दुख दूजे से कहते।

- सुमित बोहरा, कक्षा-5
सरस्वती शिशु विद्या मंदिर गरमपानी, नैनीताल

पापा

बचपन में जब पाला पोसा,
गोदी में रखते थे पापा।
सबसे अच्छे सबसे प्यारे,
मुझको लगते अपने पापा।
पापा होते घर की शान,
सबको अच्छे लगते पापा।
पढ़ा-लिखाकर दिया है ज्ञान,
हम सम्मान करते हैं पापा।

- प्रीति आर्या, कक्षा 8
रा.उ.प्रा.वि.जैनोली, रानीखेत, अल्मोड़ा

करेला

कड़ुवा होता हूं मैं,
ये मेरी पहचान है।
तुम मानो या न मानो,
करेला गुणों की खान है।
जो करता मुझसे प्यार,
स्वस्थ वह रहता है।
बीमारी दूर भागे मुझसे,
डॉक्टर भी ये कहता है।

- अनुराग साह,
द्रोण पब्लिक स्कूल द्वाराहाट, अल्मोड़ा

मेरा गांव

बांज बुरांस के पेड़ यहां,
अंडोली है मेरा गांव।
स्वच्छ हवा न कोलाहल,
क्या सुंदर है पेड़ की छांव।
भाई चारा यहां बना रहे,
कहता है ये मेरा मन।
आपस में सब मिलकर रहें,
खुश रहें सब यहां के जन।

- भावना पांडे, कक्षा 9
राजकीय इंटर कालेज अंडोली, अल्मोड़ा

टमाटर

गाल यदि चाहो लाल,
रोज खाओ टमाटर।
लाल-लाल रंग के देखो,
सबको भाते हैं टमाटर।
गोल मटोल हो जाता है,
जो खाता है टमाटर।
विटामिन भी मिलता इनसे,
सब्जी में स्वाद आ जाता है।
लाल टमाटर देखकर तो,
मन खुश हो जाता है,

- अमीश कुमार, कक्षा 11
यदुवंशी शिक्षा निकेतन महेंद्रगढ़, हरियाणा

वर्षा

वर्षा आई वर्षा आई,
धरती पर हरियाली छाई।
खेतों में फसलें लहराई,
देखो कैसी रंगत आई।
हरियाली त्यौहार मनाते,
मिलजुल कर सब गाना गाते।
मेढक मछली खुश हो जाते,
भीगकर बच्चे खूब हर्षाते।

- डिलेश्वर कुमार, कक्षा 10
रा.उ.मा.वि.घोटिया, बालोद, छत्तीसगढ़

फौजी

फौजी देश के मान हैं,
फौजी देश की शान हैं।
देश रक्षा की खातिर ये,
देते अपनी जान हैं।
जान हथेली पर रखकर,
दुश्मन से लोहा लेते हैं।
सीमा पर रहते तैनात,
ठंड गरमी ये सहते हैं।

- कु. पूजा बिष्ट, कक्षा-9
रा.उ.मा.वि.मेतली, पिथौरागढ़

मेरा भाई

मेरा भाई बहुत ही प्यारा,
दुनिया में सबसे है न्यारा।
हरदम हंसता रहता है,
मेरे संग खेलो कहता है।

- ओरेग्येन तेजिंग भूटिया, कक्षा 3
सिक्किम

बालप्रहरी

कहानी कविता प्रतियोगिताएं,
बालप्रहरी मुझको भाती है।
चुटकुले नई पहेलियां लेकर,
ये तीन महीने में आती है।

- सुरेश चंद्र, कक्षा- 5
रा.प्रा.वि. बमौरी तरूला, अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

बेटियां

क्यों समझते बेटी को बोझ,
मां-बाप की शान बेटियां।
बेटियां परिवार की शान,
देश की पहचान बेटियां।
दो रिश्तों को बांधती ये,
ओस की बूंद सी निर्मल बेटियां।
सूरज की धूप सी तेज ये,
फिर क्यों पराई होती बेटियां।

– अलम नशरा अंसारी, कक्षा 11
सेंट्रल एकैडमी लखनऊ, उ.प्र.

बेटी बचाओ

बेटी का अपना संसार,
जीने का दो उसे अधिकार।
कोख में न मारो उसे,
नहीं बनेगी तुम पर भार।
अवसर यदि उसे मिले,
परिवार का नाम कमाएगी।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ,
अभियान वह चलाएगी।

– कोमल रावत, कक्षा 8
रा.उ.प्रा.वि. हरमनी, चमोली

स्वच्छता अभियान

खुले में शौच न जाएं,
सबको ये बताना है।
शौचालय का करें प्रयोग,
सबको ये समझाना है।
घर मोहल्ला साफ रहे,
अभियान ये चलाना है।
देश अपना स्वच्छ रहे,
अभियान ये चलाना है।
मिटे गंदगी भागे रोग,
हम सबने ये ठाना है।
हम सबको मिलकर अब,
स्वच्छता अभियान चलाना है।

– कनक जोशी, कक्षा 10
रा.इ.का.चौरा हवलबाग, अल्मोड़ा

हमारा देश

आजादी की लंबी लड़ाई के बाद हमारा देश आजाद हुआ। हमारे देश ने समूचे संसार में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। देश को आगे बढ़ाने के लिए हम सब मिलकर प्रयास करें तो देश नई ऊंचाइयों को छू सकता है।

जाति,धर्म,संप्रदाय व क्षेत्र के नाम पर देश को बांटने वाले लोग अपनी महत्वाकांक्षा के लिए इसके विकास में रोड़ा अटका रहे हैं। लोग विकास के लिए एकजुट होने के बजाय अपने स्वार्थो के लिए जनता को भड़काकर देश के विकास में अवरोध पैदा कर रहे हैं।

युवा पीढ़ी को सही दिशा दिए जाने की जरूरत है। हमारे यहां मेहनती लोगों की कमी नहीं है। परंतु उन्हें एक सही दिशा मिले, ये जरूरी है। जाति, धर्म व क्षेत्र के नाम पर एकजुट होने के बजाय विकास के लिए एकजुट होकर योजनाएं बनाए जाने की जरूरत है। तभी देश आगे बढ़ेगा।

– अरूणा साह, कक्षा-12
राजकीय इंटर कालेज नौकुचियाताल,नैनीताल

मच्छर

गरमी में मच्छर का,
आतंक बहुत हो जाता है।
बच्चे परेशान हो जाते,
ये खून हमारा पी जाता है।
अनुशासन का पक्का ये,
पहले कान पर बताता है।
मैं आ गया हूं भैया,
फिर सबको ये सताता है।

– अनशरा, कक्षा-10
एम.के.पी.इंटर कालेज देहरादून

स्वच्छता

स्वच्छता अभियान चलाकर,
रोगों को दूर भगाएंगे हम।
अपना घर साफ रखना है,
सभी को ये बताएंगे हम।
कूड़ा कूड़ेदान में डालो,
सभी को ये बताएंगे हम।
खुले में शौच न जाएं,
बात सभी को बताएंगे हम।
साफ सफाई का ध्यान रखें,
ये अभियान चलाएंगे हम।
स्वच्छता अभियान से जुड़े,
सभी को ये बताएंगे हम।

– नदीम , कक्षा 10
रा.उ.मा.वि. बिझौली, हरिद्वार

गुरू का आदर

शिक्षक हमें ज्ञान देते,
शिक्षकों का हम सम्मान करें।
पूजनीय हैं गुरु हमारे,
नहीं उनका अपमान करें।
हर पल आगे बढ़ना है,
गुरू ने हमें सिखाया है।
दूसरों का आदर करो,
गुरू ने हमें बताया है।

– साक्षी अधिकारी, कक्षा 8
द्रोण पब्लिक स्कूल पूजाखेत,
द्वाराहाट, अल्मोड़ा

गुरू

अच्छी राह दिखाते हमको,
गुरूवर ज्ञान के भंडार।
नई राह दिखाते हमको,
प्रणाम है उनको बारंबार।
बच्चे आगे बढ़े जब,
गुरू का बढ़ता मान।
अपने गुरू का आदर करो,
तभी बढ़ेगा तुम्हारा मान।

– किरन, कक्षा 8
राजकीय इंटर कालेज आरा सल्पड़,
अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

पुस्तक

पुस्तक का महत्व जाना जिसने,
वह आगे बढ़ पाया है।
ज्ञान का भंडार है पुस्तक,
स्कूल में हमें बताया है।
सच्ची दोस्त होती है पुस्तक,
हम सबको देती है ज्ञान।
पुस्तक से जो करे दोस्ती,
बन जाता है वह महान।

- मीनाक्षी रौतेला, कक्षा 8
रा.उ.प्रा.वि.छतरपुर,ऊधमसिंहनगर

देश

भारत मेरा देश महान,
यहां मिलकर रहते भाई।
सभी भारत के निवासी,
हिंदु मुस्लिम सिख इसाई।
पहाड़ और नदियां,
ये दुनिया में न्यारा।
हम यहां के निवासी,
ये हिंदोस्तां हमारा।

- तनवी पुनेठा, कक्षा 3
विसडम नर्सरी पिथौरागढ़

कोरोना

कारोना लाया है महामारी,
इससे सबको बचना है।
अनावश्यक न निकलें घर से,
मास्क पहनकर चलना है।
हाथ न मिलाएं किसी से,
मेरा दादा कहते हैं।
सेनेटाइजर का करो प्रयोग,
घर में सब ही कहते हैं।

- लक्ष्य उन्मुख कांडपाल, कक्षा 4
यूनिवर्सल कांवेंट स्कूल हल्द्वानी

मां

रूठ जाऊं मैं अगर,
मनाना जानती है मां।
अगर मैं रोऊं तो,
हंसाना जानती है मां।
मेरी हर परेशानी,
चुटकी में हल करती है मां।
मां से बढ़कर दोस्त,
मेरी बकवास सुनती है मां।

- हर्षिता पुजारी, कक्षा 5
रा.प्रा.वि. गिंतीगांव, कोटाबाग, नैनीताल

मेरे पापा

मेरे पापा बड़े ही प्यारे,
करती हूं उनका सम्मान।
अच्छे काम करूंगी मैं,
तभी बढ़ेगा उनका मान।
मैं और भैया जब भी लड़ते,
प्यार से हमें समझाते हैं।
मां रहती है घर में व्यस्त,
होमवर्क हमारा कराते हैं।

- देवरक्षिता नेगी, कक्षा 4
बाल विकास विद्या मंदिर चौखुटिया,अल्मोड़ा

तितली

रंग-बिरंगी तितली देखो,
सब बच्चों को भाती है।
फूलों पर ही मंडराती ये,
फूलों पर ही इतराती है।
बहुत चौकन्नी रहती तितली,
हाथ नहीं कभी आती है।
पकड़ना चाहूं इसे अगर तो,
झट से दूर उड़ जाती है।

- अंजली आर्या, कक्षा 5
राम गंगा वैली स्कूल मासी,अल्मोड़ा

मोबाइल

मोबाइल है दोस्त हमारा,
लॉकडाउन में सबसे प्यारा।
पढ़ने लिखने और समझने,
यही है बस एक सहारा।
समय काटने लॉकडाउन में,
खेलों ने हमें ललकारा।
फ्री फायर में जीता कोई,
तो कोई पबनी से हारा।

- रचित शक्टा, कक्षा 4
उदयन इंटरनेशनल स्कूल चंपावत

शौचालय

साफ रखना है गांव को,
शौचालय अब सभी बनाओ।
बच्चे बूढ़े सभी मान लो
झाड़ी जंगल खेत न जाओ।
शौचालय सब घरों में होंगे,
गांव का होगा सम्मान।
जागरूक होगा गांव हमारा,
सहना नहीं होगा अपमान।

- खुशी रावत, कक्षा - 8
रा.आ.उ.प्रा.वि. हरमनी, चमोली

बच्चे

हम हैं प्यारे-प्यारे बच्चे,
नन्हे मुन्ने सारे बच्चे।
मां की आंख के तारे बच्चे,
भोले-भाले सारे बच्चे।
हुड़दंग करते प्यारे बच्चे,
अपनी बात मनाते बच्चे।
नेहरू जी के प्यारे बच्चे,
मेहनत खूब करते बच्चे।

- तरूनसिंह नेगी, कक्षा 10
शारदा पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

स्वच्छता अभियान

चारों ओर पेड़ लगाओ,
घर आंगन को स्वच्छ बनाओ।
हरियाली जग में छाएगी,
ठंडी हवा मिल पाएगी।
स्वच्छता अभियान का गूंजे नारा,
प्रदूषण मुक्त हो देश हमारा।
घर-घर अभियान चलाएंगे,
देश को स्वच्छ बनाएंगे।

- ऋषि जोशी, कक्षा 5
ड्रीम्स इंडिया पं.स्कूल सिंगाही, खीरी, उ.प्र.

बेटी बचाओ

बेटी हूं मैं बेटी हूं,
जीने का दो मुझे अधिकार।
मैं भी एक इंसान हूं।
कहती हूं मैं बारंबार।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ,
बेटी तो है घर की शान।
नया कुछ कर दिखाऊंगी,
बढ़ाऊंगी घर परिवार का मान।

- सिनाया अधिकारी, कक्षा 6
रीना चिल्ड्रन एकेडमी रानीखेत, अल्मोड़ा

महात्मा गांधी

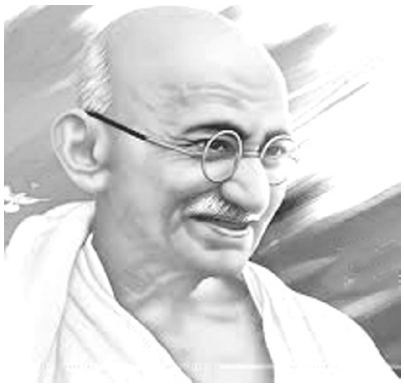

सत्य और अंहिसा के पुजारी,
महांत्मा गांधी देश की शान।
आजादी के लिए मर मिटे,
देश का रखा हरदम मान।
मोहनदास करमचंद गांधी,
लोग 'बापू' उनको कहते हैं।
सत्य पर वे चलते थे,
इसलिए महांत्मा कहते हैं।
नमन करें हम गांधी को,
देश जिसने आजाद किया।
आजादी की लड़ाई हेतु,
जिसने देश को एक किया।

- प्रांजलि लोहनी, कक्षा 8
माउंट कार्मल स्कूल चंपावत, उत्तराखंड

महात्मा गांधी

उस महापुरूष की होगी,
नित ही जय-जयकार।
सत्य अंहिसा के बलबूते,
अंगरेजों पर किए प्रहार।
'बापू' ही तो नाम उनका,
नमन उन्हें हम करते हैं।
मानी नहीं हार जिसने,
शत-शत नमन करते हैं।

- डिंपल पाठक, कक्षा 7
दि एशियन एकेडमी पिथौरागढ़

कोरोना

देश भर में फैली क्या बीमारी है,
कोराना ये तो महामारी है।
डेंगू मलेरिया बुखार टॉयफायड,
ये इन सब पर भारी है।
साबुन से धोएं हाथ सभी,
शारीरिक दूरी बनानी है।
मास्क पहनकर निकलो घर से,
बात सभी को बतानी है।

- प्रियांशु जोशी, कक्षा 6
ग्रेस जूनियर हाईस्कूल, रानीधारा, अल्मोड़ा

लॉकडाउन में मेरी दिनचर्या

लॉकडाउन में पहले-पहल जब स्कूल की छुट्टी हुई, स्कूल बंद हुए। सचमुच हम सब बच्चों को अच्छा लगा। परंतु लॉकडाउन में घर से बाहर न निकलना, खेलने के लिए दोस्तों के साथ न जाना, इससे काफी बोरियत होने लगी। लेकिन हमने जैसे-तैसे अपने को एडजस्ट किया। मैं अपनी बात कहूं मैंने पुस्तकें पढ़ना नहीं छोड़ा। सुबह जल्दी उठकर मैं दो घंटे तक पुस्तकें पढ़ता और अपने स्कूल के सवाल हल करता। हमेशा की तरह मैंने घर के कामों में माता-पिता की मदद की। हमें घर के कामों में भी मदद करनी चाहिए। आखिर हमारी मां बेचारी भी तो थक जाती है न।

हमारे स्कूल में ऑनलाइन पढ़ाई चल रही है। प्रतिदिन लगभग 4 घंटे ऑनलाइन पढ़ाई अलग-अलग विषयों की हो रही है। मैं तो कहता हूं हमें पढ़ाई को बोझ की तरह नहीं समझना चाहिए। हम में सीखने की ललक होगी तो हमें कोई भी काम भारी नहीं लगेगा। लॉकडाउन की अवधि में हमारे क्षेत्र के विधायक श्री पूरनसिंह फर्त्याल जी ने गरीबों को राशन भी बांटा। लॉकडाउन में हम बच्चों का तो खेलना लगभग बंद ही हो गया। लेकिन कोरोना से बचने के लिए ये जरूरी भी था। हम सारे बच्चों ने भी लॉकडाउन के नियमों का पालन किया। मुझे ये अच्छा नहीं लगा कि कुछ लोग बाजारों में ऐसे ही बगैर काम के घूमते रहे। पुलिस के आदेश के बावजूद लोग बगैर मास्क पहने बाजारों में घूमे। पढ़े-लिखे लोगों ने भी मनमानी की। मुझे ये अच्छा नहीं लगा।

-हिमांशु जोशी, कक्षा 9 राजकीय इंटर कालेज चौड़ाकोट, चंपावत

बच्चों की कलम से :

वर्तिका जोशी, कक्षा - 5
नोएडा, यू.पी.

शिवांशी जोशी, कक्षा - 5
रा.प्रा. विद्यालय सेलाबगड़, बागेश्वर

कार्तिक अग्रवाल, कक्षा - 4
सेंट एंड्रूज स्कूल, भवाली, नैनीताल

अभिषेक गुप्ता, कक्षा - 6
आर्मी पब्लिक स्कूल जम्मू

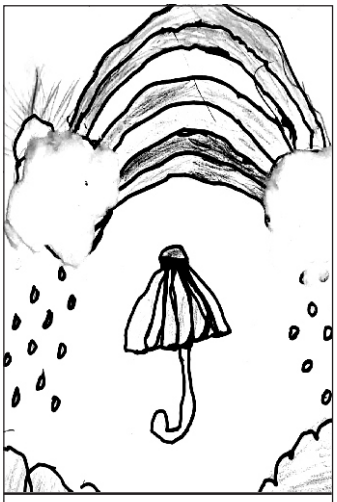

हिमाक्ष जोशी
बापूनगर, भीलवाड़ा, राजस्थान

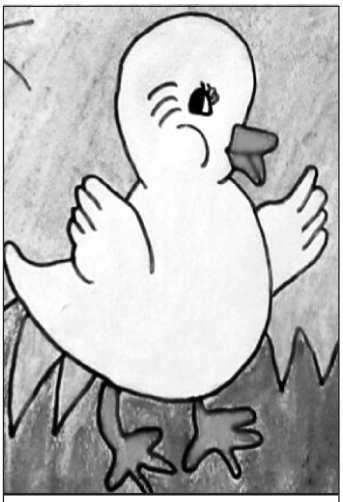

दिया शर्मा, कक्षा - 8
रा.जू.हा.स्कूल छिताड़,चौखुटिया,अल्मोड़ा

यामिनी वर्मा, कक्षा - 8
रा.जू.हा.स्कूल चचना, मुनस्यारी, पिथौरागढ़

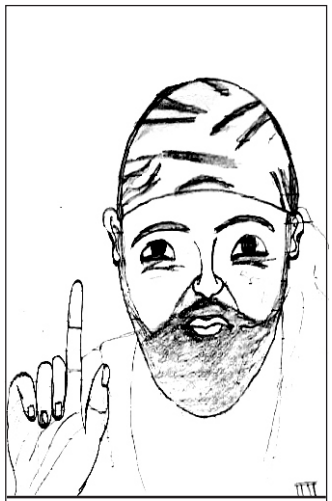

आयुष गोस्वामी, कक्षा - 5
रा.प्रा.वि. नाकोट, द्वाराहाट, अल्मोड़ा

कोमल रावत, कक्षा - 8
रा.जू.हाईस्कूल, हरमनी, चमोली

मानवी बिष्ट, कक्षा - 2
रीना चिल्ड्रन एकेडमी, रानीखेत

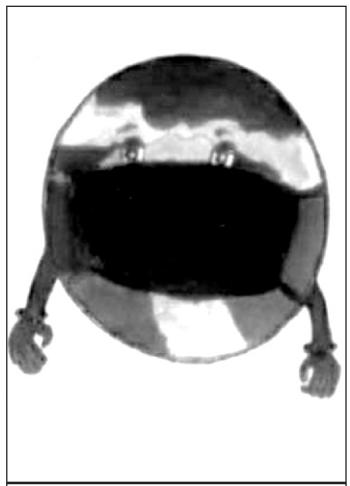

मीनाक्षी रौतेला, कक्षा - 8
रा.उ.प्रा.वि.छतरपुर, उधमसिंहनगर

सुमित मेहरा, कक्षा - 5
रा.प्रा.वि. गौलीमहर,लमगड़ा, अल्मोड़ा

निबंध प्रतियोगिता – 36

निबंध प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता के तहत 'कोरोना काल में ऑनलाइन पढ़ाई' विषय पर लगभग 250 शब्दों का निबंध लिखकर भेजना है। चयनित निबंध को बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। निबंध के साथ नाम/पता/कक्षा/स्कूल व घर का पूरा पता तथा टेलीफोन न. अवश्य लिखें। निबंध संपादक बालप्रहरी अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601 के पते पर दिनांक 1 जनवरी, 2021 तक भेजें। निबंध प्रतियोगिता-35 में निम्न निबंध चयनित हुआ है। इन्हें उपहार में पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं। - संपादक

कोरोना वायरस से बचने के लिए हमारे प्रयास

मार्च,2020 में कोरोना के कारण पूरे देश में लॉकडाउन हो गया। हमें बताया गया कि कोरोना वायरस बहुत खतरनाक है। इस बीमारी में बुखार, खांसने में परेशानी जैसे लक्षण हैं। ये भी बताया गया कि इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है। यदि कोरोना का कोई मरीज खांस रहा हो या छींक रहा हो। इससे हवा में इस बीमारी के वायरस फैल कर दूसरों को भी यह बीमारी हो सकती है। बीमार व्यक्ति किसी दूसरे से हाथ मिलाए या वह जिस दरवाजे, रैलिंग, नल या बिजली के बटन पर हाथ लगाए। बाद में दूसरे लोग उस स्थान को छुएं तब भी यह बीमारी फैल सकती है। इस बीमारी की अभी तक कोई दवा नहीं बनी है। इसके लिए कहा गया कि जहां ज्यादा लोग जमा हों । उस स्थान पर जाने से बचना चाहिए।

सामान्य में इस बीमारी का पता नहीं चल सकता है। इसलिए एक दूसरे से मिलने के लिए हाथ मिलाने के बजाय हमने दूर से ही हाथ जोड़कर नमस्कार करना सीखा। हमें बताया गया कि दिन में हाथों को कई बार साबुन से धोना चाहिए। बाहर से लाए गए सामान को एकदम नहीं छूना चाहिए। इसके लिए सेनेटाइजर का प्रयोग करना चाहिए। शारीरिक दूरी बनाए रखना भी जरूरी था। सबसे जरूरी बात ये है कि हमें घर से बाहर निकलने पर मास्क पहनना जरूरी है। परंतु कुछ लोग मास्क को गले में लटकाकर केवल दिखावा कर रहे हैं। ये बात मुझे ठीक नहीं लगी।

- गुड्डी मेहता, कक्षा 8
रा.पू.मा.वि.चचना,मुनस्यारी, पिथौरागढ़

(इसके अतिरिक्त विनीता भट्ट (तिलसारी, बागेश्वर), अदिति (उत्तरकाशी) का निबंध भी प्रशंसनीय था। - संपादक

अंतर बताओ

कविता लिखो प्रतियोगिता-65

दाएं बने चित्र को ध्यान से देखो। चित्र को देखकर-विचारकर तुम्हें 8 पंक्ति की स्वरचित कविता 1 जनवरी, 2021 तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड-263601 के पते पर भेजनी है। प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क प्रतिभाग कर सकते हैं। कविता के नीचे अपना नाम, पता तथा उम्र तथा फोन नंबर लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कविता को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा। ग्रामीण समाज कल्याण समिति (ग्रास) तल्ला चीनाखान, अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। कविता लिखो प्रतियोगिता - 64 में निम्नलिखित कविता चयन की गई है। इन्हें पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जा रही हैं।

मेहनत

नन्हा सा एक चूहा है,
खूब शैतानी करता है।
कपड़े कतरे मलमल के,
नहीं किसी से डरता है।
देवा न उल्टा लटकाया,
सामने बिल्ली के रख आया।
खुश हो गई बिल्ली तब
घर बैठे ही खाना आया।

— दिव्यम तिवारी, कक्षा 4
डी.पी.एस. लामाचौड़, हल्द्वानी

इसके अतिरिक्त विद्या उपाध्याय(रूद्रपुर), शिवानी (उत्तरकाशी), भावना जोशी (हल्द्वानी) अदिति (खटीमा), उपासना तिवारी (अल्मोड़ा), विवेक कश्यप (लखनऊ) प्रिया उनियाल(देहरादून)की कविताएं भी प्रशंसनीय थी। -संपादक

सुडोकू

सुडोकू 9×9 यानी 81 खानों का वर्ग है। यह 3×3 खानों के 9 छोटे खानों में बंटा होता है। पहेली सुलझाने के लिए खाली स्थान पर 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। ध्यान रखें आड़ी या खड़ी लाईन में एक संख्या केवल एक ही बार आए।

		8	5					
	9			6	3	5	1	
	6	2			1	8		7
	5	9		7				6
	4		6	5	2		7	
7				3		2	8	
3		4	2			6	9	
	2	1	3	8			5	
					4	1		

अल्मोड़ा से प्रकाशित कुमाउंनी मासिक पत्रिका

पहरू

के लिए कुमाउंनी भाषा में कहानियां, कविताएं आदि रचनाएं सादर आमंत्रित हैं। आजीवन सदस्यता 1500 रुपए अथवा वार्षिक सदस्यता 200 रुपए भिजवाकर सहयोग करें।

- डॉ हयात सिंह रावत,
संपादक- पहरू
'इन्द्र सदन' सुनारीनौला, अल्मोड़ा, मोबा. 9412924897

चुटकुले

पिता- देखो बेटा! जुआ खेलना ठीक नहीं। जुए में यदि आज तुम जीत गए तो कल हारोगे। परसों जीतोगे तो उसके अगले दिन हार जाओगे।
बेटा- आपने क्या गजब की बात बताई है। अब मैं एक दिन छोड़कर खेला करूंगा। मेरी समझ में आ गया है पापा!

गोलू- पिताजी! सुना है पुलिस रोज लाठी चार्ज करती है।
पिता - तुमसे किसने कहा?
गोलू - मेरा सवाल है कि क्या लाठी भी मोबाइल की तरह चार्ज होती है?

टीचर -रामू! तुम्हें बताना है कि ऐसा कौन सा पक्षी है जिसके पंख तो होते हैं। परंतु वह उड़ नहीं सकता है?
रामू- सर ! ये तो बहुत सरल जबाब है - मरा हुआ पक्षी।

गणित के अध्यापक - यदि 100 किलो को टन कहा जाता है तो बताओ 300 किलो को क्या कहा जाएगा?
बबलू - सर! तीन बार कहा जाएगा- टन टन टन

मोनू - सर जी! एक बात पूछूं।
गणित के अध्यापक - पूछो।
मोनू- सर हिंदी और अंगरेजी के अध्यापक हिंदी और अंगरेजी में बात करते हैं। आप गणित में बात कीजिए प्लीज!
अध्यापक - ज्यादा तीन-पांच मत कर। नौ दो ग्यारह हो जा। नहीं तो 5-7 खींच दूंगा तो 6 के 36 नजर आने लगेंगे। बत्तीस के बत्तीस बाहर आ जाएंगे।
मोनू-सौरी सर ! गणित की भाषा तो बहुत खतरनाक है।

चिंटू - पापा! आप जल्दी से तैयार हो जाओ।
पिताजी - क्यों?
चिंटू - आज लड़की वाले मुझे देखने आ रहे हैं।
पिताजी - ऐसा तुमसे किसने कहा?
चिंटू - मैंने कल स्कूल में प्रधानाचार्य जी की लड़की को छेड़ा था। प्रधानाचार्य जी ने कहा मैं तुम्हें देख लूगा। कल सुबह तुम्हारे घर आऊंगा। तुम्हारे पिताजी से मिलने।

दुकानदार - समोसा थैली में पैक कर दूं क्या?
बबलू - नहीं अंकल! पैन ड्राइव लाया हूं समोसा वाले फोल्डर में डाल देना।

★ **उपासना तिवारी, कक्षा 8,** विवेकानंद इ.का.रानीधारा, अल्मोड़ा
★ **खुशी रावत, कक्षा 8** रा.जूनियर हाईस्कूल हरमनी, चमोली
★ **कृतिका नौटियाल,** कस्तूरबा गां.आ.बा.वि. तरपालीसैण, पौड़ी
★ **सानिया अधिकारी,** रीना चिल्ड्रन एकैडमी रानीखेत
★ **खुशबू नयाल, कक्षा 9,** कस्तूरबा गां.आ.बा.वि. खनस्यूं, नैनीताल

शुभचिंतकों से

- बालप्रहरी केवल एक पत्रिका ही नहीं बच्चों के मन में वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने, उन्हें साहित्यिक मंच प्रदान करने तथा रचनात्मक कार्यों व पठन-पाठन की संस्कृति से जोड़ने का एक सामूहिक प्रयास भी है।
- बालप्रहरी के लिए रचनाएं भिजवाकर सहयोग करें। पारिवारिक व परिचित बच्चों को बालप्रहरी के लिए रचनाएं लिखने के लिए प्रेरित कीजिएगा। एक कागज पर एक ही रचना लिखी हो।
- बार-बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए आजीवन /सरंक्षक सदस्यता भिजवाकर सहयोग कर सकते हैं। धनराशि पंजाब नेशनल बैंक अल्मोड़ा स्थित बालप्रहरी के खाता सं. 0962000101357002 (IFSC Code : PUNB 0096200) में सीधे भी जमा की जा सकती है। धनराशि बैंक में जमा करने पर कृपया सूचना एस.एम.एस./पोस्टकार्ड या पत्र से देकर सहयोग करें।
- बालप्रहरी के लिए शुल्क/ मनीआर्डर व रचना भेजते समय अपना नाम, पूरा पता एवं फोन न. अवश्य भेजें। पता बदलने तथा पत्रिका नियमित नहीं मिलने पर पोस्ट कार्ड /पत्र/एस.एम.एस. से सूचित कीजिएगा।

बालप्रहरी को बालोपयोगी बनाने के लिए आप सबसे सहयोग एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है। - संपादक

बालप्रहरी

(बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका)
संपादकीय कार्यालय
दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड - 263601
मो.: 9412162950

सदस्यता फार्म

मैं 'बालप्रहरी' की सरंक्षक सदस्यता 5000/-, आजीवन सदस्यता 2,000/-, 3 वर्ष का शुल्क 300/-रु. मनीआर्डर / ड्राफ्ट/चैक सं0 .....दिनांक .....द्वारा भेज रहा/रही हूं। कृपया मुझे पत्रिका की प्रति नियमित रूप से डाक से भिजवाएं।

नाम .....
पता .....
.....
.....
.....पिन.....
मोबाइल/ फोन .....

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-65

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर नीचे कूपन में गोला भरकर **1 जनवरी, 2021** तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा-263601 उत्तराखंड के पते पर (कूपन काटकर) भेजना है। प्रतियोगिता में 14 साल तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। अधिक बच्चों के सही उत्तर होने पर ड्रा से नाम निकाला जाएगा। सर्वोत्तम आने वाले बच्चे का नाम पत्रिका में छापा जाएगा। उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जाएंगी। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-64में **एंजल नौटियाल, कक्षा 8, शिवनगर,मातली,उत्तरकाशी** का चयन किया गया है। इन्हें पुरस्कार में पुस्तक/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

1. हेमवतीनंदन बहुगुणा किस राज्य के मुख्यमंत्री रहे?

(a) उत्तराखंड (b) उत्तर प्रदेश
(c) दिल्ली (d) हिमाचल प्रदेश

2. उत्तराखंड राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाई गई है?

(a) देहरादून (b) गैरसैण
(c) नैनीताल (d) द्वाराहाट

3. 5 जून को मनाया जाता है?

(a) विश्व पर्यावरण दिवस (b) जल दिवस
(c) गौरैया दिवस (d) विश्व शांति दिवस

4. भारत में पहली बार जनगणना प्रारंभ हुई?

(a) सन् 1947 (b) सन् 1950
(c) सन् 1872 (d) सन् 2011

5. नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय थे?

(a) कैलाश सत्यार्थी (b) रवींद्रनाथ ठाकुर
(c) अमर्त्य सेन (d) मदर टेरेसा

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-64 का सही उत्तर

1. (b), 2. (a), 3. (c), 4. (कोई नही) 5. (a)

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-65

नाम : ..... कक्षा .....

पता : .....

.....

फोन (कोड सहित)..... मो. .....

	(a)	(b)	(c)	(d)
प्रश्न सं. 1	○	○	○	○
2	○	○	○	○
3	○	○	○	○
4	○	○	○	○
5	○	○	○	○

नोट : सही उत्तर वाले गोले को पेंसिल या काले पैन से (इस प्रकार (●) काला करना है।

क्या आप जानते हैं?

● विमला जोशी 'विभा'

रेलवे स्टेशन या दूसरे सार्वजनिक स्थानों पर आपने कई लोगों को रात को भी काम करते हुए देखा होगा। ऐसे लोग दिन में सोते हैं या बहुत कम सोते हैं। डॉक्टर बताते हैं कि हमें प्रतिदिन कम से कम पांच या छः घंटे सोना चाहिए। कुंभकर्ण 6 महीने सोता था और 6 महीने जागता था। ये तुमने सुना होगा। लेकिन इस संसार में कई जीव जंतु ऐसे हैं जो लंबी अवधि तक सोते हैं।

आपने बरसात में मेढकों को टर्र-टर्र करते हुए सुना होगा। परंतु जाड़े में मेढक, छिपकली, कछुआ, गिलहरी, तितली, सांप, घोंघा आदि जीव जंतु आपने बहुत कम देखे होंगे। दरअसल ये जीव जंतु ठंड से बचने के लिए लंबे समय तक सुरक्षित स्थान पर निद्रा का आनंद लेते हैं। मेढक, कछुए आदि जीव जंतु सर्दी बढ़ते ही तालाब और नदियों के नीचे भूमि की परतों में चले जाते हैं। सांप तथा दूसरे जीव जमीन के अंदर बिल बनाकर सोते हैं।

जीव जंतुओं के ठंड से बचने के लिए किए गए इस उपाय को शीत निद्रा या हाइबरनेशन कहा जाता है। शीत निद्रा भी दो प्रकार की होती है। पहले प्रकार में जीव-जंतु तीन या चार महीने से भी अधिक समय तक चिरनिद्रा में सोते हैं। दूसरे प्रकार की निद्रा को प्रसुप्ता अवस्था कहा जाता है। इस स्थिति में जीव जंतुओं की हृदय गति और शरीर का तापमान बहुत कम हो जाता है। जरूरत पड़ने पर ही ये हिलते-डुलते हैं।

पहले कहा जाता था कि केवल स्तनधारी प्राणी ही शीत निद्रा लेते हैं। परंतु नए शोध में पाया गया है कि मछलियां तथा रेंगने वाले जीव तथा पक्षी भी शीत निद्रा में जाते हैं। ठंडे इलाकों में रहने वाले भालू भी तीन से छः माह तक निद्रा का आनंद लेते हैं।

शीत निद्रा की अवधि में शरीर की बढ़ी हुई चर्बी ही जानवरों को जीवनदान देती है। इस अवधि में कोई गतिविधि नहीं होने के कारण उन्हें भोजन या ऊर्जा की आवश्यकता भी नहीं होती है। ठंड के दिनों में परेशानी न हो इसलिए कई जीव जंतु अपने भोजन का भंडारण पहले से ही कर लेते हैं।

आपने देखा जानवर तथा दूसरे जीव जंतु भी ठंड से बचने के लिए उपाय करते हैं। हम सबको भी जाड़े में अपना बचाव करना होगा। जिसके पास जो भी उपलब्ध हो गरम कपड़े पहनने चाहिए।

- नवाबी रोड, हल्द्वानी, नैनीताल

कहानी लिखो प्रतियोगिता – 65

दाएं बने चित्र को देखकर 14 वर्ष तक के बच्चे एक कहानी बनाकर संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड-263601 के पते पर 1 जनवरी, 2021 तक भेजकर प्रतियोगिता में नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। कहानी के नीचे अपना नाम व पता तथा उम्र लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कहानी को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें भारत ज्ञान विज्ञान समिति अल्मोड़ा के सौजन्य से भेजी जाएंगी। कहानी लिखो प्रतियोगिता-64 के लिए निम्न कहानी का चयन किया गया। इन्हें पुरस्कार में पुस्तकें / पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

कोरोना वायरस का इलाज

लॉकडाउन में सारे बच्चे घरों के अंदर बंद थे। लॉकडाउन के बाद अनलॉक ने बच्चों को काफी राहत दी। कुछ बच्चे मुहल्ले के पार्क में बैट-बॉल लेकर आ गए। पहले दिन महिपाल, विवेक और संजय ने बारी-बारी से बैटिंग की और बारी-बारी से फिल्डिंग। तीनों ने बहुत दिनों के बाद मस्ती की थी। अगले दिन कुछ और बच्चे क्रिकेट में शामिल हो गए। देखते-देखते रोज लगभग 10-12 बच्चे खेलने के लिए आने लगे। पांच या छः की टीम बनाकर सब मजे से खेलने लगे।

एक दिन दूसरे मुहल्ले के बच्चे भी खेलने के लिए आ गए। सबको पता था कि उन बच्चों के मुहल्ले में कोरोना के दो मरीज अस्पताल में भर्ती हैं। इस कारण सब डर गए। सबसे बड़े खिलाड़ी कक्षा 7 के छात्र महिपाल ने खेल रोकते हुए कहा, ''हम थोड़ी देर खेल बंद कर देते हैं। चलो सामने धीरज आया है। उससे बात करते हैं। तुम सब उनके नजदीक मत जाना। न ही हाथ मिलाना। हां सब लोग अपना मास्क पहन लो।'' महिपाल के कहने पर सबने अपना-अपना मास्क पहन लिया।

महिपाल ने धीरज के निकट जा कर कहा, ''धीरज भाई! हम लोग दो-तीन दिन से खेल रहे हैं। आपको तो पता ही है आजकल एक दूसरे से दूरी बनाना जरूरी है।''

उसने हाथ जोड़कर धीरज और उसके साथियों से कहा, ''आपके मुहल्ले में कोरोना के मरीज हैं। मुहल्ले के बड़े लोग आजकल घर में ही रह रहे हैं। प्लीज आप लोग भी कुछ दिन होम क्वारंटाइन रहने के बाद हमारे खेल में शामिल होंगे तो हमें खुशी होगी।''

महिपाल के इतने प्यार से बात करने पर तो धीरज और उसके साथी पिघल गए। ''ठीक है।'' कहकर धीरज और उसके साथी चले गए।

धीरज ने सारे साथियों से कहा, ''जाओ, स्टेंप और बल्ला ले आओ। कोरोना से बचाव के लिए जरूरी है कि हम कुछ दिन खेल बंद कर दें। हम किस-किस से मना करेंगे। कल दूसरे लोग भी आ सकते हैं।''

'' लो महिपाल भाई!'' कहते हुए संजय स्टेंप व बल्ला ले आया। विवेक ने कहा, ''महिपाल भाई! तुम्हारी बात में दम है। हम लोग सेनेटाइजर का प्रयोग करते हैं। कुछ लोग तो बहुत लापरवाह होते हैं। किसी की छोटी सी लापरवाही हम सब पर भारी पड़ सकती है। इसलिए हम कुछ दिन तो खेल बंद कर देते हैं।''

''ठीक है '' कहकर सभी अपने-अपने घर को चले गए।

— संस्कृति गुप्ता, कक्षा 7

लिटिल एंग्लि स्कूल, अंबेदकरनगर, उ.प्र.

(इसके अतिरिक्त तान्या अवस्थी (शाहजहांपुर), सजल जैन (आगरा), आयुशी मिश्रा (ऋषिकेश), मोनिका (देहरादून), उपासना तिवारी (दुगालखोला), कनिष्का (हल्द्वानी), महिमा तिवारी (अल्मोड़ा) की कहानी भी प्रशंसनीय रही। - संपादक

अनमोल वचन

- सफलता अपने हाथों में नहीं, बल्कि मेहनत अपने हाथों में है। – अब्राहम लिंकन
- सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है, जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ है। – स्वामी शंकराचार्य
- *किसी को माफ करना कमजोरी नहीं, बस सामर्थ्यवान ही ऐसा कर सकता है।* – चाणक्य
- *अच्छे शब्दों के प्रयोग से बुरे लोगों का दिल भी जीता जा सकता है।* – *भगवान बुद्ध*
- *आराम और उपवास सब दवाइयों से उत्तम हैं।* – *भगवान बुद्ध*

संकलन : कंचन सिरस्वाल,
सलियाणा बैंड, गैरसैण, चमोली

पहेलियां

● सुधा जौहरी
ए-2 विजय पथ, तिलकनगर, जयपुर, राजस्थान

1. मोटा हाथी सीधा दौड़े, ऊंट चले है तिरछा,
ये कैसा रण लड़ें मरें, सब बिन गोली बरछा।
2. छोटा पंछी जाल के ऊपर, इधर-उधर मंडराए,
पर बेचारा जिधर भी जाए, मार उधर ही खाए।
3. एक भाग कर फेंके, एक मार कर भागे,
कोई लपके कोई दौड़े, जब वह लुढ़के आगे।
4. घर लाए को घेर के पकड़ो, बच के जा न पाए,
किसी की टूटे सांस और कोई छूने से मर जाए।

उत्तर: 1. शतरंज, 2. शटलकॉक (बैडमिंटन), 3. क्रिकेट की गेंद, 4. कबड्डी

★ चांद मोहम्मद घोसी
नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

कुमाउनी कविता :

बल्दी त्यार

● विनीता जोशी

इज पिसणौ मासक ग्याड़,
ऐ गो रे बल्दी त्यार।
फून लगै बेर बल्द छाज,
ऐ गो ऐ गो ह्यून राज।
मासक बेड़ू, खीर रैत,
दिदि ऐ रे आज भोउ मैत।
ठुल-ठुल बाड़नकि ऐरै बहार,
ऐ गो रे बल्दी त्यार।

- तिवारीखोला, पूर्वी पोखरखाली,
अल्मोड़ा
मोबाइल-9411096830

गढ़वाली कविता :

ठंड

● प्रीतम अपछ्याण

भैर न जा भैर न जा भारि हुई ठंड,
अलेलि हथखुटी जौर रींगलो बरमंड।
फ्यफना फाटला तेरा गलोड़ि तीड़ि लाल,
सांसुना छुटली भाप नाक होलि टिंट्वाल।
पाला का खांकर बिनाला पिड़ा सकरसंड,
भैर न जा भैर न जा भारि हुई ठंड।
फजल न खा लिंबा नारंगी जिद न कर छुछा,
गुच्छि फरैं टक नि धैर जुखामै छि छा।
दस्ताना जुराब ट्वप्लि बनैनों की ढंड,
अलेलि हथखुटी जौर रींगलो बरमंड।

- राजकीय इंटर कालेज, अमस्यारी, गरुड़, बागेश्वर
मोबाइल- 9412924354

पहाड़ा ननां हाल-चाल

मितुरो,

कोरोना बीमारी वजैल पहाड़ा नान लै घर है भ्यार नि जै सक। क्वे इज-बौज्यू तो बहुत जागरूक छन। उनूल ननां कैं घर में लै रचनात्मक कामों में लगाछ। क्वे-क्वे इज-बौज्यूल तो ननां पर बहुत पाबंदी लगैछ। कोराना एक फैद य छी कि ननां कैं घर में इज-बौज्यू दगाड़ मस्ती करणौ मौक मिलौ। दुसर बात य छू कि य बीच घरौं पन इज-बौज्यू झगौड़ लै बहुत हौछ। य वजैल नान बहुत परेशान रयीं।

य बीच पहाड़ा सरकारि स्कूलों में लै ऑनलाइन पढ़ाई शुरू करणौ औडर राजधानी बटी आछ। औडर राजधानी बटी मंडल, जिल्ल, ब्लाक और स्कूल तक पुजौ। स्कूल बटी कागज संकुल, ब्लाक, जिल्ल, मंडल होते हुए राजधानी तक पुजि गो कि ऑनलाइन पढ़ाई शुरू हैगे। सरकार खुशि हैरै बल।

हकीकत य छू कि स्कूल में नई दर्ज शुरू हई बहुत महैण है गयीं। आजि तक गौं स्कूली नना पास किताब नहां। जादेत्तर ननां पास स्मार्टफोन लै नहां। स्मार्टफोन हूछ लै तो येति सिगनल नहां। य वजैल सब पढ़ाई कागजों में चलि रै। बांकि फिर लेखूल।

तुमर मितुर,
प. गुसाईराम आचार्य

पहाड़ के बच्चों के हाल-चाल

दोस्तो,

कोरोना बीमारी के कारण पहाड़ के बच्चे भी घर से बाहर नहीं जा पाए। कोई माता-पिता तो बहुत जागरूक हैं। उन्होंने बच्चों को घर में भी रचनात्मक कार्यों में लगाया। कई माता-पिताओं ने तो बच्चों पर॰ बहुत पाबंदी लगाई। कोरोना का एक लाभ यह हुआ कि बच्चों को घर में माता-पिता के साथ मस्ती करने का अवसर मिला। दूसरी बात यह है कि इस बीच घर में माता-पिता का झगड़ा भी बहुत हुआ। इस कारण बच्चे बहुत परेशान रहे।

इस बीच पहाड़ के सरकारी स्कूलों में भी ऑनलाइन पढ़ाई प्रारंभ करने का आदेश राजधानी से आया। आदेश राजधानी से मंडल, जिला, ब्लाक और स्कूल तक पहुंचा। स्कूल से कागज संकुल, ब्लाक, जिले,मंडल होते हुए राजधानी पहुंच गया है कि ऑनलाइन पढ़ाई प्रारंभ हो गई है। सरकार खुश हो रही है बल।

हकीकत ये है कि स्कूल में नई कक्षा प्रारंभ हुए बहुत महीने हो गए हैं। अभी तक गांव के स्कूली बच्चों के पास पुस्तकें नहीं हैं। अधिकतर बच्चों के पास स्मार्टफोन भी नहीं हैं। स्मार्टफोन होता तो भी यहां सिंगनल नहीं हैं। इस कारण पूरी पढ़ाई कागजों में चल रही है। बांकी फिर लिखूंगा।

तुम्हारा दोस्त,
प. गुसाईराम आचार्य

पुस्तक समीक्षा :

पेड़ और बादल

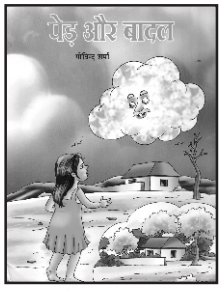

बाल कहानी संग्रह में 10 बाल कथाएं नाम के अनुरूप पेड़ और पर्यावरण पर आधारित हैं। जलवायु परिवर्तन के आज के दौर में ये कहानियां बच्चों को प्रकृति तथा पर्यावरण से जोड़ती हैं। प्रकृति प्रेम के साथ ही कहानियां बच्चों को सामाजिक सरोकारों से भी जोड़ती हैं। चित्रों ने पुस्तक को आकर्षक बना दिया है।

पृष्ठ संख्या : 64 मूल्य- 200/- रुपए
रचनाकार : गोविंद शर्मा
संपर्क : साहित्यागार, धामाणी मार्किट की गली,चौड़ा रास्ता, जयपुर- 302003

चिंकू-टिंकू दो बंदर

बाल गीत संग्रह में आकर्षक चित्रों के साथ 21 बालगीत संकलित हैं। बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए मोर, बगुला, बंदर, नदी, पर्वत, बादल जैसे विषयों के माध्यम से बच्चों को प्रकृति से जोड़ने का सार्थक प्रयास है। कविताएं बच्चों का मनोरंजन करने के साथ ही उन्हें संस्कारों तथा आशावाद से भी जोड़ती हैं।

पृष्ठ संख्या : 56 मूल्य- एक प्रति- 100/-रुपए
रचनाकार : जयसिंह आशावत
संपर्क : नैनवां, बूंदी, राजस्थान- 323801

सीटी बजाता हाथी आया

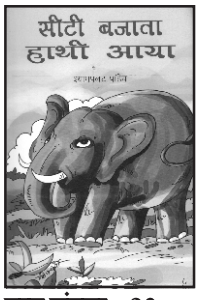

बाल कविता संग्रह में 31 रचनाएं बाल मनोविज्ञान पर आधारित हैं। स्थानीय परिवेश लिए हुए कविताएं बच्चों का जहां मनोरंजन करती हैं। वहीं बच्चों को सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों से भी जोड़ती हैं। पुस्तक में आकर्षक चित्र भी दिए गए हैं। बच्चों को पुस्तक पसंद आएगी, ऐसा हमारा मानना है।

पृष्ठ संख्या- 80 मूल्य- 195/- रुपए
रचनाकार : श्यामपलट पांडेय
संपर्क : 907 पंचतीर्थ अपार्टमेंट, जोधपुर चार रास्ता, सेटेलाइट, अहमदाबाद - 380015

चुन्नू मुन्नू

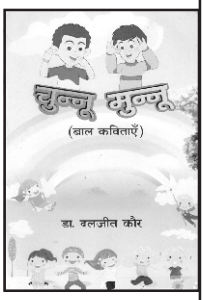

बाल कविता संकलन में 50 रचनाएं बच्चों के लिए दी गई हैं। रोटी, गुड़, फूल, पेड़ आदि स्थानीय परिवेश पर आधारित रचनाएं बच्चों को पुस्तक से जोड़ेंगी। छोटी-छोटी रचनाओं को पढ़कर बच्चे आनंदित होंगे, ऐसा हमारा मानना है। रचनाएं बच्चों का मनोरंजन करने के साथ ही उनमें संस्कार जाग्रत करने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

पृष्ठ संख्या : 56 मूल्य- 75/-रुपए
रचनाकार : डॉ. दलजीत कौर
संपर्क : 2571 सैक्टर-40 सी, चंडीगढ़

समीक्षक :
रतनसिंह किरमोलिया
मो.7534007179

बाल कहानियां

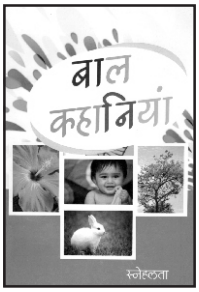

कहानी संग्रह में शुभ्रू, चिकूं जी, सिंबोला, लाल गुडहल तथा अतिथि देवो भव पांच कहानियां दी गई हैं। कहानियां बच्चे एक बार पढ़ेंगे तो पूरा पढ़कर ही दम लेंगे, ऐसा हमारा मानना है। बच्चों के लिए छोटी पुस्तक नया प्रयोग है। पुस्तक का फांट कुछ बड़ा करके आकर्षक चित्रों से पुस्तक को और अधिक बालोपयोगी बनाया जा सकता है।

पृष्ठ संख्या : 16 मूल्य : 25/- रुपए
रचनाकार : स्नेहलता
संपर्क : 1/309 विकासनगर, लखनऊ, उ.प्र.

बिल्ली बोली म्याऊं

इस बाल कविता संग्रह में 41 रचनाकारों की बिल्ली पर कविताएं संकलित हैं। सभी ने अपने अंदाज में बिल्ली को प्रस्तुत किया है। एक ही विषय पर पूरी पुस्तक तैयार करना, अपने आप में अद्भुत कार्य है। बिल्ली के अलग-अलग चित्र देकर पुस्तक को आकर्षक बनाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक बच्चों को पसंद आएगी, ऐसा हमारा मानना है।

पृष्ठ संख्या : 48 75/- रुपए
संपादक : डॉ. सतीशचंद्र भगत
संपर्क : हिंदी बालसाहित्य शोध संस्थान,बनौली,दरभंगा, बिहार-847428

उपहार

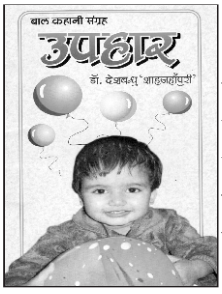

बाल कहानी संग्रह में 7 कहानियां बच्चों के बाल मनोविज्ञान के अनुरूप दी गई हैं। कहानियां बच्चों का मनोरंजन करने के साथ ही उन्हें एक सही दिशा देने में भी सक्षम हैं। रंगीन चित्रों के साथ बहुत ही आकर्षक ढंग से पुस्तक को तैयार किया गया है। पुस्तक में टाइप फांट थोड़ा बड़ा होता तो पुस्तक और अधिक आकर्षक बन जाती ।

पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य- 60/- रुपए
रचनाकार : डॉ. देशबंधु 'शाहजहांपुरी'
संपर्क : आनंदपुरम कॉलोनी, कन्नौजिया अस्पताल के पीछे, बीबीजई चौराहा, शाहजहांपुर,उ.प्र.

अंतरिक्ष के आर-पार

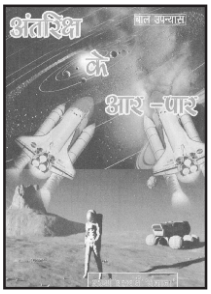

बाल उपन्यास में बच्चों को सौर मंडल में स्थित मंगल ग्रह की जानकारी देने का प्रयास रचनाकार ने किया है। विज्ञान के आज के दौर में भी सूर्य ग्रहण को राहु व केतु से जोड़ा जाता है। ये पुस्तक बच्चों में वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने के साथ उनका मनोरंजन भी करेगी, ऐसा हमारा मानना है।

पृष्ठ संख्या : 24 मूल्य- अमूल्य
रचनाकार : अरूण बहुखंडी
संपर्क : प्राथमिक स्कूल 4 के आगे, अपर कालाबड़, कोटद्वार, पौड़ी

कहानी :

स्कूली पिकनिक

• नीलू चोपड़ा

आज जैसे ही स्कूल की छुट्टी हुई बच्चे बहुत ही उत्साहित थे। अगले दिन से स्कूल में दशहरे की 15 दिनों की छुट्टियां थी। उनकी कॉलोनी से थोड़ी दूर मेला भी लगने वाला था। सब बच्चे छुट्टियों और मेले की बातें करते आ रहे थे। रजत भी बहुत खुश था। उसे अपने प्यारे दोस्त दीपक की बहुत याद आ रही थी।

कुछ महीने पहले दीपक उसके साथ वाले बंगले में ही रहता था। दोनों एक ही क्लास में थे। पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद में भी अव्वल थे। साथ खेलते साथ पढ़ते। रजत और दीपक दोनों की मम्मियां भी पक्की सहेलियां थी। वे दोनों भी एक दूसरे के घर में आती-जाती थी। कभी घर में कोई अच्छा पकवान बनता तो एक दूसरे के घर भिजवाया जाता। ऐसे ही हंसी और खुशी के साथ दिन बीत रहे थे।

लेकिन तभी एक हादसा हो गया। दीपक के पापा को हार्ट अटैक हुआ और उनका देहांत हो गया। पूरी कॉलोनी में दुख की लहर फैल गई। दीपक के पापा की मृत्यु पर रजत की मम्मी और पापा भी दुखी थे। वह चार पांच दिन रोज दीपक के बंगले में जाकर दीपक की मां को दिलासा देते। एक बार रजत भी उनके साथ गया था। बेचारे दीपक का रो-रो कर बुरा हाल था। कुछ दिन बाद ही रजत ने देखा दीपक का बंगला खाली हो रहा है। उसकी मम्मी ने बताया कि अब दीपक कालोनी के दूसरे हिस्से में जहां बहुत छोटे घर हैं वहां रहेगा। उसकी मम्मी को आफिस में एक छोटी सी नौकरी मिल गई है। अब वह दीपक से स्कूल में ही मिलता था। दीपक बहुत उदास रहने लगा था। यह देख रजत को दुख होता। रजत के साथ वाले बंगले में नए लोग आ गए थे। वे आंटी भी मम्मी की सहेली बन गई थी। उसकी मम्मी न तो कभी दीपक की मम्मी को याद करती। न ही कभी उनसे उनके छोटे घर में मिलने जाती। उन्होंने ने तो रजत को भी दीपक के घर जाने से मना कर दिया था। वे दीपक से कहती अपने जैसे बड़े बंगले वालों से ही दोस्ती रखनी चाहिए। यह सुन रजत को बुरा लगता। वह कभी बिना बताए दीपक के घर चला जाता। एक बार उसकी मम्मी को पता चल गया तो उसे बहुत डांट पड़ी थी।

दशहरे का मेला लग गया था। रजत भी बहुत उत्साहित था। उसने अपने पापा को आफिस से जल्दी आने को कहा। पापा शाम को समय पर आ गए। रजत और उसकी मम्मी भी तैयार हो चुकी थी। पापा ने चाय पी और कार निकालने को उठने लगे तो रजत बोला, ''पापा! आज हम दीपक को भी अपने साथ ले जाते हैं उसके घर की तरफ से गाड़ी निकाल लेना।'' यह सुनकर रजत की मम्मी गुस्सा हो गई। उसने कहा, ''नहीं, नहीं दीपक को नहीं ले जाना। साथ वाले बंगले की मिसेज कपूर और उनकी बेटी पिंकी को मैंने पहले ही कह दिया है। वे हमारे साथ जाएंगे।'' रजत ने कहा,'' मम्मी! दीपक के पापा नहीं हैं। उसे कौन ले जाएगा?'' रजत की मम्मी ने कहा, ''उसकी मम्मी ले जा सकती है। रजत तुम्हें भी अपने बराबरी वालों से दोस्ती रखनी चाहिए। कहां उन छोटे-छोटे क्वाटरों में जाते रहते हो? यह साथ वाली पिंकी भी अच्छी लड़की है इससे दोस्ती करो। रजत मम्मी की बात सुनकर हैरान हो गया। उसने पूछा, ''मम्मी! दीपक की मम्मी क्या अब आपकी सहेली नहीं हैं?'' मम्मी बिना जवाब दिए कार में बैठ गई। इतने में पिंकी और उसकी मम्मी भी आ गई। पापा ने कार मेले के बाहर रोक दी। रजत को दीपक की याद आ रही थी इसलिए वह उदास सा था। मेले में खूब भीड़ थी। रोशनी ऊंचे-ऊंचे झूले और बहुत कुछ था। सबने मिलकर चाट पकौड़ी खाई। आइसक्रीम भी खाई। झूलों पर भी झूले। पापा ने रजत को खिलौने भी लेकर दिए पर रजत अनमना ही रहा। वह मन ही मन कुछ सोचता आ रहा था। उसने दीपक को मेला ले जाने का वादा किया था पर मम्मी ने मना ही कर दिया था।

..... शेष पृष्ठ 45 पर ....

उत्तराखण्ड शासन

सावधानी बरतें,

डेंगू से न घबराएं

डेंगू की रोकथाम सबकी जिम्मेदारी
सबकी भागीदारी

त्रिवेन्द्र सिंह रावत
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

डेंगू से बचाव

- अपने घर में और आसपास पानी एकत्रित ना होने दें।
- पानी की टंकी, जल भंडारण की वस्तुओं को ढक कर रखें।
- सभी गुलदस्तों, पानी के बर्तनों एवं कूलर का सारा पानी सप्ताह में एक बार पूरी तरह खाली कर दें और उन्हें सुखा कर फिर भरें।
- ऐसे कपड़े पहनें जो शरीर को ज्यादा से ज्यादा ढक सके।
- डेंगू रोग के लक्षण होने पर चिकित्सकीय परामर्श लें और बिना चिकित्सकीय परामर्श के कोई दवा ना लें।

कोरोना से बचाव

नियमित रूप से हाथ धोते रहें

कोरोना से बचाव के लिए मास्क का प्रयोग करें

सार्वजनिक स्थानों पर ना थूकें।

सार्वजनिक स्थानों पर 2 गज की दूरी बनाये रखें

अगर खाँसी, बुखार या साँस लेने में परेशानी हो तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें

आपका सुखद स्वास्थ्य हमारी प्राथमिकता है।

अधिक जानकारी के लिए हेल्पलाइन नं0 **104** (टोल फ्री) पर सम्पर्क करें।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी
www.uttarainformation.gov.in UttarakhandDIPR DIPR_UK

महिला हेल्पलाइन नं. 1090 | किसान कॉल सेंटर नं. 1551 | सी.एम.हेल्पलाइन नं. 1905 | चाइल्ड हेल्पलाइन नं. 1098 |
आयुष्मान उत्तराखण्ड हेल्पलाइन नं. 104 | आपदा कॉल सेन्टर नं. 1070

कहानी :

चमगादड़ों की अनोखी दुनिया

● प्रो. रमेश सोमवंशी

शाम का समय था। सूर्यास्त हो रहा था। मैं कपड़े पहनकर तैयार हो गया था। तभी मेरे पास मेरा पोता व पोती रिजुल तथा माही आए और बोले, "दादाजी! दादाजी! आप कहां जा रहे हैं?"

मैंने उन्हें जबाब दिया, "मैं अपने संस्थान में टहलने जा रहा हूं।" दोनों बच्चे बोले, "दादाजी! आज हम दिन भर घर पर बहुत बोर हो गए हैं। हम भी आपके साथ जिराफ पार्क में घूमने चलेंगे।"

मैंने कहा, ''ठीक है चलो, पर हां पानी की बोतल रख लो। वहां हमें थोड़ा समय लगेगा।" बच्चे बोले,''ठीक है दादाजी! हम चॉकलेट व चिप्स के पैकेट भी रख लेते हैं। हम वहां खेलेंगे, खाएंगे और मस्ती करेंगे।"

मैंने जिराफ पार्क के पास गाड़ी पार्क की। यहां जिराफ व उसके बच्चे की एक बड़ी सी कृति लगी हुई थी। इसलिए माही उसे जिराफ पार्क कहती थी। वहां गुलाब के हजारों पौधे लगे हैं। इसलिए कुछ लोग उसे रोज गार्डन भी कहते थे। पहले यहां झंडा फहराया जाता था। इस कारण पुराने लोग इसे झंडा पार्क पुकारते थे। यहां एक लंबा-चौड़ा, हरा-भरा घास का मैदान है। चारों ओर हरियाली व अनेक पुराने वृक्ष हैं। इन वृक्षों पर तरह-तरह के पक्षी व चमगादड़ वास करते हैं। यहां सुंदर दृश्य होता है। मैं टहल रहा था। दोनों बच्चे मैदान में खेल रहे थे। अचानक पेड़ों से कई चमगादड़ निकले और वे पार्क के ऊपर आकाश में चक्कर काटने लगे। माही थोड़ा डर गई। वह भागकर मेरे पास आ गई। उसके पीछे-पीछे रिजुल भी आ गया। माही ने पूछा, "दादाजी! ऊपर ये काले-काले उड़ने वाले क्या हैं?"

रिजुल बोला, "माही! ये चमगादड़ हैं। जिन्हें हम 'बैट' भी कहते हैं।" मैंने कहा, "हां माही! रिजुल बिल्कुल ठीक कह रहा है।"

माही ने पूछा, "परंतु जब हम यहां आए थे, तब तो ये यहां नहीं थे।" मैंने जबाव दिया "माही! ये अंधेरा होने पर निकलते हैं। जब हम यहां आए थे, तब शाम थी किंतु अब थोड़ा अंधेरा हो गया है और ये अपने आश्रयों से निकल आए हैं। आओ! मैं तुम्हें रात्रि जीवी प्राणी चमगादड़ों के बारे में कुछ बताता हूं।" बच्चे बोले "ठीक है, दादाजी! बताइए।" मैंने उन्हें चमगादड़ों की कहानी सुनाना शुरू की। मैंने कहा, ''चमगादड़ एक छोटे स्तनधारी प्राणी हैं जो उड़ने की क्षमता रखते हैं। ये अन्य पक्षियों की अपेक्षा तेजी से उड़ते हैं। उड़ने के दौरान ये कहीं भी टकराते नहीं हैं। दुनिया में चमगादड़ अति ठंडे स्थानों के अतिरिक्त सभी महाद्वीपों में पाए जाते हैं। ये सामाजिक प्राणी हैं अत: बड़ी गुफाओं में ये हजारों-लाखों की संख्या में पाए जाते हैं। इनकी लगभग 1200 प्रजातियां हैं। ये दिन के समय वनों, गुफाओं, पेड़ों, खंडहरों, छत या पेड़ों पर उल्टे लटके रहते हैं। इनके लटकने को 'रूस्टिंग' या बसेरा कहते हैं। यहां ये आराम करते तथा सोते हैं। इनका वजन 2.00 ग्राम से 1.60 किग्रा तक होता है।''

मैंने देखा दोनों मेरी बात को बहुत गौर से सुन रहे थे। मैंने उन्हें बताया, ''चमगादड़ आर्डर चिरोप्टेरा के सदस्य हैं। चिरोप्टेरा का अर्थ है-हाथ में पंख। इन्हें पारंपरिक रूप से उप आर्डर मेगा चिरोप्टेरा व माइक्रोचिरोप्टेरा में वर्गीकृत किया गया है। वर्तमान में इन्हें उप आर्डर यिनटेरो चिरोप्टेरा तथा यांगो चिरोप्टेरा में रखा गया है। इन की प्रमुख प्रजातियों के नाम हैं- मेगा, वैंपायर, फाल्स वैम्पायर, किट्टीस हाग नोस्ड, माऊस टेल्ड, लीफ नोस्ड, हार्स शू, लांग विंग्ड, फिशरमैन, शार्ट टेल्ड, फ्रीटेल्ड, डिस्क विंग्ड, सैक्ड विंग्ड, सकर फूटेड, फनेल इयर, वेस्पर आदि। सबसे छोटा चमगादड़ किट्टीस हाग नोस्ड तथा सबसे बडे फ्लाइंग फाक्सेस तथा जियांट गोल्डेन-क्राऊंड फॉक्स प्रजाति के हैं।''

रिजुल ने पूछा, "दादाजी! चमगादड़ क्या खाते हैं?" मैंने जबाव दिया, "बेटा! ये पराग, परागकण, फल, कीड़े-मकोड़े (बर्र, कीट, मक्खी, मच्छर, बीटल, ग्रास होपर्स, झींगुर, दीमक, मधुमक्खी, मे मक्खी, कैड मक्खी व मोथ) आदि खाते हैं। ये फलाहारी व कीटाहारी दोनों होते हैं।" माही ने प्रश्न किया, "दादाजी! क्या ये अंडे देते हैं?" मैंने उन्हें बताया, "मादा चमगादड़ अंडे नहीं देती क्योंकि ये पक्षी नहीं है अपितु स्तनधारी हैं। ये प्राय: 40 दिन से 6 माह के गर्भकाल के बाद एक बच्चे को जन्म देती हैं। इनका जीवन काल 28-30 वर्ष होता है।" माही ने पूछा, "इनके शत्रु कौन हैं?" मैंने जबाव दिया, "शिकारी पक्षी जैसे चील, बाज, उल्लू , सांप, बिल्ली तथा मनुष्य इनके प्राकृतिक शत्रु हैं।" रिजुल ने उत्सुकता से पूछा, "दादाजी! मनुष्य इनके शत्रु क्यों माने जाते हैं?" मैंने कहा, "दुनिया के कुछ

महाद्वीपों यथा एशिया, अफ्रीका आदि के कुछ देशों में इनका मांस खाया जाता है। अतः कुछ लोग इनका शिकार करते हैं।''

''छी-छी, चमगादड़ भी क्या खाने की चीज है? कुछ गंदे लोग ही ऐसा करते होंगे।'' माही बोली।

रिजुल ने पूछा, "दादाजी! जब चमगादड़ पक्षी नहीं हैं तो वे उड़ते कैसे हैं?" मैंने जबाब दिया, "इनके हाथों में एक झिल्ली होती है जो पंखों के रूप में विकसित हो जाती है। इसी की सहायता से चमगादड़ उड़ते हैं।" माही ने प्रश्न किया, "दादाजी! चमगादड़ रात में उड़ते हैं। वे अंधेरे में अपना शिकार भी करते होंगे। वे कहीं टकराते भी नहीं हैं। ऐसा कैसे होता है?" मैंने जबाब दिया, "माही! यह बहुत अच्छा प्रश्न है। चमगादड़ अल्ट्रासोनिक ध्वनि उत्पन्न करते हैं जिससे प्रतिध्वनि अथवा 'इको' उत्पन्न होती है। इससे चमगादड़ की श्रव्य तंत्रिका द्वारा इनके मस्तिष्क में शिकार या वस्तु की वास्तविक स्थिति की तस्वीर बनती है। चमगादड़ उनका सफलता से शिकार कर लेता है। इसी कारण वे कहीं टकराते भी नहीं हैं।''

रिजुल बोला, "दादाजी! मैंने टीवी में सुना है कि चमगादड़ खतरनाक बीमारियों के वायरस फैलाते हैं।" मैंने उत्तर दिया,"हां बेटा! यह सच है। चमगादड़ों की लार व मल से दूषित वायरस फैलते हैं। चमगादड़ सार्स, कोविड-19, हेनिपा, निपाह, लासा, इबोला, मारबर्ग, रैबीज आदि के वायरस व खतरनाक बीमारियां फैलाते पाए गए हैं। कहते हैं कि मनुष्यों के नए उभरते विषाणु रोग चमगादड़ों से फैलते हैं।" रिजुल ने फिर प्रश्न किया, "दादाजी! जो वायरस मनुष्यों में रोग पैदा करते हैं उनसे क्या चमगादड़ बीमार नहीं होते हैं?" मैंने कहा, "रिजुल तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है। चमगादड़ों का प्रतिरक्षा तंत्र इस प्रकार का है कि खातरनाक विषाणुओं से उन्हें हानि नहीं होती हैं। इनमें इंफ्लेमोशोम्स कम होते हैं। अतः इन रसायनों के प्रभाव से चमगादड़ों के अंग क्षतिग्रस्त नहीं होते हैं। इनमें स्टिंगजीन (स्टूमुलेटर आफ इंटरफेरान जीन) कम होती हैं। इससे ये विषाणु खतरों पर कम प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। विषाणुओं के प्रति प्रभावी रिस्टिंग

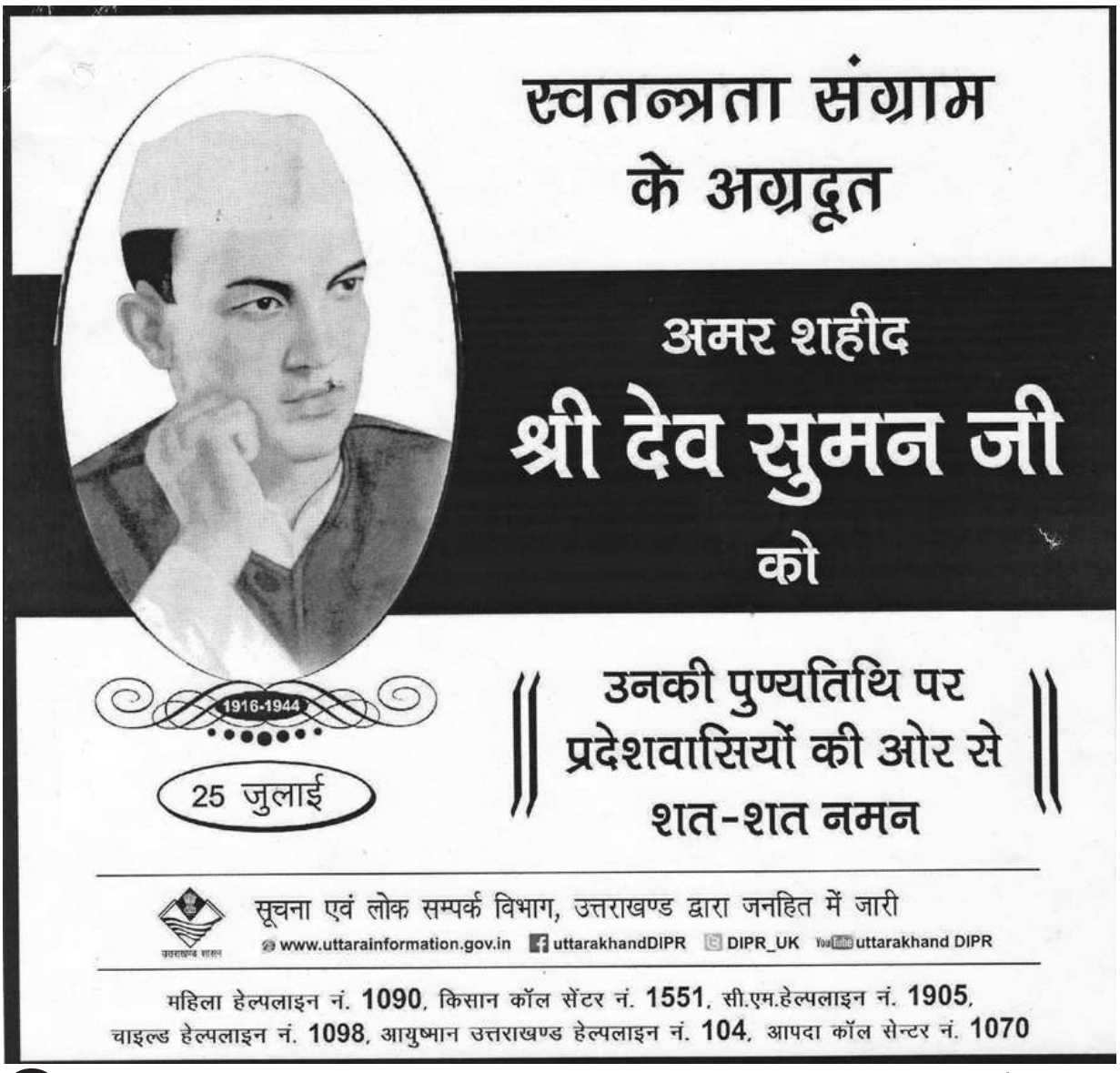

प्रतिक्रिया होती है किंतु अतिरिक्त प्रतिक्रिया नहीं। चमगादड़ में एक प्रकार के विषाणु का संक्रमण बार-बार हो सकता है। चमगादड़ लंबी आयु तथा उपर्युक्त गुणों के कारण विषाणु संक्रमण फैलाते हैं। हाल के वर्षो में सार्स तथा वर्तमान कोविड्-19 महामारियों के कोरोना विषाणु चमगादड़ों से ही फैले हैं।"

रिजुल ने पूछा, "दादाजी! क्या चमगादड़ खून भी पीते हैं?" मैंने कहा, "हां, यह आधा सच हैं। केवल दक्षिणी तथा मध्य अमेरिका के आम, वाइट विंग्ड तथा हेयरी लेग्ड वैंपायर या रक्त चूषक प्रजाति के चमगादड़ गौवंशीय पशुओं, पक्षियों तथा मनुष्यों का रक्त पीते हैं। ये सोते हुए प्राणियों के पैर या सिर की खाल को कुतर कर रक्त पीते हैं। ऐसे ही कुछ चमगादड़ घातक रैबीज़ रोग फैलाते हैं।

चमगादड़ों में अनेक घातक विषाणु पाए जाते हैं। ये विषाणु प्राय: आर.एन.ए. विषाणु होते हैं। इन्हें कुछ डी.एन.ए. विषाणु भी संक्रमित करते हैं। ये विषाणु मनुष्यों में अनेक घातक संक्रामक रोग व महामारी फैलाते हैं। ऐसे कुछ प्रमुख विषाणु की जानकारी मैं तुम दोनों को दूंगा। इनमें कोरोना विषाणु भी प्रमुख है। सार्स कोरोना विषाणु का पूरा नाम सीवियर एक्यूट रैस्पीरेटरी सिंड्रोम है। इसका तात्पर्य है तीव्र कष्टमय श्वसनीय संलक्षण। सार्स का कारण कोरोना विषाणु (कोव) है। नवंबर, 2002 में फोहान, चीन में इपीडेमिक प्रारंभ हुआ। इस से पूरी दुनियां मे लाखों लोगों की मौत हुई। इस विषाणु का आगार था-चीनी रयूक्स हार्स शू चमगादड़। एक दूसरा विषाणु है मर्स विषाणु। मर्स (MERS) का पूरा नाम है मिडिल ईस्ट रैस्पीरेटरी सिंड्रोम। इसका तात्पर्य है मध्यपूर्ववनीय संलक्षण। यह रोग जून, 2012 में जेददा, साऊदी अरबिया में प्रारंभ हुआ। इस विषाणु से नवंबर, 2019 तक दुनिया के 27 देशों के 858 लोगों की मृत्यु हुई। विषाणु सैक्ड विंग्ड, लेसर माऊस टेल्ड तथा वेस्पर चमगादड़ों में उत्पन्न हुआ तथा इस का मध्यम परपोषी ऊंट था। सार्स कोरोना विषाणु (कोव)-2-19: कोविड-19 महामारी का कारण सार्स-कोरोना विषाणु (कोव)-2-2019 है। इस का पहला मामला फूड मार्केट, वुहान, चीन में हुआ। संभवत: रोग मध्यम परपोषी पैंगोलिन से लोगों में संचरित हुआ। इस महामारी से आज समूचा विश्व परेशान है।

फाइलो विषाणु से मारबर्ग रोग 1967 में प्रारंभ हुआ। विषाणु का आगार इजिप्टियन फ्रूट चमगादड़ है। इबोला रोग 1976 में प्रारंभ हुआ। विषाणु के आगार मेगा चमगादड़ हैं। लाईसा विषाणु में रैबीज़, आस्ट्रेलियाई बैट लाईसा, यूरोपियन बैट-1 लाईसा तथा-2 लाईसा विषाणु सम्मिलित हैं। विषाणुओं का आगार माइक्रो चमगादड़ है। पैरामिक्सो विषाणु में हेनिपा व आस्ट्रेलियाई हेंड्रा, 1994 विषाणु हैं। इन विषाणुओं के आगार फ्लाइंग फाक्स चमगादड़ हैं। निपाह विषाणु के कारण सन 1998 में मानव में पहली बार इस रोग का प्रकोप मलेशिया में हुआ था। निपाह विषाणु फ्लाइंग फाक्सेस चमगादड़ व्युतपन्न तथा इस का मध्य परपोषी पालतू सुंअर पाया गया। इसके अतिरिक्त फाइलो, हैंटा, लाइसा, पैरामिक्सो, रियो, रेट्रो व टोगा (चिकिनगुनिया का कारण) विषाणु भी चमगादड़ों से फैलते हैं।

माही ने पूछा, "दादाजी! क्या चमगादड़ों से हमें कोई फायदा भी होता है?" मैंने कहा, "चमगादड़ फूलों का पराग खाते हैं तथा वे एक फूल से दूसरे फूल पर जाते हैं। इस तरह वे पौधों का परागण करते हैं। दूसरा ये फलों का गूदा खाने के बाद बीजों को फैलाते हैं। तीसरा ये फसलों को हानि पहुंचाने वाले कीटों को खाते हैं। इससे कीट नियंत्रण हेतु कीटनाशक औषधियों का प्रयोग कम करना पड़ता है। इससे काफी पैसा बचता है। चौथा चमगादड़ों के मल व वज्य पदार्थ जिसे 'गुआन' कहा जाता है अति उत्तम खाद होती है, जिसमें नाईट्रोजन, फास्फोरस व पोटेशियम की प्रचुर मात्रा होती है। ये खाद उनके रहने के आश्रयों से एकत्र की जाती है। अत: चमगादड़ एक तरह से कृषकों के मित्र होते हैं।'' तभी मेरे मोबाइल फोन की घंटी बजी। फोन घर से था। मैंने बच्चों से कहा, ''बहुत देर हो गई है। चलो घर चलते हैं।''

दोनों बच्चे बोले, ''हां चलो चलते हैं। हमने नाश्ता भी नहीं किया। चलो अब सब घर में ही होगा। कहकर हम तीनों घर को चल दिए पड़े।

- भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान,
इज्जतनगर, बरेली (उ.प्र.)
मोबाइल-9458130723

अंक पहेली

नीचे दी गई पहेली में रिक्त स्थान पर कितनी संख्या आएगी।

7 | 2 | 1 | 8
9 | 3 | 9
12 | 12
?

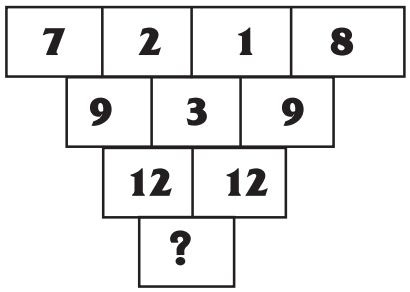

उत्तर :- ऊपर की पहली लाइन के 2 ब्लाक के अंकों को जोड़कर नीचे की लाइन में लिखना है। इस तरह अंत में 12 व 12 का योग रिक्त स्थान पर 24 लिखा जाएगा।

प्रिय देशवासियों,

आजादी की 73वीं वर्षगांठ पर, आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। इस अवसर पर मैं देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले, सभी स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों और सैन्य व अर्धसैन्य बल के शहीद जवानों को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

वर्तमान में पूरा देश, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में वैश्विक महामारी कोविड–19 से लड़ रहा है। आप सभी के सहयोग से कोविड–19 से लड़ाई में हम अवश्य जीतेंगे। एक बार पुनः आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की बहुत–बहुत बधाई।

जय हिन्द, जय उत्तराखण्ड।

त्रिवेन्द्र सिंह रावत
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

हमारा प्रयास ईमानदारी, विकास और विश्वास

ऐतिहासिक निर्णय

- मराड़ीसैंण (गैरसैंण) बनी उत्तराखण्ड की ग्रीष्मकालीन राजधानी।
- श्रद्धालुओं की सुविधाओं और चारधाम के विकास की दृष्टि से "चारधाम देवस्थानम् बोर्ड" का गठन।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य कल्याण

- कोविड–19 संक्रमण के दृष्टिगत 400 से अधिक चिकित्सकों की नियुक्ति।
- देहरादून, श्रीनगर, अल्मोड़ा, हल्द्वानी, रुद्रपुर के बाद अब हरिद्वार और पिथौरागढ़ में भी होगा मेडिकल कॉलेज।
- आशा कार्यकत्रियों तथा आशा फेसिलिटेटर को 2–2 हजार रुपये की सम्मान राशि देने का निर्णय।
- अटल आयुष्मान योजना में राज्य के सभी परिवारों को 5 लाख रूपये वार्षिक की निःशुल्क चिकित्सा सुविधा।
- आयुष्मान योजना में 39 लाख लोगों के गोल्डन कार्ड बनाए गए। अभी तक 1 लाख 87 हजार मरीजों का निःशुल्क उपचार तथा 176 करोड़ रुपये इलाज पर व्यय।
- राज्य के सरकारी कार्मिकों और पेंशनरों को भी अटल आयुष्मान योजना में किया गया शामिल। देशभर के 22 हजार से अधिक अस्पताल इलाज हेतु सूचीबद्ध।

समाज कल्याण

- वृद्धावस्था, विधवा और दिव्यांगजन पेंशन की राशि तथा ग्राम प्रहरियों के मानदेय में की गई बढ़ोतरी।
- आंगनबाड़ी कार्यकत्री, आंगनबाड़ी सहायिका, मिनी आंगनबाड़ी कार्यकत्री के मानदेय में बढोतरी।
- प्रदेश के लोक कलाकारों का मानदेय किया दोगुना।

किसान कल्याण

- किसानों को तीन लाख रुपये और महिला स्वयं सहायता समूह को पांच लाख रुपये तक का ऋण बिना ब्याज के उपलब्ध।
- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की छठी किस्त की राशि जारी। प्रदेश के 8 लाख से अधिक किसान हुए लाभान्वित।
- जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए 3900 जैविक क्लस्टरों में काम शुरू।

खाद्य एवं आपूर्ति

- प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अंतर्गत उत्तराखण्ड राज्य के लगभग 62 लाख व्यक्तियों को प्रतिमाह प्रति व्यक्ति 5 किलो चावल और प्रति परिवार 1 किलो दाल निःशुल्क।
- मुख्यमंत्री दाल पोषित योजना के अर्न्तगत 24 लाख राशन कार्डधारकों को 02 किलो दाल प्रति माह सस्ती दरों पर उपलब्ध कराई जा रही है।

रिवर्स पलायन, स्वरोजगार

- 6 लाख से अधिक लौटे प्रवासियों एवं प्रदेश के युवाओं के लिए मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना प्रारम्भ।
- इन्वेस्टर्स समिट के बाद अभी तक 24 हजार करोड रुपये से अधिक के निवेश की ग्राउंडिंग।

डबल इंजन की सौगात

- केंद्र सरकार के सहयोग से एक लाख करोड़ रुपये की विभिन्न परियोजनाएं प्रदेश के लिए स्वीकृत।
- ऋषिकेश–कर्णप्रयाग रेल परियोजना, चारधाम ऑल वेदर रोड परियोजना, भारतमाला परियोजना, केदारनाथ धाम पुनर्निर्माण, नमामि गंगे तथा देहरादून स्मार्ट सिटी परियोजना का कार्य निर्माणाधीन।
- जमरानी बांध बहुद्देशीय परियोजना एवं टिहरी झील परियोजना स्वीकृत।
- एनआईटी के लिए 910 करोड़ रुपये की स्वीकृति।

अन्य महत्वपूर्ण निर्णय

- घोषणा पत्र के 85 फीसदी वायदे पूरे।
- हर घर को नल से जल योजना में केवल 1 रुपये में पानी का कनेक्शन।
- 14 साल के लम्बे इंतजार के बाद टिहरी को प्रतापनगर से सीधे जोड़ने के लिए डोबराचांठी पुल बनकर तैयार।
- राज्य में 27 हेलीपोर्ट विकसित किये जाने का निर्णय।
- दुर्घटना राहत राशि को मृत्यु पर 50 हजार से बढ़ाकर 1 लाख, गम्भीर घायल होने पर 20 हजार से बढ़ाकर 40 हजार और साधारण घायल होने पर 5 हजार से बढ़ाकर 10 हजार रुपये।
- शहीद सैनिकों के परिवार के एक सदस्य को उसकी योग्यता के अनुसार सरकारी नौकरी तथा विशिष्ट सेवा पदक से अलंकृत सैनिकों को अनुमन्य राशि में कई गुना बढ़ोतरी।
- ग्रोथ सेन्टर एवं 13 डिस्ट्रिक्ट 13 न्यू डेस्टीनेशन का कार्य गतिमान।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी | www.uttarainformation.gov.in UttarakhandDIPR DIPR_UK
महिला हेल्पलाइन नं. 1090 | किसान कॉल सेंटर नं. 1551 | सी.एम.हेल्पलाइन नं. 1905 | चाइल्ड हेल्पलाइन नं. 1098 | आयुष्मान उत्तराखण्ड हेल्पलाइन नं. 104 | आपदा कॉल सेन्टर नं. 1070

कहानी:

देशप्रेम

● सीमा जैन 'भारत'

डोला शाम के समय अपने दादाजी के साथ बगीचे में जा रही थी। उसके दादाजी सेना में कर्नल थे। डोला अपने दादाजी से खूब बातें करती थी। दादाजी भी उसे हर बात बड़े प्यार से समझाते थे।

जब वे दोनों रास्ते पर चल रहे थे तो कुछ लोग बातें कर रहे थे। डोला ने उनकी बात सुन ली। वे कह रहे थे कि ''अब पंद्रह अगस्त बस एक दिखावा बन कर रह गया है। सुबह झंडा फहराया, लड्डू बांटे और जिम्मेदारी खतम। क्या यही मतलब रह गया है इस दिन का?''

आज सुबह डोला भी तो अपने स्कूल में पंद्रह अगस्त मना कर आई थी। वह अभी तीसरी कक्षा में पढ़ती है।

''दादाजी! ये लोग ऐसा क्यों कह रहे थे? हमने भी तो आज स्कूल में यही सब किया था। इसमें क्या दिखावा है? यह तो देश प्रेम है।'' डोला की बात खत्म होते दोनों बगीचे तक पहुंच गए।

बगीचे के दरवाजे पर लिखा था, ''अंदर या बाहर जाते समय दरवाजा बंद करें।'' दादाजी ने खुले दरवाजे को अंदर से बंद करते हुए कहा, ''उनकी बात एक तरह से सही है बेटा।''

''पंद्रह अगस्त की बात हम बाद में समझेंगे। अभी जिम्मेदारी की बात करें तो यह दरवाजा बंद करना सबकी जिम्मेदारी है। पर सब ऐसा करते हैं क्या?'' दादाजी ने पूछा।

''नहीं दादाजी! माली काका परेशान हो जाते हैं। पर उनकी बात कोई नहीं मानता है। आज आपने ही दरवाजा बंद किया।'' डोला ने उत्तर दिया। इतने में सामने से माली काका आते हुए दिखे।

''सलाम साहब!'' उन्होंने दादाजी से कहा।

''सलाम! आज तो छुट्टी का दिन है। आज काम पर क्यों आ गए?'' दादाजी ने पूछा।

''अब घर में बैठा भी क्या करता साहब! इन पेड़-पौधों से प्रेम हो गया है। कुछ नई कलम भी लगाई थी तो उनको भी देखना था। आपने ही तो लाकर दी थी।'' माली काका ने कहा।

''कुछ लोग हैं कि काम के समय भी छुट्टी मना लेते हैं और एक आप हैं कि छुट्टी के दिन भी काम करते हैं।'' दादाजी ने हंसते हुए कहा।

''साहब! सब आपसे ही तो सीखा है।'' कहकर माली काका ने एक बार फिर हाथ जोड़ लिए। दादाजी मुस्कुराते हुए डोला के साथ आगे बढ़ गए। दादाजी ने उससे कहा, ''चलो! तुम झूले झूल लो। मैं तब तक वाक कर लेता हूं।''

''नहीं दादाजी! आज झूला बाद में झूलेंगे। पहले आप मेरी बात का जवाब दीजिए।''

''अरे! तुम अभी तक सवाल को भूली नहीं।''

''कैसे भूल जाती? आपने ही तो कहा था कि अंदर जाकर जवाब देंगे।''

''ठीक है, तो फिर चलो वहां बैठते हैं फिर मैं तुमको बताऊंगा।''

''स्वतंत्रता दिवस का मतलब क्या है? आज का दिन खुशी का जश्न मनाने का दिन है। क्या आज के दिन उत्सव मना लेने से हमारी जिम्मेदारी पूरी हो जाती है, तो इसका जवाब है बेटा कि यह एक दिन का नहीं हर दिन का काम है। और इसका मतलब है, हम जहां हैं। जिस पद पर काम करते हैं। उस काम को पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करें। यदि सबसे छोटी बात की जाए तो माली काका को देखो। आज छुट्टी के दिन भी पौधों को देखने आए। यही काम के प्रति प्रेम और देश प्रेम भी है। अब यदि बड़े लोगों की बात की जाए तो एक डॉक्टर या एक टीचर को अपना काम पूरी ईमानदारी से करना चाहिए।''

''हम तो कोई काम नहीं करते हैं दादाजी! फिर हम कैसे अपनी जिम्मेदारी दिखा सकते हैं?'' डोला ने उत्सुकता से पूछा।

''तुम्हारी भी जिम्मेदारी है। सफाई का ध्यान रखना, कहीं गंदगी ना फैलाना, कहीं कचरा दिखे तो उठा देना। यह सारी जिम्मेदारी तो हर नागरिक की है। वह कोई नौकरी या कोई काम करे या ना करे।'' दादाजी को खुशी हुई कि डोला को अपनी जिम्मेदारी की समझ है। ''चलो! अब तुम झूले पर जाओ। मैं वाक करता हूं। 'कहकर दादाजी आगे बढ़े । आज घर को जाते समय गार्डन का गेट डोला ने बंद किया। जिसे देखकर दादाजी मुस्कुरा उठे। घर जाते समय रास्ते में पड़ा हुआ

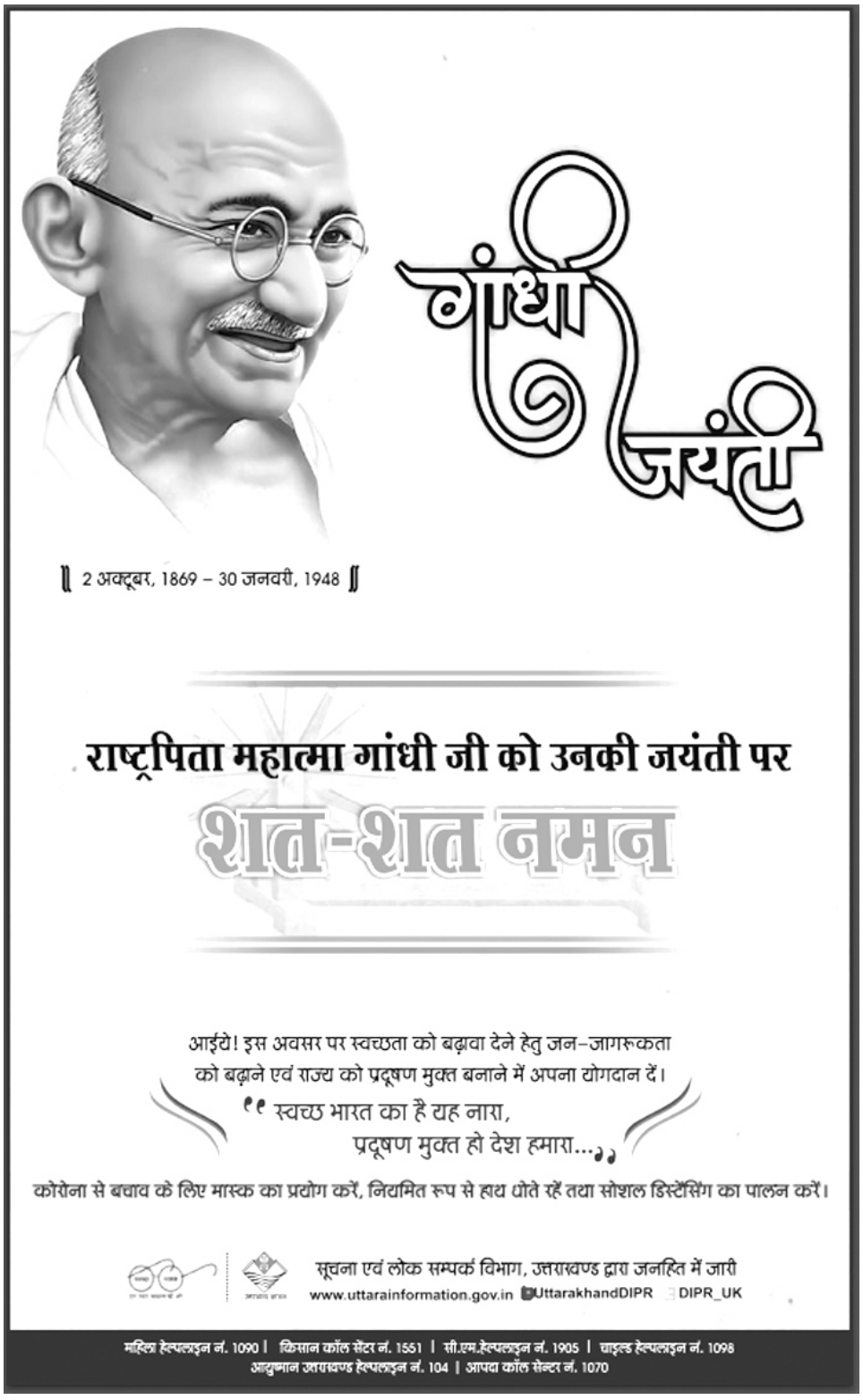

ओ गौरैया

● भगवतीप्रसाद गौतम

आंगन में चिन-चिन गा जाना,
ओ गौरैया, फिर आ जाना।
गई किधर, गायब तू कब से?
अता-पता भी पूछें किससे?
क्यों रूठी? यह बतला जाना,
ओ गौरैया, फिर आ जाना।
बस्ती तुझको भूल न पाए,
संग-संग दुनिया खैर मनाए।
लाड़ ललन पर बरसा जाना,
ओ गौरैया, फिर आ जाना।
है उदास हर तरु, हर डाली,
गई फूल-बगिया की लाली।
चहक-चहक घर पर छा जाना,
ओ गौरैया, फिर आ जाना।
वह सब करना जो मन माने,
चुगना खूब अन्न के दाने।
मेरी रोटी भी खा जाना,
ओ गौरैया, फिर आ जाना।

- 1-त-8 अंजलि, दादाबाड़ी, कोटा (राज)
मोबाइल - 9461182571

तिलक

● डॉ. हेमंतकुमार चावड़ा

विजय तिलक मां, मुझे लगाओ,
मैं भी लड़ने जाऊंगा।
सीमा पर जो शत्रु खड़े हैं,
उनको मार भगाऊंगा।
वीर सिपाही मैं कहलाऊं,
दो ऐसा आशीष मुझे।
देश भक्ति से बढ़ कर अब क्या,
हो सकती बक्शीष मुझे।

- सत्तीगुड़ी चौक, रायगढ़ (छत्तीसगढ़)
मोबाइल-9300772458

तिरंगा डोला ने उठा लिया। यह देखकर दादाजी ने डोला से कहा, ''मेरे बच्चे! इस सबका नाम ही देश प्रेम है।''

''दादाजी ! मैं समझ गई। यह हर दिन का काम है।'' कहकर उसने दादाजी का हाथ पकड़ लिया।

- 201 संगम अपार्टमेंट, माधव नगर, विजयानगर,ग्वालियर, म.प्र.
मोबाइल- 8817711033

संवाद :

बोलो देवीदा

• देवेंद्र मेवाड़ी

विज्ञान व वैज्ञानिक सोच को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत बच्चों के प्रिय लेखक आदरणीय देवेंद्र मेवाड़ी जी ने बालप्रहरी के बच्चों द्वारा पूछे गए सवालों का जबाब हर अंक में देने की सहमति प्रदान की है। आप भी कोई सवाल पूछ सकते हैं। आपका उत्तर अगले अंके में आपके नाम/प्रश्न के साथ प्रकाशित किया जाएगा। आदरणीय मेवाड़ी जी का पता व फोन अंत में दिया है।आप उनसे सीधे भी संपर्क कर सकते हैं।

प्रश्नः देवीदा! गायें लाल, भूरी, सफेद, काली ही क्यों होती हैं? उनमें हरा, पीला, नीला कलर क्यों नहीं होता?

(अमित, उत्तरकाशी)

उत्तरः वैसे ही अमित! जैसे हमारा रंग हरा या नीला नहीं होता। असल में गाय हों या आदमी, सभी का रंग उनके जीन तय करते हैं। तुम कहोगे, ये जीन क्या हैं? हम जैसे हैं, जो हैं, यह सब हमारे जीन तय करते हैं। और, ये जीन हमें अपने माता-पिता से मिलते हैं। माता-पिता को उनके माता-पिता से मिलते हैं। इस तरह पुश्त-दर-पुश्त हम क्या और कैसे बनेंगे? इसकी जानकारी माता-पिता से उनकी संतानों में पहुंचती रहती है। यों समझ लो कि यह जानकारी जीनों की रासायनिक भाषा में लिखी रहती है। इसका मतलब तो यह हुआ कि हम एक किताब हैं! हां हैं, हम जीनों की भाषा में लिखी हुई पूरी किताब हैं। वैज्ञानिकों ने अब इस किताब को पढ़ लिया है और पता लगा लिया है कि किस जीन के कारण क्या होता है। हमारे बाल काले होंगे या भूरे, यह जीन ने ही तय किया। इसी तरह हमारे शरीर में रंग भरने वाला कलर होता है जिसे पिगमेंट या रंग द्रव्य कहते हैं। हमारे शरीर को मैलेनिन नामक पिगमेंट रंगता है। वह ज्यादा है तो हम काले होते हैं और अगर बहुत कम है तो बहुत गोरे हो जाते हैं।

आदमियों की बात इसलिए बता रहा हूं क्योंकि गायों में भी जीनों से ही उनका रंग तय होता है। मुख्य रूप से गायों में तीन बेसिक रंग होते हैं- काला, लाल और सफेद। उनका यह रंग उनके दो जीन तय करते हैं। इन्हीं तीन रंगों से बांकी शेड तैयार होते हैं। इसलिए गायें स्लेटी, भूरी और धब्बेदार भी होती हैं। वे हरी या नीली इसलिए नहीं होती हैं क्योंकि प्रकृति ने गायों के शरीर पर हरा या नीला रंग भरने वाले जीन बनाए ही नहीं।

अच्छा, एक बात और क्या तुम जानते हो कि गाय या बैल हमारे चारों ओर की दुनिया को कुछ अलग रंगों में देखती हैं? असल में हमारी आंखों में रंगों को पहचानने वाले तीन रंग-कोन होते हैं जबकि गायों और बैलों की आंखों में दो ही कोन होते हैं। इसलिए लाल हो या हरा रंग, उन्हें वह काला या स्लेटी दिखाई देता है। है ना आश्चर्य की बात! तुमने बुल फाइटिंग के बारे में पढ़ा होगा। यह स्पेन का प्रसिद्ध खेल है। इसमें खिलाड़ी यानी मेटाडोर, सांड को लाल कपड़ा दिखाता रहता है। उसे देखकर सांड बिफर जाता है और गुस्से में मेटाडोर पर आक्रमण करता है। मेटाडोर खुद को बचाता है। अब मजेदार बात यह है कि हमें वह कपड़ा लाल दिखाई देता है जबकि सांड को काला! वह तो केवल उस कपड़े के हिलने-डुलने के कारण मेटाडोर पर झपटता है। तो अमित, यह रही गायों के रंग और उनके रंग देखने की रंग-रंगीली बात।

प्रश्नः यह भी बताइए कि चिड़ियां अलग-अलग रंग की क्यों होती हैं?

(अमित, उत्तरकाशी)

उत्तरः चिड़ियों में अलग-अलग रंग पिगमेंट यानी रंगद्रव्य और उनके परों की खास वनावट के कारण होते हैं। उनके जीन तो उनका रंग तय करते ही हैं लेकिन कुछ चिड़ियों में उनके भोजन से भी रंग मिल जाते हैं। अपनी किताब में लंबी, पतली टांगों वाले फ्लेमिंगो यानी हंसावर पक्षियों का चित्र देखना। वे सुंदर गुलाबी रंग के दिखाई देते हैं। इसका कारण यह है कि वे समुद्री काई और कवच वाले केकड़े वगैरह जीवों को खाते हैं। इस भोजन से उनमें गुलाबी रंग आ जाता है।

अब रही बात पंखों की बनावट की। असल में चिड़ियों के कई तरह के पंख होते हैं, मुलायम भी और कड़े भी। पंखों की अनोखी बुनावट होती है। वे जिप की तरह खुल भी जाते हैं और बंद भी हो जाते हैं। अब होता यह है कि जब सूर्य का प्रकाश उन पर पड़ता है तो वह पंखों से टकरा कर हमारी आंखों तक पहुंचता है। वायुमंडल में धूल वगैरह के बारीक कण होते हैं जिनसे टकरा कर सूर्य का सतरंगी प्रकाश बिखर जाता है। तब उसकी सात रश्मियों में से जिस रंग की रश्मियां हमारी आंखों में पहुंचती हैं, वह चिड़िया हमें उस रंग की दिखाई देती है। कभी फूलों का रस चूसती सनबर्ड चिड़िया को देखना। सूर्य के प्रकाश में कभी वह गहरी नीली तो कभी स्लेटी और कभी चमकते स्टील की तरह दिखाई देती है। यह प्रकाश के बिखरने के कारण होता है। और हां, चिड़ियों की आंखों में रंग पहचानने के चार कोन होते हैं। इसलिए वे हमारे चारों ओर की रंगीन दुनिया को और भी अधिक रंगों में देख लेती हैं। हम केवल सात रंग देख पाते हैं जबकि चिड़ियां अल्ट्रा वायलेट प्रभाव को भी देख लेती हैं।

प्रश्न : साबुन से मिर्ची क्यों लगती है?

(नारायण, चमियारी, उत्तराखंड)

देवेंद्र मेवाड़ी : नारायण! तुमने अपनी साइंस की किताब में खार यानी एल्कली और अम्ल यानी एसिड के बारे में पढ़ा होगा। अगर किसी चीज में क्षार ज्यादा है तो उसे क्षारीय कहते हैं। अगर अम्ल ज्यादा है तो उसे अम्लीय कहते हैं। इन दो गुणों का पता लगाते हैं पीएच पैमाने से। यह पैमाना 0 से 14 तक होता है। अब ये समझ लो कि अगर किसी चीज का पीएच 7 है

तो हम कह सकते हैं कि वह न क्षारीय है और न अम्लीय। यानी वह उदासीन या न्यूट्रल है। तुम सोच रहे होगे साबुन की मिर्ची से इसका क्या मतलब? मलतब है दोस्त, क्योंकि साबुन रसायनों से बना है। जब इसका घोल नहाते समय आंख में चला जाता है तो मिर्ची लगती है। आंख के भीतर पीएच 7 यानी उदासीन होता है जबकि साबुन के घोल का पीएच क्षारीय होने के कारण 7 से अधिक होता है। इससे आंख में जलन मचने लगती है क्योंकि आंख अपने आप को बचाना चाहती है। इसलिए नहाते समय सदा ध्यान रखना कि आंख में साबुन का घोल न जाए। अगर चला ही जाए तो पानी छपछपा कर आंखों को धो लें। हां एक बात और, बेबी सोप में इन रसायनों की मात्रा काफी कम होती है।

प्रश्न: हमारे यहां कद्दू की बेल में बहुत सुंदर नारंगी-पीले फूल आ रहे हैं। मैंने नजदीक जाकर देखा तो उनमें से कुछ फूलों के तले पर हरी गोली हैं लेकिन कुछ फूलों के नीचे गोली नहीं हैं? ऐसा क्यों देवीदा?

(हर्षिता, हल्द्वानी)

उत्तर : ऐसा इसलिए हर्षिता! क्योंकि कद्दू में दो तरह के फूल आते हैं- नर फूल और मादा फूल। ये पापा और मम्मी फूल हैं। मम्मी फूल के तले में गोली होती है जो बाद में बड़ा-सा, गोल कद्दू बन जाती है। नर फूल की तली में गोली नहीं होती है। असल में होता यह है हर्षिता कि कद्दू की बेल में पहले नर फूल निकलते हैं। उनके भीतर पुंकेसर होते हैं जिनमें पराग बनता है। नर फूल मधुमक्खियों और अन्य कीड़ों को आकर्षित करते हैं जो उनके समीप आएं और उनके हाथ-पैरों तथा मुंह में पराग लग जाए। वे मधुमक्खियां और कीड़े जब मादा फूलों के भीतर जाते हैं तो वहां स्त्रीकेसर में वह पराग लग जाता है। मतलब, मधुमक्खियां और कीड़े कद्दू के फूलों का ब्याह रचा देते हैं। बस उसके बाद मादा फूल गिर जाते हैं और कद्दू बनने लगता है। कद्दू की बेल में नर फूल पहले खिलते हैं। आम तौर पर मादा फूल दस-बारह दिन बाद खिलते हैं। अब जरा फिर जाकर कद्दू के फूलों को गौर से देखना, ठीक है।

- सी-22, शिव भोले अपार्टमेंट्स, प्लाट नं. 20, सैक्टर 7, द्वारका फेज-1, नई दिल्ली- 110075, मोबाइल- 9818346064

राष्ट्रीय धरोहर : हाथी

● कृपालसिंह शीला

जमीन में विचरण करने वाले प्राणियों में हाथी संसार का सबसे बड़ा जीव है। हाथी की मुख्यतया दो प्रजातियां मानी जाती हैं। भारतीय हाथी और अफ्रीकी हाथी। भारतीय हाथी भारत के अतिरिक्त श्रीलंका, म्यांमार, चीन, थाईलेंड आदि देशों में मिलता है। जबकि अफ्रीकी हाथी अफ्रीका के अधिकांश भागों में पाया जाता है। हाथी जंगल में समूह में रहते हैं। हाथी की उम्र 100 वर्ष से अधिक होती है। हाथी दुनिया का सबसे बलशाली जीव है। परंतु यदि इसकी सूंड में चीटी घुस जाए तो यह मरने के कगार तक पहुंच जाता है।

हाथी शाकाहारी जीव होता है। इसका मुख्य भोजन बांस की पत्तियां, वृक्षों के पत्ते तथा अन्य वनस्पतियां हैं। यह एक दिन में 250 किलोग्राम तक भोजन कर सकता है। एक दिन में यह लगभग 100 लीटर पानी पी जाता है।

हाथी की सूंड इसके हाथ का काम करती है। इससे यह जमीन में पड़े छोटे से दाने को भी बड़ी आसानी से उठा सकता है। हाथी का वजन लगभग 8 या 9 टन तक होता है। इतना भारी भरकम होने के बावजूद यह एक घंटे में 25 किलोमीटर तक दौड़ सकता है। इसकी ऊंचाई लगभग ढाई से तीन मीटर तक होती है। हाथी दांत बहुत महंगे दाम पर बिकते हैं । इस कारण हाथियों का शिकार अवैध रूप से होता है। हाथियों की प्रजाति को संरक्षित करने के लिए भारत में राष्ट्रीय वन्य जीव बोर्ड के प्रस्ताव पर भारत सरकार ने 15 अक्टूबर, 2010 को हाथी को राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया। झारखंड, केरल तथा कर्नाटक सरकार ने हाथी को राज्य का राज्य पशु घोषित किया है।

-सरपट्टा, बासोट, अल्मोड़ा

कार्यालय जिला समाज कल्याण अधिकारी अल्मोड़ा

समाज कल्याण विभाग, अल्मोड़ा की ओर से सभी प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

समाज कल्याण विभाग द्वारा वृद्धावस्था, विधवा, किसान एवं दिव्यांग पैंशनर्स , जिनके द्वारा अपनी पेंशन का भुगतान पोस्ट आफिस के नान सी.बी.एस.खातों के माध्यम से प्राप्त किया जा रहा है। उनके खातों को इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक के माध्यम से सी.बी.एस.खातों में परिवर्तित किया जा रहा है। उक्त के क्रम में सभी पेंशन धारकों, जिनके पोस्ट आफिसों में खाते संचालित हैं। उन्हें उक्त विज्ञप्ति के माध्यम से सूचित किया जाता है कि अपना खाता इंडियन पोस्ट पेमेंट बैंक के सी.बी.एस. खाते में परिवर्तित करने हेतु अपना मोबाइल नंबर, डाकघर खाते की पासबुक एवं आधार कार्ड की छाया प्रति के साथ अपने निकटतम पोस्ट आफिस में संपर्क कर लें।

(राजीव नयन)

जिला समाज कल्याण अधिकारी, अल्मोड़ा

कहानी:

दशहरा का उपहार

● ललित राठौर

मुकुल मम्मी से नए कपड़े लेने की जिद्द कर रहा था। मम्मी ने उससे कहा, ''ठीक है, दशहरा आने दो। तुम्हारे लिए नए कपड़े जरुर खरीदूंगी। वैसे भी अभी पिछले महीने ही तो खरीदे हैं।'' पर मुकुल कहां मानता। उसे तो बस आज ही नए कपड़े खरीदने का बुखार चढ़ा हुआ था। हर साल होली, राखी, दशहरा और दिवाली पर मुकुल के लिए नए कपड़े ख़रीदे जाते थे। इस बार उसकी डिमांड दशहरा से पहले ही आ रही थी। दरअसल उसका दोस्त निक्कू ब्लू कलर की नई जींस और ग्रे कलर की टी शर्ट पहनकर स्कूल आया था। उसके कपड़े बिल्कुल न्यू फैशन के थे। टी-शर्ट भी न्यू कट में थी। निक्कू के कपड़ों को देखकर मुकुल ने भी मन बना लिया था कि वह भी ऐसे ही कपड़े खरीदेगा। इसीलिए वह मम्मी से जिद्द करने लगा था।

रविवार के दिन मम्मी मुकुल को लेकर बाजार गई। उसके लिए नए कपड़े जो लेने थे। बाजार जाते समय मुकुल की नजर हाथ में कूड़े का थैला उठाए दो बच्चों पर पड़ी। उनके कपड़े जगह-जगह से फटे हुए थे। उनकी पैंट और शर्ट बहुत पुरानी लग रही थी। मुकुल ने मम्मी से पूछा, ''मम्मी! इन बच्चों ने इतने पुराने कपड़े क्यों पहने हुए हैं। देखो न उनके कपड़े जगह-जगह से फटे हैं।''

''बेटा! ये लोग बहुत गरीब हैं। इनके मां-बाप के पास इतना रुपया नहीं है कि वे इनके लिए नए कपड़े खरीद सकें। इन्हें बड़ी मुश्किल से दो समय की रोटी मिल पाती है।'' मम्मी ने समझाते हुए कहा।

''ओह ! अच्छा,क्या ये त्यौहारों में भी नए कपड़े नहीं खरीदते।'' मुकुल ने पूछा।

''इनके लिए हर दिन एक सामान है। इनको जिस दिन भरपेट भोजन मिल जाए, वही इनके लिए त्यौहार का दिन है।'' मम्मी ने कहा।

मुकुल सोचने लगा कि मेरी अलमारी कपड़ों से भरी पड़ी है। इसके बावजूद भी मैं मम्मी से कपड़ों की जिद्द लगाए बैठा हूं। इधर ये लोग कैसा जीवन जी रहे हैं। मैं अब अपने लिए नए कपड़े नहीं खरीदूंगा। उसने मम्मी की कान में कहा, ''मां! जिन रुपयों से तुम मेरे लिए कपड़े लेने वाली हो, क्या वे रुपए इनके लिए खर्च नहीं किए जा सकते? अगर उसमें कुछ कम पड़ेंगे तो मैं अपना गुल्लक भी तोड़ दूंगा। मैं चाहता हूं कि हम इन दोनों के लिए नए कपड़े खरीदें। ये हमारा इनके लिए दशहरा का उपहार होगा।''

मुकुल की बातों को सुनकर मम्मी बहुत खुश हुई। ''ठीक है, जैसा तुम कह रहे हो वैसा ही होगा। तुम्हें गुल्लक तोड़ने को जरुरत नहीं है। मैं ही आज इनके लिए कपड़े खरीद लेती हूं।'' मम्मी की बातों को सुनकर मुकुल खुशी से उछल पड़ा। मम्मी ने पहली बार किसी दूसरे के लिए मुकुल को इतना खुश होते हुए देखा था।

''मम्मी! हम इस बार गरीबी का रावण जलाएंगे।'' मुकुल ने मम्मी से कहा।

''हां बेटा जरुर। गरीबी अभिशाप है। इससे मुक्ति के लिए सबको मिलकर कदम आगे बढाने होंगे।'' मम्मी ने कहा। मुकुल और मम्मी दशहरा का उपहार लेने बाजार की ओर चल दिए।

-मुवानी, पिथौरागढ़, उत्तराखंड, मोबाइल -7351467702

खोजबीन

सामने दिए गए शब्दों में कम से कम 20 पारिवारिक रिश्ते छिपे हैं। (जैसे-मामा) उन्हें ढूंढिए। एक शब्द को दोबारा भी प्रयोग किया जा सकता है।

मा चा दा भा ना जी भां दी
बू ब जा ता ची न नी
मी जे ई ठा पि ठ हि भी

कहानी :

धन्यवाद राजू

● गोविंद शर्मा

अभी मैं घर से थोड़ा सा दूर था कि मेरी गली का निवासी मित्र राजू मिल गया। उसके पास साइकिल थी। बोला, " बैठो, तुमसे एक बात भी करनी है मुझे बड़ा मजा आएगा।" हमारी गली आ गई, पर वह साईकिल को आगे ले गया। मैंने कहा, "कहां खो गए? अपनी गली तो निकल गई।" वह बोला, "गली की दूसरी तरफ से आएंगे।"

वह मुस्कुराते हुए बोला, " इधर से जाने में एक खतरा है। मेरी बात पर हंसना मत, न ही उपदेश झाड़ना। मैं जब भी किसी को पंक्चर गाड़ी, बाइक या साइकिल घसीट कर ले जाते देखता हूं तो मुझे बहुत मजा आता है। इसी मजे के लिए आज मैंने अपनी गली के इधर वाले मुहाने के पास कुछ कीलें, शीशे के कुछ टुकड़े बिखेर दिए थे। मजा नहीं देख सका, क्योंकि किसी काम से जाना पड़ा। अपनी साइकिल को बचाने के लिए मैंने यह लंबा चक्कर लगाया है।

मैं कुछ कहने को हुआ तो मुझे रोकते हुए बोला, ''न, न यह मत कहना कि यह क्या बेवकूफी है। किसी को बताना भी मत, वरना खाम खां बेइज्जती हो जाएगी,चल जल्दी चलते हैं। शायद अब भी कोई घसीटाराम दिख जाए। वह हंसने लगा।

दोस्त! मुझे कुछ बोलने दो। फिर खुल कर हंसना। कुछ देर पहले मैं वहां गया था। सामने से आ रहा एक बाइक वहां पंक्चर हो गया था। उसी की रोशनी में कांच के टुकड़े चमकते मुझे दिखाई दिए थे। मैंने भी मजा लिया। पास के घर से झाड़ू. मांग कर उन्हें साफ करने लगा। देखते ही देखते दो तीन घरों से लोग झाड़ू लेकर बाहर आ गए। बाइक वाला भी हमारे साथ जुट गया। कीलें, कांच के टुकड़े उसी समय कूड़ेदान में पहुंच गए थे। मेरे दोस्त की शक्ल बता रही थी कि पहले कभी उसका मजा ऐसा किरकिरा नहीं हुआ था।

रात में उसने अपने घर से फोन किया। माना कि मेरा मजा किरकिरा हो गया। तुम्हें तो आज खूब आनंद आ रहा होगा। मेरे घर में भी सब तुम्हारी तारीफ कर रहे हैं। कह रहे हैं कि बीनू ने बहुत अच्छा काम किया। आज तो तुम हीरो हो।

हां, राजू ! कई जगह से फोन आए हैं, सब कह रहे हैं तुमने अच्छा किया। अभी तक तुम्हारे मुंह से प्रशंसा का एक शब्द भी नहीं सुना है।

क्यों करूं मैं तुम्हारी प्रशंसा? क्या तुमने इसलिए किया था यह काम कि तुम्हारी तारीफ हो और मेरा मजा किरकिरा? ऐसे काम तो तुम करते ही हो। देखना, तुमसे तारीफ लेने के लिए तुम्हारी तरह मैं भी कुछ करूंगा,करोगे न मेरी तारीफ? थैंक्यू राजू, सबसे बड़ी तारीफ तो तुमने ही की है मेरी, थैंक्यू। मेरे मुंह से यही निकला।

- ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया, हनुमानगढ़ (राजस्थान)
मोबाइल-9414482280

किताब

● डॉ. जयजयराम आनंद

दादी जागी बिल्ली भागी,
गरम गरम चाय दादा मांगी।
पीकर थामी हाथ किताब
दादा जी के हाथ किताब।
खाना खाया चुन्ना मुन्ना,
मम्मी पापा दादा दादी।
दादा थामे हाथ किताब।
सबका बस्ता अपना अपना,
हमने सीखा सबने सीखा।
सोहे सबके हाथ किताब।

- ई-7/70अशोका सोसाइटी,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल, म.प्र.
मोबाइल - 8517912504

सर्दी

● सुरेश सौरभ

सर्दी आई है
गरम कपड़े लाई है।
बदली छाई है,
धूप नहीं आई है।
जाड़ा हर जाई है,
ढूंढे रजाई है।
सूरज चाचा आ जाओ,
आकर तुम सर्दी भगाओ।

- हाथीपुर, उत्तरी
लखीमपुर,
खीरी, उ.प्र.

खरबूजा

● गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

डॉक्टर अंकल बड़े अच्छे हैं,
दुख दूर कर देते हैं।
छाती पर आला चिपकाकर,
सारे रोग सुन लेते हैं।
अम्मा मैं भी डॉक्टर बनकर,
सब दुख दूर कर पाऊंगा।
सुबह-शाम को घर-घर जाकर,
खुशिया बिखेर आऊंगा।

- 117 आदिलनगर,
विकासनगर,लखनऊ, उ.प्र.
मोबाइल- 9956087585

कहानी:

टॉफी

• प्रभा पंत

गीता और नीता को टॉफ़ी के लिए झगड़ते देखकर, उनके पड़ोसी उमेश ने गीता और नीता का हाथ पकड़ा और बोले, "चलो, मेरे साथ मैं तुम्हें टॉफ़ी दिलवाऊंगा।" उमेश नाम का वह व्यक्ति उनके मकान में किराए पर रहता था। वह जब-तब बच्चियों को खाने-पीने की कोई-न-कोई चीज़ दिलवाता रहता था। नीता ने उसका हाथ झटक दिया, लेकिन गीता बिना ना-नुकुर किए उसके साथ चली गई। मुहल्ले की दुकान में पहुंच कर उमेश ने एक रुपए की दो टॉफी लीं और गीता की हथेली में रखकर, उसकी मुट्ठी बंद करते हुए कहा, "अब झगड़ना नहीं।" जब भी कुछ खाने का मन करे मुझसे कहना।" गीता ने मुस्कुराते हुए गरदन हिला कर हामी भरी और दौड़ती हुई अपने घर चली गई।

गीता कक्षा पांच में पढ़ती थी और नीता तीन में। गीता बहुत सीधी-सरल थी, किंतु नीता अपनी उम्र के बच्चों की तुलना में अधिक बुद्धिमान और समझदार थी। नीता कुछ दिनों से देख रही थी कि उस दिन के बाद उसकी दीदी, अंकल को देखते ही दौड़ती हुई उनके पास पहुंच जाती है। एक दिन जब वह दोनों कमरे में बैठी पढ़ रही थीं तो नीता ने देखा उसकी दीदी ने अपने बस्ते में से कुछ निकाला और अपने मुंह में डाल लिया। नीता झट से बोली, "दीदी! आप क्या खा रही हो, मुझे भी दो।" गीता सकपका गई, क्योंकि आज पहली बार उसकी चोरी पकड़ी गई थी। जब कि वह तो हर दिन इसी तरह छिप-छिपकर खाया करती थी। गीता बोली, "मैंने देखा था, आपने अपने मुंह में कुछ डाला, आऽऽऽ करो, मुझे आपका मुंह देखना है।"

"नहीं! मैं नहीं दिखाऊंगी।" कह कर गीता ने अपनी बहन को धक्का दे कर दूर कर दिया। नीता को अपनी दीदी की इस हरकत पर बहुत गुस्सा आया। उसने अपनी किताब बंद की और उठती हुई बोली, ''अब देखना, मैं मम्मा से आपकी शिकायत करुंगी। मुझे सब पता है आपको अंकल ने चीज दिलाई होगी।"

गीता ने नीता का हाथ पकड़ कर उसे रोकते हुए कहा, "तू मम्मी को कुछ मत बतानाले तुझे जो भी खाना है, खा ले।" यह कह कर उसने अपना स्कूल बैग नीता की ओर बढ़ा दिया। बैग के भीतर रंग-बिरंगी टॉफियां देखकर, नीता की आंखें खुली रह गई। उसने अपनी पसंद की कुछ टॉफियां निकालीं और अपनी जगह जा कर बैठ गई। उस दिन के बाद जब भी उमेश अंकल गीता को टॉफी, चॉकलेट या चिप्स जो भी देते थे, वह अपनी बहन को बिना मांगे ही दे दिया करती थी।

एक दिन की बात है। मां के मना करने पर भी जब गीता अपनी ज़िद पर अड़ी रही तो उसकी मां ने गीता का कान ऐंठते हुए कहा, "मैं देख रही हूं तू दिन-ब-दिन ज़िद्दी होती जा रही है।आज अगर तूने अपनी अलमारी में बिखरी किताबें ठीक से नहीं लगाई तो देखना।"

"नहीं लगाऊंगीजब देखो मुझे ही काम बताती रहती हैंनीता से कभी कुछ नहीं कहतीं।" गीता ने पलट कर कहा। उसके उल्टे जबाब ने आग में घी डालने जैसा काम किया। गुस्से में तिलमिला कर मां ने गीता के कोमल से गालों पर इतने तमाचे जड़े कि उंगलियों के निशान बन गए। गीता दर्द और गुस्से से चीख-चीख कर रोने लगी। गीता के रोने की आवाज़ सुनकर, उमेश अंकल से न रहा गया। वह अपने कमरे से बाहर निकल आए। उन्होंने पुचकारते हुए गीता के आंसू पोंछे और उसका हाथ पकड़कर बरामदे में रखी कुर्सी पर बैठ गए। उसे समझाते हुए बोले, "बेटा! मां से इस तरह बात नहीं करते। अब तुम बड़ी हो गई हो। तुम्हारे पापा बाहर रहते हैं। घर का सारा काम तुम्हारी मां को अकेले करना पड़ता है। तुम्हें तो अपनी मां का हाथ बंटाना चाहिए,है न?" उमेश अंकल की बातें सुनकर गीता की मां को ऐसा लगा, जैसे वह इस परिवार के सबसे बड़े शुभचिंतक हैं। उनके हृदय में अपने प्रति इतनी सहानुभूति देखकर, वह अभिभूत हो उठी। अवसर का लाभ उठाते हुए उमेश अंकल बोले, "भाभीजी! यदि आप बुरा न मानें तो मैं गीता को अपने कमरे में ले जाऊं? तब तक आपका मन भी शांत हो जाएगा।"

उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह गीता का हाथ थामकर अपने कमरे की ओर चल दिए। "मम्मा! मैं भी जाऊं?" नीता ने पूछा।

"जा।" कहकर, गीता की मां धुले कपड़ों से भरी बाल्टी उठाकर कपड़े फैलाने छत पर चली गई।

दोनों बच्चियों को अपने पलंग पर बैठाकर उमेश जी रसोई घर में गए और थोड़ी देर बाद नमकीन और बिस्कुट भरी प्लेट लाकर उनके सामने रख दी। पहले दोनों बहनें खाने में झिझक रही थीं। जब उमेश जी हंसी-मज़ाक करते हुए, स्वयं भी उठाकर खाने लगे तो बातें करते-करते सबने मिलकर प्लेट ख़ाली कर दी। कुछ देर बाद उन्होंने नीता से कहा, "बेटा! अब तुम्हें घर जाना चाहिए।तुम्हारी मम्मी घर पर अकेली उदास बैठी होंगी।"

"नहीं अंकल! मम्मी उदास नहीं बैठी हैं। वह तो कपड़े सुखाने छत पर गई हैं।" नीता झट से बोली।

"लेकिन बेटा! किसी को तो उनके पास होना चाहिए न? गीता को कुछ देर मेरे पास रहने दो। अभी आपकी मम्मी इससे नाराज़ हैं। कहीं उनका गुस्सा और बढ़ गयाऔर तुम्हारी दीदी की फिर से पिटाई हो गई तो?" उमेश जी ने जैसे-तैसे समझा-बुझा कर नीता को घर भेज दिया। उसके बाद उन्होंने गीता को अपने पास बुलाया। गीता पलंग पर से उठी और उमेश जी की कुर्सी के पास आकर खड़ी हो गई। "तेरी मां ने कितनी ज़ोर-ज़ोर से चाटे मारे हैं। इतने प्यारे से गाल मारने के लिए नहीं चूमने के लिए होते हैं।" कहकर उमेश अंकल ने गीता के गालों को चूम लिया। गीता को फिर से मां की मार याद आ गई और उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

उमेश जी की पत्नी को परलोक सिधारे दो वर्ष हो चुके थे। दो बेटियां थीं। एक अपने ससुराल में थी और दूसरी, हॉस्टल में। वह पुलिस विभाग में नौकरी किया करते थे। यह सारी बातें उन्होंने तीन-चार महीने पहले मिश्रा जी को तब बताई थीं, जब वह किराए के लिए बात करने उनके घर आए थे। मिश्रा जी ने उन्हें यह सोचकर अपने यहां किराएदार रखा था कि पुलिस वाले के रहने से मेरा घर-परिवार सुरक्षित रहेगा।"

रो मत, तू मेरे साथ चल, मैं तुझे तेरी पसंद की फ्राक, माला, चॉकलेट, टॉफी जो कहेगी दिलवा दूंगा।" अधेड़ उम्र के उमेश अंकल इस अवसर को खोना नहीं चाहते थे। जिसकी प्रतीक्षा वह न जाने कब से कर रहे थे। अब तक वे गीता के लालची स्वभाव को भली भांति जान चुके थे। उन्होंने गीता को खरीददारी का लालच दिया और उसे अपने साथ लेकर चले गए। अपने हठी और लालची स्वभाव के कारण गीता ने मां की दी हुई हर सीख भुला दी। वह एक धूर्त व्यक्ति के जाल में फंसने ही वाली थी कि तभी उसे याद आया। रक्षा बंधन पर जब बुआ घर आाई थी तो पड़ोस के भैया द्वारा दिए गए उपहार को देखकर उन्होंने कहा था, "बिटिया! किसी बाहरी व्यक्ति से न तो महंगे उपहार लेने चाहिए और न उसके साथ कभी घर से बाहर जाना चाहिए। यदि कभी कोई अंकल, टीचर या भैया तुम्हें लालच देकर अपनी गोद में बिठाएं, तुम्हें पकड़कर 'किस' करें या तुम्हारे शरीर को इस तरह सहलाएं कि तुम्हें उनका स्पर्श अच्छा न लगे तो तुम्हें कोई बहाना बनाकर अपने घर आ जाना चाहिए। और उसकी शिकायत मम्मी-पापा से ज़रूर करनी चाहिए। ताकि वह उसे जेल भेज सकें। आजकल टी.वी. और अख़बारों में ऐसे लोगों से सावधान रहने के लिए समाचार छपते रहते हैं। जो बच्चों से मीठी-मीठी बातें करके या उनकी मनपसंद चीजें दिलाने का लालच देकर उन्हें अपने साथ ले जाते हैं । उसके बाद उन्हें गुंडों को बेच देते हैं।"

बुआ की बातें याद आते ही गीता, "अंकल! मैं अभी आई। पड़ोस वाली आंटी मुझे बुला रही हैं।" कहती हुई स्वयं को उमेश अंकल के चंगुल से बचाकर भागती हुई अपने घर लौट आई । वह मां से लिपट कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। मां ने जैसे-तैसे उसे चुप कराया। उसके रोने का कारण पूछा।

डर के कारण पहले तो गीता कुछ नहीं बोली। पर मां के लाड़-दुलार से जब उसके मन में बैठा भय कुछ कम हुआ तो उसने सब कुछ सच-सच बता दिया। अपनी बेटी की बात सुनकर गीता की मां को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। साहस जुटाकर उसने पड़ोस की महिलाओं को एकत्र किया। और उन्हें पूरी बात बताई। एक अनुभवी महिला ने सलाह दी , ''हमें थाने में उमेश की रिपोर्ट करनी चाहिए ताकि उसके मन में फिर कभी किसी और बच्ची के साथ ऐसा दुष्कर्म करने का विचार भी न आ सके।'' सारी महिलाओं को उसकी राय उचित लगी। वे अपने पतियों के ऑफिस से घर लौटने की प्रतीक्षा में समय गंवाए बिना एकजुट हुई। बच्ची के साथ घर के निकट स्थित थाने पहुंचीं। उन्होंने उमेश के ख़िलाफ़ एफ.आई.आर. दर्ज़ करा दी। उस दिन गीता और नीता ही नहीं, उनके घर के आस-पास रहने वाले बच्चे भी भली भांति समझ चुके थे कि माता-पिता की मार-फटकार भले ही हमें अच्छी न लगती पर होती हमारी भलाई के लिए है।

-एम.बी.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल)
मोबाइल-9411196868

भाईचारा

● पवन पहाड़िया

हम बच्चे हैं भोले भाले,
कभी न होते दिल से काले।
हमें न आए कपट द्वेषता,
नहीं किसी से करते कुट्टी।
लड़ लेते पर वापिस राजी,
रेसिस में या होते छुट्टी।
पल में सारी बात भुलाकर,
मिलते हैं गल बाहें डाले।
कोई ऊंचा है या नीचा,
हमें हुआ कब लेना-देना।
अनवर, राम नहीं मैं खाता,
आती जब तक नहीं मैना।
हम सब का यह भाईचारा,
टलता नहीं किसी के टाले।
हमें दबना नहीं सुहाता,
नहीं सुहाती टांग खिंचाई।
जीत हार से गांठ न बांधें,
चाहते पर्वत कर दें राई।
ढल जाते हम, गुरूवर जैसा,
ठोक बजाकर हमको ढालें।

- डेह, नागौर, राजस्थान
मोबाइल- 9414864009

बस्ता बोला

● श्याम नारायण श्रीवास्तव

बस्ता बोला आज मनु से,
अरे-अरे क्या करते हो?
एक साथ इतनी पुस्तक तुम,
ले करके क्यों चलते हो?
पेट मेरा फट जाएगा,
फिर सब कुछ गिर जाएगा।
पुस्तक कापी वहीं रखो तुम,
जो आज पढ़ाया जाएगा।
मनु ने सोचा बहुत सही है,
बस्ते ने क्या बात कही है।
टाइम टेबल से अधिक किताबें,
रखना अच्छी बात नहीं है।
मेरे साथी तुम भी आओ,
इस बस्ते की बात सुनो।
पीठ पर रखा भार घटेगा,
बस्ते का सम्मान बढ़ेगा।

- जिंदल स्टील एंड पावर लि.
रायगढ़, छत्तीसगढ़
मोबाइल :
7999652646

चूहे जी

● डॉ. शशि गोयल

टुक टुक टुक टुक टुक .....,
लगता कोई चोर है।
चुपके चुपके घर में आता,
बिना मचाए शोर है।
आहट से झट छिप जाता है,
नजर नहीं वह आता है।
खाने को यदि दिख जाए,
खींच उसे ले जाता है।
सोफे आलमारी के नीचे से,
अपनी मूंछ हिलाता है।
गोल गोल सी अपनी आंखें,
कोने से चमकाता है।
घुटने के बल उसे देखने,
मुन्ना भी झुक जाता है।
डरकर मुन्ने जी से चूहा,
उछल उछल घबराता है।
चूहा उछले मुन्ना चीखे,
दोनों ही डर जाते हैं।
डर कर मुन्नेजी अम्मा की,
गोदी में छिप जाते हैं ।

-जी-9 ब्लॉक-3,सै.16बी आवास विकास
योजना, सिकंदरा, आगरा, उ.प्र.
मोबाइल - 9319943446

अविचल प्रकाशन हल्द्वानी, नैनीताल

''सावित्री'' 15-वृंदा विहार, निकट अमृत आश्रम, काठगोदाम बायपास
पो. कुसुमखेड़ा, ऊंचापुल, हल्द्वानी-263139 (नैनीताल) उत्तराखंड,
E-mail: avichalprakashan@gmail.com/drgsbatohi@gmail.com

अविचल प्रकाशन की ओर से ज्योति-पर्व दीपावली एवं आंग्ल नववर्ष 2021 की हार्दिक शुभकामनाएं

अब पूर्णतः उत्तराखंड की वाणिज्यिक राजधानी हल्द्वानी (नैनीताल) से संचालित।

हमारा उद्देश्य रचनाकारों की सुविधानुसार कम-से-कम लागत में उनकी पुस्तकों का प्रकाशन कर पाठकों तक पहुंचाना और साहित्य क्षेत्र में स्थापित करना है।

For Data Analysis & Ph.D. Thesis Work
Contact Dr. Akhil Chilwal (Statistics)
Mo. 9411883705

निदेशक : डॉ. गजेन्द्र सिंह 'बटोही' (अवै.)
मो. 9412714210/8279460590
सचिव : डॉ. अखिल चिलवाल (अवै.)

कहानी:

तोहमत

• डॉ. (श्रीमती) कुसुम रानी नैथानी

सुबह सवेरे वीरू भालू जंगल में टहल रहा था। अभी वह कुछ ही दूर गया था उसे सड़क किनारे संटू नेवला घायल अवस्था में मिला। वह बुरी तरह से जख्मी था और वह चलने में असमर्थ था। वीरू को उस पर बहुत दया आई। वह उसके पास पहुंचा और उसने पूछा, "क्या हुआ तुम्हारी यह हालत किसने की?"

"मैं सुबह इधर से जा रहा था। तभी ऊपर से पत्थर गिर पड़े। एक बड़ा सा पत्थर मेरे ऊपर गिर पड़ा लगा और मैं जख्मी हो गया। मैं चलने में असमर्थ हूं।"

"चिंता मत करो। मैं तुम्हें यहां से ले चलता हूं। बताओ तुम्हारा ठिकाना कहा है?"

"मेरा कोई ठिकाना नहीं है। मैं तो ऐसे ही घूमता रहता हूं। जहां खाना मिल गया खा लिया और रहने के लिए जो जगह मिल जाए वहीं सो जाता हूं।"

"तभी तुम्हारी यह हालत हुई है।" वीरू बोला। उसके बाद उसने संटू को उठाया और अपने घर की तरफ चल पड़ा। अपने ठिकाने पर पहुंच कर वीरू ने उसके घाव की मरहम-पट्टी की और कहा, "यहां पर तुम्हें कोई खतरा नहीं है। तुम यहां पर आराम से रहो। मैं कुछ देर में लौट कर आता हूं।"

वीरू भालू की सेवा से संटू को बड़ी राहत मिली। वह उसके ठिकाने के बाहर बैठ गया। वीरू टहलने के लिए निकल पड़ा। थोड़ी देर बाद वह घर लौट कर आया।

"अब कैसा है तुम्हारा दर्द?"

"पहले से बहुत राहत है। तुम्हारा एक बार फिर से बहुत धन्यवाद।"

"इसमें धन्यवाद की क्या बात है? यह तो मेरा फर्ज था।" वे दोनों थोड़ी देर तक बात करते रहे। वीरू ने उसके खाने का इंतजाम भी कर दिया। एक हफ्ते के अंदर ही संटू बिल्कुल ठीक हो गया। वह बोला, ''बड़े भाई! तुम्हारी मदद से मुझे नया जीवन मिला है। मैं तुम्हारा एहसान कभी चुका नहीं सकता। पर तुम पर ज्यादा दिन बोझ भी नहीं बन सकता। मुझे जाने की इजाजत दे दो।"

"कैसी बात कर रहे हो, यह तो जंगल है। यहां कोई कहीं भी रह सकता है। तुम जाने की बात क्यों कर रहे हो?"

"आज तक तुम ही मेरी देख भाल कर रहे हो। मैं चाहता हूं कि मैं फिर से पहले की तरह अपनी जिम्मेदारी खुद निभाऊं।"

"तुम कहां जाओगे? तुमने तो कहा था तुम्हारा कोई ठिकाना नहीं है।"

"मैं कहीं भी रह लूंगा पहले की तरह।"

"तुम यहीं क्यों नहीं रह जाते? तुम्हें यह जगह पसंद नहीं है क्या?"

"पसंद तो बहुत है। ज्यादा दिन किसी का मेहमान बनना भी ठीक नहीं।"

''तुम मेहमान बन कर नहीं। मेरे दोस्त बनकर यहां पर रहो। तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होगी।" वीरू बोला तो संटू ने राहत की सांस ली। यह सच था कि संटू का अभी तक अपना कोई एक ठिकाना नहीं था। वह अकेला था। उसका जहां मन करता वह वही चला जाता। आज पहली बार उसे अपनों की कमी खल रही थी। उसने वीरू की बात मान ली और बोला,

"अब मैं ठीक हो गया हूं। तुम मेरे खाने की चिंता मत करना। उसका इंतजाम में खुद कर लूंगा।" जब से संटू नेवला वीरू भालू के साथ आया था। तब से गंपी सांप को बहुत परेशानी हो रही थी। इस इलाके में चूहे बहुत थे। इसी वजह से गंपी रोज उन्हें खाने के लिए इधर आता था। संटू नेवले के कारण उसे शिकार करने में बड़ी परेशानी हो रही थी। पेड़ में बैठे कालू कौए को भी वीरू और संटू की दोस्ती एक आंख नहीं भा रही थी। गंपी सांप परेशान होकर घूम रहा था। कालू की नजर उस पर पड़ी तो उसने पूछा, "कैसे हो गंपी?"

"अभी तो ठीक हूं।"

"आज इतनी दूर कैसे निकल आए?"

"क्या बताऊं? वीरू भालू के ठिकाने के बाहर एक नेवला बैठा रहता है। उसकी वजह से मैं भोजन ढूंढने उधर नहीं जा पा रहा हूं।"

"तुम उसको भगा क्यों नहीं देते?"

"भगा तो देता पर वह भी ताकतवर है। ऊपर से उसे वीरू भालू का संरक्षण प्राप्त है। ऐसे में मुझे उससे निबटना मुश्किल लग रहा है।"

"तब तो समझो तुम्हारी परेशानी के दिन शुरू हो गए।"

"यही समझ लो कालू! तुम्ही कोई उपाय बताओ। जिससे इस झमेले से छुटकारा मिल जाए। इस काम में एक तुम ही हो जो मेरी मदद कर सकते हो।"

"कैसी मदद?"

"किसी तरह इन दोनों के बीच में फूट डलवा दो। इससे मेरा रास्ता आसान हो जाएगा।"

"ठीक है। मैं कोई उपाय ढूंढता हूं। तुम भी तो कोशिश करो।"

"कर तो रहा हूं पर मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। लगता है मुझे अपना ठिकाना बदलना पड़ेगा।"

"तुम क्यों ठिकाना बदलोगे? तुम तो यहां बरसों से रहते हो। बदलेगा तो वह जो यहां अभी नया आया है।" कहकर कालू वहां से उड़ गया। अगले ही दिन से कालू ने वीरू और संटू पर लगातार नजर रखनी शुरू कर दी। उसने देखा वीरू के जाते ही संटू आराम करने लग जाता था। बीच में उठकर कभी एक-आध चक्कर लगा देता। अचानक उसके दिमाग में एक बात आई। वह गंपी सांप से बोला, "मेरे पास इस समस्या का एक हल है।"

"क्या है जल्दी बताओ?"

"वीरू भालू के काम पर जाते ही तुम कल किसी तरह से उसके ठिकाने के सामने से गुजर जाना।"

"इससे क्या होगा?"

"संटू को जरूर आभास हो जाएगा कि इधर से कोई सांप गुजरा है।"

"यह तो तुम ठीक कहते हो।"

"बस तुम अपना काम करके चालाकी से निकल जाना। बांकी मैं देख लूंगा।" प्रोग्राम के अनुसार अगले दिन जैसे ही वीरू घर से निकला। रास्ते में कालू उसका इंतजार कर रहा था। वह बोला, "कहां जा रहे हो वीरू भाई?"

"काम पर जा रहा हूं।''

"तुम तो दिन भर मेहनत करके थक जाते होंगे। उधर तुम्हारा साथी संटू नेवला बैठ-बैठ कर ठाट करता है और तुम्हारी अनुपस्थिति में तुम्हारे घर पर भी हाथ साफ कर देता है।"

"यह क्या कह रहे हो?"

"मैं जानता था तुम्हें मेरी बात पर यकीन नहीं आएगा। विश्वास न हो तो चलकर देख लो। अभी दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।" उसकी बात सुनकर बीरू को बहुत गुस्सा आया। वह तुरंत वहां से घर की ओर लौट गया।

योजना के अनुसार वीरू के घर से निकलते ही गंपी सांप संटू की नजर बचाकर चुपचाप उसके घर के आगे से गुजरा। संटू को जैसे ही इसका आभास हुआ। वह उठा और वीरू के ठिकाने की तरफ चला गया। उसने अंदर तक झांककर देखा पर उसे सांप कहीं नहीं दिखाई दिया। उसी समय वीरू भालू वहां पहुंच गया। उसने कहा, "तुम यहां क्या कर रहे थे संटू?"

"मुझे इधर आस-पास सांप का आभास हुआ। बस वही देखने यहां आ गया।"

"सांप का आभास हुआ या कुछ और। अब मेरी समझ में आया तुम्हारा कोई संगी साथी क्यों नहीं है? "

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"तुम किसी के विश्वास के योग्य नहीं हो।"

"ऐसा मैंने क्या कर दिया?"

"मेरी अनुपस्थिति में तुम मेरे घर के अंदर घुस कर मेरे सामान पर हाथ साफ करते रहते हो। मैंने तुम्हारी हालत देखकर अपना दोस्त बनाया। तुम्हारी हर तरीके से मदद की और तुमने मुझे उसका यह फल दिया।"

"तुम गलत समझ रहे हो।"

"गलत तो मैं अभी तक समझ रहा था। आज सही समझ पाया हूं। मुझे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी। दोस्त के नाम पर तुमने मुझे धोखा दिया है।" वीरू के मुंह से ऐसी बातें सुनकर संटू को बहुत बुरा लगा। उसने कोई सफाई नहीं दी। उसने वहां से जाने की तैयारी कर ली।

कालू कौआ पेड़ पर बैठकर यह सब देख रहा था। वह अपनी चालाकी पर बहुत खुश था। संटू नेवला वहां से चला गया। उसके बाद कालू भी उड़ कर उस तरफ चला गया जिधर गंपी सांप गया था। संयोग से कुछ देर बाद वीरू भालू भी उसी दिशा में चल पड़ा, जिधर कालू उड़ कर गया था। कुछ दूर जाकर उसने देखा कि कालू एक पेड़ पर बैठ कर गंपी सांप से हंस-हंस कर बातें कर रहा था। उसे सारा माजरा समझ में आ गया। अब उसे अपनी गलती पर पछतावा हो रहा था लेकिन किया क्या जा सकता था? वह तुरंत वापस लौटा और संटू को ढूंढने लगा। कुछ दूरी पर उसकी मुलाकात संटू से हो गई। वह बोला, "मुझे माफ कर दो दोस्त! तुम्हारी बात सही थी। मुझसे गलती हो गई।"

"तुम्हारी कोई गलती नही है। परिस्थिति कुछ ऐसी थी तुम्हारी जगह मैं होता तो यही सोचता।"

"चलो मेरे साथ वापस चलो।"

"नहीं दोस्त! मैं तुम्हारे साथ नहीं जा पाऊंगा।"

"इसका मतलब तुमने मुझे माफ नहीं किया।"

"दोस्ती में एक बार शक पैदा हो जाए तो फिर उसे कभी मिटाया नहीं जा सकता। तुमने मेरी बहुत मदद की है। मैं इसके लिए हमेशा तुम्हारा आभारी रहूंगा और तुम्हे सदैव याद भी करता रहूंगा पर मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकता।" इतना कहकर संटू आगे बढ़ गया। वीरू को अपनी गलती पर बहुत पछतावा हो रहा था। अब किया क्या जा सकता था। कालू कौए के बहकावे में आ कर उसने बिना सोचे अपने दोस्त पर इतनी बडी तोहमत लगा दी थी।

- माणीगृह, 318,-ए ओंकार रोड, चुक्खू वाला देहरादून
मोबाइल-9412922513

कहानी :

परवाह

• आशीष श्रीवास्तव

पुलिस की छापामारी के बाद मिठाई की दुकानों, होटलों और रेस्टोरेंटों के शटर गिरने शुरू हो गए। कोरोना संक्रमण से बचने के लिए लॉकडाउन की घोषणा जो शुरू हो गई थी। ऐसे में एक किशोरवय लड़का स्वीट्स हाउस पहुंचा। उसने देखा कि दुकान बंद हो रही हैं। वह वहां खड़े सुरक्षा गार्ड से शुगर फ्री सोन पपड़ी खरीदने की गुहार करने लगा।

सुरक्षा गार्ड ने बताया कि अब लॉकडाउन के बाद ही अगले महीने आना। किशोर ने कहा, ''कृपया एक पैकेट शुगर फ्री ही सोन पपड़ी का दिला दीजिए। मेरे पापा को डायबिटीज है और ये मिठाई दवा से कम नहीं।'' ये सुनकर सुरक्षा गार्ड चौंक गया। उसने कड़क स्वर में कहा, ''चलो यहां से, बाद में आना। भला डायबिटीज वालों के लिए कब से मिठाई दवाई हो गई?''

किशोर चला गया पर कुछ देर बाद फिर वहीं आ गया। दुकान खाली हो चुकी थी। बाजार में सन्नाटा छा गया था। किशोर फिर मिन्नतें करने गया। ''देखिए मैं एक साल से यहीं से शुगर फ्री सोन पपड़ी ले जा रहा हूं। शहर में और कहां मिलती है मुझे नहीं पता। मेरे पापा मधुमेह की कड़वी दवा के बाद शुगर फ्री सोन पपड़ी खाते हैं क्योंकि उनके दांत मजबूत नहीं वे काफी वृद्ध हैं।

दोबारा किशोर को आया हुआ देखकर और उसकी बातों को सुनकर सुरक्षा गार्ड कुछ नरम पड़ा। लेकिन तब तक वहां पुलिस की गाड़ी आ चुकी थी। लाउड स्पीकर से ऐलान होने लगा, ''चलिए सब अपने-अपने घरों में, कोई भीड़ नहीं लगाएगा।'' पुलिस को अपनी ओर आया देखकर किशोर ने पुलिस से ही निवेदन किया, ''सर! जैसे मेडिकल स्टोर खुले हैं वैसे ही कुछ देर को मिठाई की दुकान भी खुलवा दीजिए। मेरे पापा के लिए ये शुगर फ्री मिठाई ही दवाई है। प्लीज सर कुछ कीजिए। वे इसके बिना कड़ी दवा नहीं निगल पाते हैं।''

अपने बुजुर्ग पिता के प्रति ऐसे भाव देखकर गाड़ी में बैठी पुलिस, किशोर की बात सुनकर द्रवित हो गई। पुलिस ने संवेदनशीलता दिखाते हुए न केवल दुकान खुलवाई बल्कि एक पैकेट शुगर फ्री सोन पपड़ी का किशोर को दिलवाया भी। किशोर ने आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद दिया।

पुलिस ने मामले की गंभीरता को समझा और कहा, ''बेटा! पुलिस कानून तोड़ने पर लाठी ही नहीं चलाती, बल्कि इंसानियत की खातिर जनसेवा का भी परिचय देती है।''

किशोर ने कहा, ''जी सर! हमें आप जैसे पुलिस वालों पर गर्व है। आपका बहुत धन्यवाद। हम लॉकडाउन का पूरा पालन करेंगे।''

विजयी मुस्कान लिए किशोर अपने पापा के पास घर आ गया। जैसे उसने कोरोना से जंग जीत ली हो।

- एल.आई.जी. 204, कोटरा, सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.)
मोबाइल-8871584907

चित्र पहेली

नीचे बने चित्रों में दो चित्र एक जैसे हैं।
बताइए कौन-कौन से नंबर के चित्र एक से हैं।

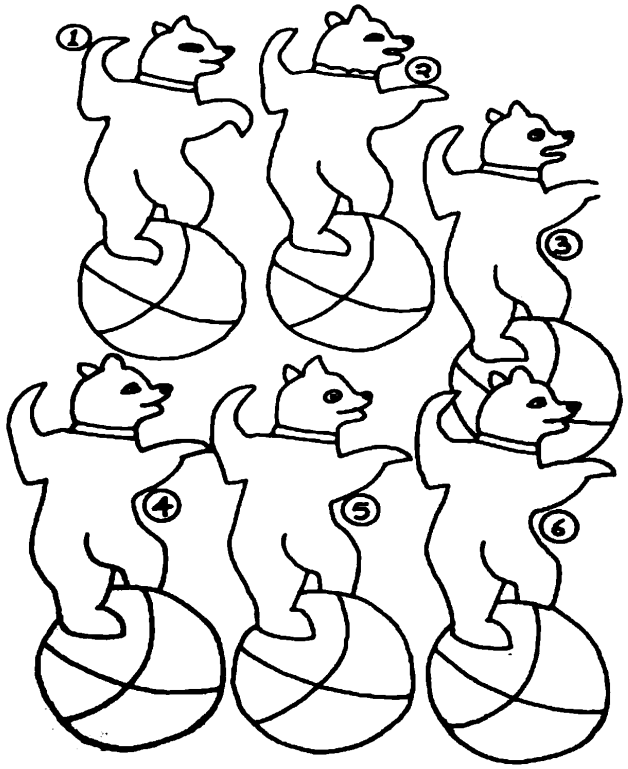

• चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी, राजस्थान

ज्ञान विज्ञान बुलेटिन

भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा जन सहयोग से प्रकाशित ज्ञान विज्ञान बुलेटिन मासिक पत्रिका के लिए विज्ञान, जन विज्ञान, महिला मुद्दों एवं सम-सामयिक विषयों पर आलेख/ रचनाएं/सुझाव सादर आमंत्रित हैं। मेल से भेजने पर केवल **Kurtidev 10 font** से रचनाएं भिजवाएं।

बुलेटिन नियमित मंगवाने के लिए तीन वर्ष का सदस्यता शुल्क 160/- मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट से संपादक, ज्ञान विज्ञान बुलेटिन, भारत ज्ञान विज्ञान समिति मुहल्ला-खोल्टा, अल्मोड़ा उत्तराखंड 263601 के पते भिजवाएं। बालप्रहरी एवं ज्ञान विज्ञान बुलेटिन का शुल्क एक साथ भी भेजा जा सकता है। - संपादक

कहानी:

रिमि का सच

• प्रभा पारीक

रिमि की स्कूल की परीक्षाएं पूरी हो गई थी। रिमि को पता तो था ही की इस बार वह परीक्षा में कुछ अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई है। परीक्षा के समय कितने ही विषयों में प्रश्नों के जवाब तो उसे आते ही नहीं थे जवाब लिखती कैसे?

परीक्षा से पहले तक वो अपनी मम्मी से छुप कर मोबाईल से खेलती रहती थी और समय होने पर मम्मी के पास आकर थकान का बहाना बना कर सो जाती थी। थकी हारी मम्मी भी कितना ध्यान रखती। घर में दादी थी जिसकी बात सुनने की उसे आदत तो थी ही नहीं। परीक्षा के समय उसे पेपर देखते ही पसीने छूट गए। उसने बड़ी दयनीय नजरों से अपनी सहेलियों की और देखा पर सभी ने उसे अनदेखा करते हुए अपना-अपना पेपर पूरा करने में ही ध्यान दिया। किसी को उसकी परवाह ही नहीं थी। परीक्षा से कितने दिनों पहले से उसकी सहेलियां उसे अपना पाठ पूरा करने को समझा रही थी। रिमि को पढाई की बातें बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी। उसने कुछ प्रश्नों के जवाब पूछने के लिए अपनी सहेली निति को आवाज भी लगाई पर उसने उसकी ओर देखा तक नहीं।

जब उसकी कक्षा के सभी एक दूसरे को उत्साह से प्रश्नों के जवाब बता कर खुश हो रहे थे। उसे तो समय पूरा होने तक मात्र दो ही प्रश्नों के जवाब आए थे। वे भी अधूरे थे परीक्षा के बाद सभी सहेलियां खुशी-खुशी बस में अपने-अपने स्थान पर आकर बैठ गई। पर रिमि का मन भारी था। उसका मन बहुत उदास हुआ उसने सोचा। यदि खराब मन से मैंने घर में प्रवेश किया तो पापा मम्मी को पता चल जाएगा। उन्होंने छुट्टियों में उसे घूमने ले जाने का कार्यक्रम बनाया है। वह उसे रद्द कर उसे गर्मी की छुटटी में भी एक्स्ट्रा कक्षा में जाने को कहेंगे। जो रिमि बिल्कुल नहीं चाहती थी। रिमि ने अपने आप को मनाया कि कल की परीक्षा के लिए घर जाकर तैयारी कर लेगी। उसने घर में प्रवेश किया। मम्मी पापा तो उसका ही इंतजार कर रहे थे। उनको देख कर रिमि कुछ बता ही नहीं पाई। अपने कमरे में जा कर वह अगली परीक्षा के लिए किताबें निकालने लगी। यह क्या उसे अपनी इंग्लिश की बुक तो मिली ही नहीं। अब क्या करे मम्मी भी खाना खाने के लिए पुकार रही थी।

खाना खा कर रिमि अपनी सहेली के घर जाने के लिए मम्मी से पूछने गई। मम्मी ने जल्दी आने के लिए कहा और ऑफिस के लिए निकल गई। परीक्षा के दिन उसे बुक देने के लिए सहेली ने मना कर दिया। अब क्या करे किसी तरह से रफ बुक में जितना लिखा था उसे पढ़ा और परीक्षा देने चली गई। इस तरह हर परीक्षा में कुछ न कुछ लापरवाही के कारण रिमि एक भी विषय में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई। सारी परीक्षाएं खतम होने के बाद भी उसने डर के मारे मम्मी पापा को कुछ नहीं बताया। उस दिन उसने सुना की पापा अंकल को बता रहे थे कि इस बार हमारी रिमि ने परीक्षा बहुत अच्छी तरह से तैयारी करके दी है। उसका रिजल्ट भी अच्छा ही होगा। इसलिए वह उसे घुमाने ले जा रहे हैं। रिमि का मन हुआ पापा को सब सच-सच बता दें। पर वह चुप रही, कहीं घूमने का कार्यक्रम अटक न जाए। सो रिमि भी सब कुछ भूल कर मम्मी-पापा के साथ छुट्टियों के आयोजन में लग गई। रिमि भूल गई की उसे पापा को बताना है कि उसने इस परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है।

छुट्टियां खूब मजे से बीती। दिल में धुक-धुक हो रही थी कि वापस आने तक रिजल्ट आ ही जाएगा। आज परीक्षा का रिजल्ट आना था। उसने सुबह पापा के पास जाकर सब कुछ बताना चाहा पर पापा को दुख: होगा सोच कर चुप रही। रिजल्ट देख कर पापा मम्मी दोनों चुप थे।

मम्मी उसे प्रश्नवाचक नजरों से देख रही थी। रिमि को डरता देखा पापा ने उसे अपने पास बुलाया और प्यार से पूछा, ''क्या आपको सचमुच कुछ नहीं आता था या आप लिख नहीं पाई? बताओ रिमि क्या बात है? पापा के सामने शर्मिंदा रिमि ने सारी बात बताई कैसे वह अपना समय फोन में बर्बाद करती रही। उसकी सारी सहेलियों के अच्छे नंबरों की जानकारी भी थी रिमि को रिमि को दुखी देख कर पापा मम्मी को भी दुख हुआ पर रिमि को पापा मम्मी ने डांटा नहीं, समझाया। रिमि का

दीवाली के दीप

● डॉ. राकेश चक्र

आओ मिलकर आज सभी हम,
दीवाली के दीप जलाएं।
सुखद जिंदगी करके सबकी,
द्वार-द्वार खुशबू महकाएं।
ग्राम-ग्राम में बिखरे आभा,
द्वेष सभी के मिट जाएं।
भाव रहे सच्ची सेवा का,
मैल हृदय के हट जाएं।
विपुल बिंदु के तन सागर में,
दीपक की नौका लहराएं।
घृणित कृत्य ने कृष्ण काल में,
जो संहार कराया है।
इस युग में भी उसी वृत्ति की,
छाई काली छाया है।
मदिरा के सेवन को त्यागें,
सात्विकता से पर्व मनाएं।
असुर बढ़ रहे, धरती पर अब,
घोर स्वार्थ का चक्र चला।
राम घूमते-फिरते वन-वन,
और रावण के तिलक लगा।
आओ करके दमन झूठ का,
सच्चाई को मान दिलाएं।
कथनी-करनी के अंतर को,
समता की माटी से पाटें।
सत्कर्मों पर खर्च करें धन,
दुष्कर्मों का तम सब काटें।
कड़वाहट सब तज करके हम,
जीवन में आनद मनाएं।

-90 बी, शिवपुरी,मुरादाबाद,उ.प्र.
मोबाइल-9456201857

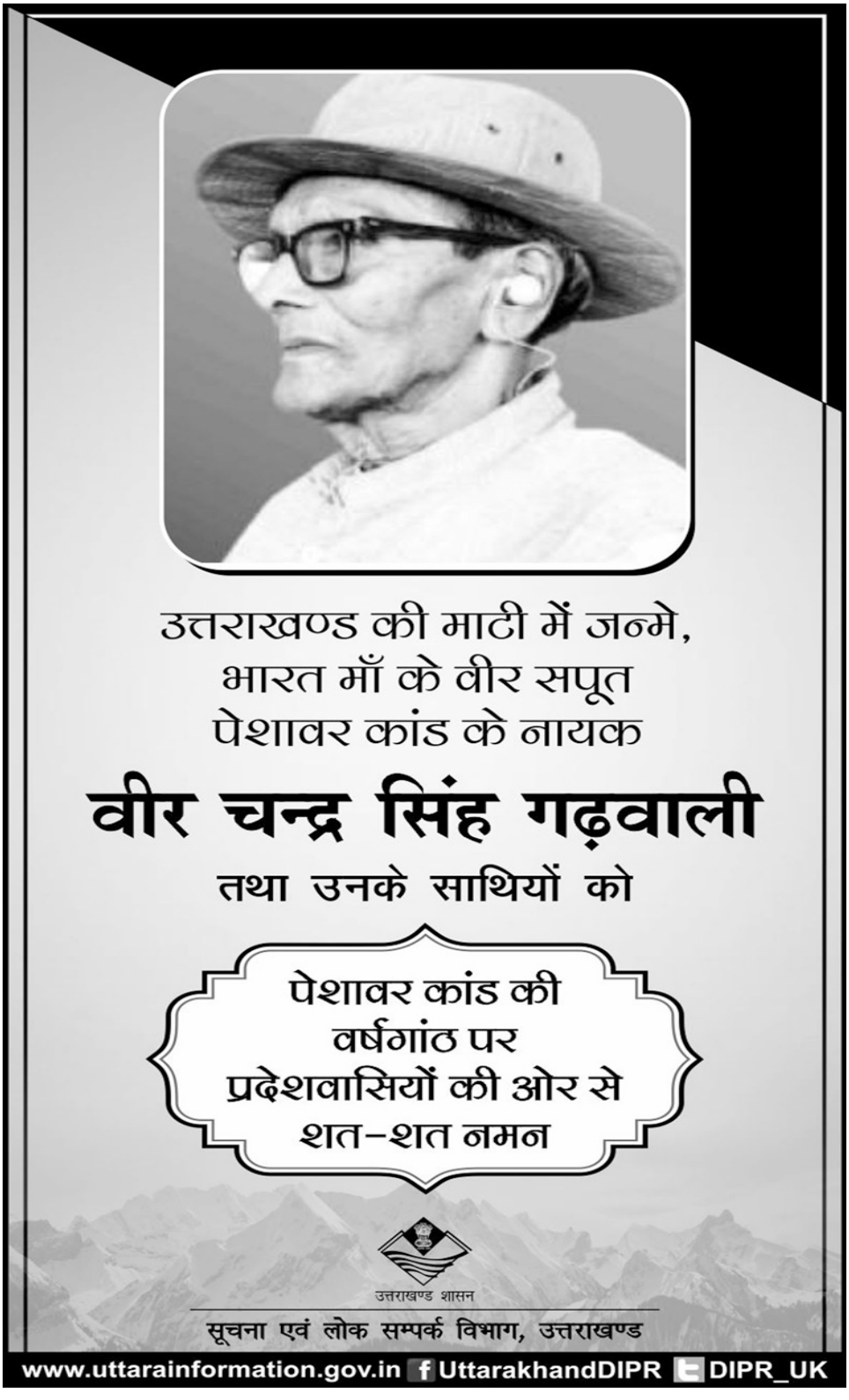

अपने पर ही पछतावा हुआ। उस दिन के बाद उसने फोन पर अपना समय बर्बाद करना बंद कर दिया। उसकी सभी सहेलिया अच्छी थी उनकी बात मानने लगी और वादा किया अगले साल वह खुब मेहनत करके पढ़ेगी।

- 5, पंचवटी सोसायटी दहेज बाईपास लिंक रोड, भरूच, गुजरात

ऐसा क्यों होता है?

● घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान की तीन शाखाएं है - भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं जीवन विज्ञान। विज्ञान की इन्हीं शाखाओं से संबंधित कुछ रोचक प्रश्नोत्तर नीचे दिए जा रहे हैं जो तुम्हारा ज्ञानवर्धन करेंगे।

● बुढ़ापे में लोग क्यों सिकुड़ जाते हैं?

हां, यह सच है कि बुढ़ापे में लोग सिकुड़ जाते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि ज्यों-ज्यों व्यक्ति की उम्र बढ़ती है, इसके साथ ही उसकी चर्बी एवं मांसपेशियों के अलावा ऊंचाई भी कम होने लगती है। इसके अतिरिक्त रीढ़ की हड्डी में भी परिवर्तन आ जाता है क्योंकि रीढ़ की डिस्कों में संचित पानी सूखने लगता है।

● तुम स्वयं को गुदगुदी क्यों नहीं कर सकते हो?

स्वयं को कभी भी गुदगुदी नहीं की जा सकती है। क्योंकि यह पूरी तरह एक असंभव कार्य है। जानते हो कि ऐसा क्यों होता है? गुदगुदी का संबंध खतरे, आश्चर्य अथवा स्वयं पर नियंत्रण खोने से होता है। जब कोई दूसरा व्यक्ति तुम्हें गुदगुदाता है तो ऐसा महसूस होता है। लेकिन तुम खुद पर कदापि आक्रमण नहीं कर सकते।

● मोबाइल फोन से दूर क्यों रहना चाहिए?

दरअसल, मोबाइल फोन सीधे मस्तिष्क को प्रभावित करता है। इससे निकलने वाली हानिकारक तरंगें डी.एन.ए. को क्षतिग्रस्त करती हैं। मोबाइल फोन का प्रयोग करने वालों को न प्रयोग करने वालों की तुलना में ट्यूमर होने का खतरा भी चार गुना बढ़ जाता है। इस प्रकार मोबाइल फोन सुरक्षित नहीं है। इसे हमेशा अपने पास रखना और भी ज्यादा घातक सिद्ध होता है। छोटे बच्चों को तो विशेष रूप से मोबाइल फोन से दूर रखने में ही समझदारी है।

● अधिक खुशी में आंखों में आंसू क्यों आ जाते हैं?

प्राय: यह देखा गया है कि दु:ख अथवा तकलीफ महसूस होने पर लोगों की आंखों में आंसू आ जाते हैं। किंतु कभी-कभी खुशी के समय भी आंखों में आंसू छलक उठते हैं। क्यों? जब व्यक्ति बहुत अधिक प्रसन्न होता है, तब वह अपनी भावनाओं को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने में असमर्थ रहता है। इस कारण भावनाएं अनियंत्रित हो जाती हैं। फलस्वरूप, आंखों से आंसू बहने लगते हैं। इन्हें हम खुशी के आंसू की संज्ञा देते हैं।

● डर क्यों लगता है?

जब भी तुम टी.वी. अथवा अन्य जगहों पर कोई भयानक दृश्य देखते हो, तो तुम्हें अक्सर डर लगने लगता है। पर क्यों? दरअसल, शरीर में निहित मस्तिष्क की अनुकंपी तंत्रिकाएं न्यूरो हार्मोन एड्रीनलिन तथा नॉर एड्रीनलिन का स्राव करती हैं। यह हारमोन शरीर के अंगों पर भी अपना प्रभाव डालता है जिससे डर उत्पन्न होता है और इसके लक्षण सामने आते हैं। ये लक्षण हैं- कंपकंपाना, रोंगटे खड़े होना, पसीना आना, जीभ सूखना, आंखें चौड़ी होना आदि। यही कारण है कि भयानक वस्तु अथवा दृश्य देखने पर तुम्हें डर लगता है।

● भोजन करने के लिए चिकनाई युक्त बर्तनों का उपयोग क्यों नहीं करना चाहिए?

दरअसल, ऐसे बर्तन जिनमें चिकनाई हो तथा धूल भी जमी हो, इन बर्तनों में सूक्ष्मजीव चिपके रहते हैं जो अत्यंत हानिकारक होते हैं और शरीर में पेचिश, डायरिया तथा मियादी बुखार जैसे कुछ रोग उत्पन्न कर सकते हैं। यही वजह है कि तुम्हें चिकनाई एवं धूल वाले बर्तनों में भोजन नहीं करना चाहिए।

● जल रखने के लिए मिट्टी के बर्तन अच्छे क्यों माने जाते हैं?

जल को मिट्टी के बर्तनों में एकत्र करना एक पुरानी विधि है क्योंकि मिट्टी के बर्तनों में जीवाणु कम होते हैं। यदि बर्तनों में कपूर अथवा तुलसी की पत्तियां डाल दी जाएं तो इसमें यूजीमोल तथा ऑक्सीजन मोनाटर पिंस के कारण सूक्ष्मजीवों की संख्या बहुत कम हो जाती है।

● खाद्यान्नों को पुराने बोरों की अपेक्षा नए बोरों में रखना उपयुक्त क्यों होता है?

पुराने बोरों में सूक्ष्मजीवों की उपस्थिति से बोरों में स्वयं के ग्रसन की क्षमता बढ़ जाती है। अत: नए बोरे इस्तेमाल में लाने ठीक रहते हैं। यदि पुराने बोरों का उपयोग आवश्यक हो तो इन्हें उबलते पानी में धोकर व धूप में सुखाकर कीटरहित कर लेना चाहिए।

● अंधेरे में आंखें वस्तुओं को क्यों नहीं देख पातीं?

वस्तुओं को देखने के लिए प्रकाश (रोशनी) की आवश्यकता पड़ती है। यह प्रकाश जब आंख की पुतली तक पहुंचता है तो दृष्टिपटल पर वस्तु का प्रतिबिंब बनता है। मस्तिष्क द्वारा ही वस्तु की पहचान भी की जाती है और तुम्हें वस्तु का बोध होता है। ठीक इसके विपरीत जब प्रकाश पुतली पर पड़ेगा ही नहीं अर्थात् अंधेरा होगा, तो भला वस्तु किस प्रकार दिखेगी।

● सेब, अंगूर तथा टमाटर आदि कुछ दिनों में नर्म क्यों होने लगते हैं?

सेब, अंगूर तथा टमाटर विकरीय खाद्य पदार्थों की श्रेणी में आते हैं जिनमें पानी की मात्रा अधिक रहती है। फलों का पकना अथवा सड़ना एंजाइमों की अत्यधिक तीव्र क्रियाशीलता के कारण होता है। जब इन्हें कमरे के ताप पर कुछ दिनों तक रखा जाए तो इनमें उपस्थित सूक्ष्मजीवों की अत्यधिक वृद्धि हो जाती है। तथा एंजाइमों की क्रिया भी तीव्र हो जाती है। इन्हीं एंजाइमों के कारण ये पदार्थ बहुत अधिक पककर नर्म पड़ जाते हैं और इससे दुर्गंध आने लग जाती है।

- 785/8, अशोक बिहार, गुरूग्राम (हरियाणा)
मोबाइल- 9210456666

कहानी :

बिल्ली के गले में घंटी

• नफे सिंह कादयान

कतरु चूहा वैसे तो बहुत होशियार था। पर आज उसका गणित बिगड़ गया। उसके परिवार में दस सदस्य थे। इस समय सभी उसके सामने मौजूद थे। पर जब भी वह गिनती करता एक सदस्य कम हो जाता। हैरान परेशान कतरु ने अब की बार हरेक सदस्य पर अपनी पूंछ फिराकर गिनती शुरू की। ताकि गलती की गुंजाईश न रहे। ''एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ और ये नौओह! क्या चक्कर है ये? सभी यहां मौजूद हैं पर फिर भी एक कम हो रहा है।'' वह अपने परिवार के चूहों से बोला।

''हट पीछे, हिसाब-किताब के मामले में अभी तू अनाड़ी है और मैं खिलाड़ी हूं। देख मैं कैसे सही गिनता हूं।'' उसका छोटा भाई उसे एक तरफ धकेलते हुए बोला।

कतरु के भाई ने परिवार के सभी सदस्यों को जोड़ों में गिनना शुरू किया। 'कतरु-मतरु एक जोड़ा, टिंकू-सिंकू खाए थोड़ा, जिकी-भिकी ने कुनबा जोड़ा, डिंपी-रिंपी काला थोड़ा, बांकी बचा खंपी इसका जोड़ीदार कहां है? ये तो पांच जोड़े बनने थे। वाकई कहीं कुछ गड़बड़ तो जरूर है।'' कतरु का भाई रुआंसे स्वर में बोला।

चूहों वाले घर में दरवाजे के उपर बने रोशनदान में एक म्याऊं बिल्ली छुपकर बैठती और जैसे ही मौका मिलता एक चूहे को उठा कर भाग जाती। आज भी वह रोशनदान में छुपकर बैठी हुई चूहों की गिनती देख मन ही मन मुस्कुरा रही थी। गिनती गिनने वाला चूहा अपने को छोड़ बांकी सभी साथियों को गिन रहा था। बिल्ली झप्पटा मार कतरु के भाई को दबोच कर बोली, ''ये रहा दसवां चूहा। चूहो! तुम नादान हो। तुम्हें नहीं गिनना आता, एक चूहा हर-रोज पेट मेरा भर जाता। दो-दो के आठ जोड़े थे तुम पिछले हप्ते, एक-एक चूहा कम किया मैंने रफ्ते-रफ्ते। सप्ताह का आखिरी दिन आज फिर दावत उड़ाई, बांकी नौ चूहों ने बिल में घुस जान बचाई। बिल्ली जाने के बाद चूहे फिर बिल से बाहर आ गए। कतरु सब को एकत्र कर दुखी मन से बोला, ''दुष्ट बिल्ली मार झप्पटा एक-एक कर खाए, कुछ उपाए करो, संख्या हमारी घट जाए। ऐसा करो उपाए रिंपी कान मरोड़े, डिंपी मार करेंची उसके मुंह को तोड़े। आमद पता चले, गरदन पकड़ो अकड़ कर, बंटी बांधे घंटी, बिल्ली रखो पकड़ कर।''

कतरु ने जब बिल्ली की आमद का पता चलाने के लिए उसके गले में घंटी बांधने की बात की तो सभी चूहे बगलें झांकने लगे। आखिर बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे? जो बांधने की कोशिश करेगा वह उसे चट कर जाएगी। ''क्या इस दुष्ट बिल्ली के गले में घंटी बांधने का कोई उपाय नहीं हो सकता?'' कतरु सोचने लगा। ''हिप्प हिप्प हुर्रे! सूझ गया उपाय।''

सिंकू उछलता हुआ बोला, ''इसका आसान उपाय कुम्हार से हांडी लाएं, मुंह पर बांधे घंटी अंदर मलाई लगाएं, बिल्ली चाटे हांडी तब गर्दन फंस जाए, बिल्ली डोले, हांडी टूटे, घंटी बंद जाए।''

सिकू की बात पर सभी चूहे सहमत हो गए। वे तंग मुहाने की एक छोटी हांडी कुम्हार के घर से ले आए। फिर उन्होंने घर की रसोई से मलाई ली और उसे हांडी में डाल कर उसके मुहाने पर घंटी बांध दी। चूहों ने उस हांडी को रोशनदान के नीचे रख दिया। थोड़ी देर में ही बिल्ली म्याऊं-म्याऊं-म्याऊं करती आई और हांडी में मलाई देख उसकी जीभ लपरके देने लगी। झट से वह तंग हांडी में मुह फंसा मलाई चाटने लगी। मलाई चाट वह मुंह बाहर निकालने लगी तो उसकी गर्दन हांडी के मुहाने में फंस गई।

बिल्ली को फंसे देख सभी चूहे चिल्लाते हुए बिलों से बाहर आ गए। वह उछल-उछल कर बिल्ली को इधर-उधर भगाने लगे। बिल्ली मुहं में फंसी हांडी की वजह से देख नहीं पा रही थी इसलिए वह कमरे की दिवारों से टकराने लगी। सभी अपनी वर्षों की दबी हुई भड़ास निकालने लगे। कतरु ने गुस्से में बिल्ली को लात लगाई, टिंकू उछला बैठ पीठ पर की रगड़ाई। सिकू पिछली टांग को पकड़े दांत गड़ाए, खंपी उसकी दूम को खींचे, दुल्लती लगाए।

बिल्ली पैर पटकती रह गई। उसके इधर-उधर सर टकराने से जब तड़-तड़ाक करके हांडी फूटी तो बिल्ली के गले में घंटी डल गई। हांडी टूटते ही वह घुर्राती हुई उनके पीछे दौडने लगी। इससे पहले वह किसी चूहे को पकड़ती। वे सभी अपने बिलों में घुस गए।

अब बिल्ली जब भी चूहों को बाहर देख हमला करना चाहती, घंटी टन-टनाने लगती। घंटी की आवाज सुन चूहे सतर्क हो उछल कर बिलों में घुस जाते। बिल्ली को जब चूहे खाने को नहीं मिले तो वह बहुत कमजोर हो गई। अब वह दिन भर कोल्हू वाले के रोशनदान में दुबकी पड़ी रहती। एक दिन वह रोशनदान से चक्कर खाकर नीचे रखे गुड़ के शीरे वाले पिप्पे में गिर गई। चिपचिपा शीरा बिल्ली के सारे बदन पर लिपट गया।

शीरा पोंछने के लिए वह वहां रखे रूई (कपास) के खूले बोरे पर शरीर रगड़ने लगी। शीरा तो क्या उतरना था। रूई उसके सारे शरीर पर चिपक गई। चतुराई से काम लेते हुए वह आवाज बदल कर बोली, ''सुंदर-सुंदर चूहो! मेरे पास आओ, मेरे सफेद बालों पर हाथ लगाओ, जन्नत की परी मैं, तुम्हे दूंगी मौका, मेरे पास आओ, लाई एक तोहफा।''

चूहे बिल्ली को रूई में लिपटी होने के कारण पहचान नहीं पाए। एक साहसी चूहा बिल्ली के पास आया तो उसने म्याऊं करते हुए उसे पकड़ लिया।

''ये तो शैतान बिल्ली है।'' कतरु चूहा चींख कर बोला। उसने घर के मालिक के चूल्हे से जलती लकड़ी मुंह में दबाकर बिल्ली के उपर उछाल दी। शीरे वाली रूई ने यकायक आग पकड़ी तो बिल्ली चित्कार करते हुए मुंह में दबोचे चूहे को छोड़ कर उस मोहल्ले से बाहर भाग गई।

.....पृष्ठ 23 का शेष..... (स्कूली पिकनिक)

अगले दिन मम्मी साथ वाले बंगले में आंटी के घर गई थी। घर के पास के मैदान में उसके स्कूल के बड़े लड़के खेल रहे थे। उनमें से शशि नाम का लड़का उससे अक्सर बात भी करता था और अपनी साइकिल पर भी घुमाता था। रजत ने कहा, ''शशि भैया!आप मुझे भी मेला ले चलोगे?''

शशि ने कहा, '' हां! मुझे भी आज मेला देखने जाना है परंतु तुम अपने मम्मी पापा से पूछ लेना, मैं तब ही ले जाऊंगा।''

रजत ने कहा,'' ठीक है।'' रजत ने शाम को 4 बजे अपनी मम्मी से कहा, ''आज स्कूल के ग्राउंड में हमारा क्रिकेट मैच है। मैं 7 बजे तक आऊंगा।''

शशि अपने बंगले के बाहर ही खड़ा था। रजत शशि को ले कर दीपक के घर गया और उसे मेले चलने के लिए कहा। दीपक की मम्मी मना करने लगी पर शशि ने मना लिया। दीपक के पास भी कुछ रुपए थे।

बस में बैठ तीनों मेले जा पहुंचे। मेले में शोरगुल हो रहा था। तरह-तरह के झूले तथा सर्कस लगे थे। चाट पकौड़ी मिठाई आइसक्रीम शर्बत की दुकानें थीं। तीनों ने मिलकर चाट और आइसक्रीम का मजा लिया, झूला झूले। रजत ने दीपक के रुपए खर्च नहीं होने दिए। उसने कुछ खिलौने खरीदे। दीपक ने अपनी मां के लिए दुर्गा मां की मूर्ति खरीदी। इस तरह तीनों ने मेले में बहुत मजे किए और बस में बैठकर लौट आए। रास्ते में खरीदे हुए सारे खिलौने रजत ने दीपक को दे दिए। शशि भैया को भी धन्यवाद कर रजत घर लौट आया। आज उसने अपनी दोस्ती का वादा पूरा कर दोस्ती का फर्ज निभाया था।

- नई दिल्ली

नगरपालिका परिषद अल्मोड़ा

अल्मोड़ा नगर की जनता से विनम्र अनुरोध है कि अल्मोड़ा नगर को साफ और सुंदर बनाए रखने में सहयोग प्रदान करें।

कृपया निम्न बातों पर अवश्य ध्यान दें।

1.पॉलीथीन बैग्स एवं डिस्पोजल आइटम्स का कतई प्रयोग न करें। पकड़े जाने पर रुपए 5,000/. तक जुर्माना वसूला जाएगा। 2.कूड़ा केवल नियत स्थानों पर ही डालें तथा सूखा व गीले कूड़े के लिए अलग-अलग डस्टबिन रखें। 3.कूड़ा कतई न जलाएं। 4.सार्वजनिक मार्गो पर कूड़ा न फेंकें। कूड़ा फेंकते हुए पाए जाने पर जुर्माना वसूला जाएगा। 5. पालिका करों का समय से भुगतान करें। 6.शहर में अपने जानवरों को अवारा न छोड़ें। 7.बाजार मार्गो, गलियों व मुहल्लों एवं नाले व नालियों के ऊपर कहीं भी अतिक्रमण न करें। **(स्वच्छ अल्मोड़ा सुंदर अल्मोड़ा)**

(श्याम सुंदर प्रसाद)
अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका परिषद अल्मोड़ा

(प्रकाशचंद्र जोशी)
अध्यक्ष
नगरपालिका परिषद अल्मोड़ा

सभासदगण- (1)श्रीमती दीपा साह, सेलाखोला वार्ड, (2)श्रीमती तरन्नुम बी,रामशिला वार्ड, (3) श्री मनोज जोशी,बद्रेश्वर वार्ड, (4)श्री सौरभ वर्मा एन.टी. डी. वार्ड, (5) श्री विजय पांडे, त्रिपुरासुंदरी वार्ड (6) श्री अमित साह, लक्ष्मेश्वर वार्ड, (7) श्रीमती दीप्ती सोनकर, मुरली मनोहर वार्ड, (8)श्री जगमोहन बिष्ट, बालेश्वर वार्ड (9)श्री हेमचंद्र तिवारी, विवेकानंदपुरी वार्ड (10)श्री सचिन आर्या, राजपुर वार्ड, (11) श्री राजेंद्र तिवारी नंदादेवी वार्ड (12)श्रीमती रेखा अल्मियां, रैलापाली वार्ड (13) श्रीमती आशा रावत, दुगालखोला वार्ड एवं समस्त कर्मचारीगण, नगरपालिका परिषद अल्मोड़ा

किताब

● कैलाश त्रिपाठी

प्यारे-प्यारे खेत हमारे,
लगते कितने सुंदर सारे।
हरी-भरी फसलें लहराती,
सबके मन को सदा लुभाती।
सरसों पीली कहीं फूलती,
गेहूं की है फसल झूमती।
मनमोहक उनकी हरियाली,
जन-जन में लाती खुशहाली।
कहीं बाजरा मक्का ज्वार,
कभी धान की आए बहार।
किसी खेत में मूली गाजर,
कहीं लगे हैं लाल टमाटर।
किसी खेत में गोभी आलू,
कहीं उगे हैं प्यार रतालू।
कहीं खड़ा है गन्ना न्यारा,
कहीं पपीता सुंदर सारा।
खेतों पर जो जाया करते,
खुश होकर ही आया करते ।

- अजीतमल, औरैया, उ.प्र.

सूरज आया

● बलदाऊ राम साहू

सूरज आया जागो भैया,
समझाती है अपनी मैया।
रोज सवेरे जो उठ जाता
जीवन में वह अव्वल आता।
देखो चिड़िया गा रही है,
हम सब को जगा रही है।
कौआ आया छत पर भाई
कांव-कांव आवाज लगाई।
तुम भी सब आलस छोड़ो,
प्रकृति से सब नाता जोड़ो।

-न्यू आदर्श नगर, पोटिया चौक
दुर्ग, छत्तीसगढ़

गूगल दादा

● डॉ.करूणा पांडेय

गूगल दादा गूगल दादा
उत्तर हमें बता दो।
कल परीक्षा है हमारी ,
पाठ याद करवा दो।
प्रश्न का उत्तर दे सकता हूं ,
याद तुम्हें है करना।
मैं मशीन वाला दादा हूं,
याद सदा ये रखना।
गूगल दादा गूगल दादा,
तुम हो बड़े हरजाइ।
मेरे दादा दादी ने तो
कविता याद कराई।
दादा दादी हैं इंसान
प्रेम प्यार का भाव भरे हैं।
जितना फीड किया मशीन में
ये बस उतना काम करे है।
गूगल दादा गूगल दादा,
तुमसे कुट्टी कर देंगे।
अपनी प्यारी दादी की
गोदी में सिर रख पढ़ लेंगे।
मैं मशीन हूं नेट से चलता,
काम करूंगा प्यार नही।
इस दुनियां में प्यारे बच्चो!
दादी मां सा दुलार नही।
मां पापा से यही प्रार्थना,
सीखो खुद और बताओ।
दया सत्य का पाठ सदा ही ,
दादा नानी के संग पाओ।

- लखनऊ,उ.प्र.
मोबाइल-9897501069

रविवार

● मुरलीधर वैष्णव

सुबह हुई चिड़िया चहचहाई,
उछला बछड़ा गाय रंभाई।
हॉकर पटक गया अखबार,
अब तो जागो राजकुमार।
कब तक देखूं तेरा मुखड़ा,
पलंग पे आया धूप का टुकड़ा।
उठो नहाओ मक्खन खाओ,
अब तो मुझको नहीं सताओ।
उठो जल्द हो लो तैयार,
कुछ पढ़ लो कुछ करो विचार।
आलस को यदि नहीं छोड़ोगे,
फिर आगे कैसे तुम बढ़ोगे।
मीठी निंदिया ठंडी सवेर,
मां सोने दो थोड़ी देर।
समझ रहा मैं तेरा प्यार,
पर आज है प्यारा रविवार।

- 'गोकुल', ए-77, रामेश्वर नगर,
बासनी-प्रथम, जोधपुर, राजस्थान
मोबाइल-9460776100

डॉक्टर अंकल

● डॉ. नरेंद्रनाथ लाहा

डॉक्टर अंकल बड़े अच्छे हैं,
दूख दूर कर देते हैं।
छाती पर आला चिपकाकर,
सारे रोग सुन लेते हैं।
अम्मा मैं भी डॉक्टर बनकर,
सब दुख दूर कर पाऊंगा।
सुबह-शाम को घर-घर जाकर,
खुशिया बिखेर आऊंगा।

- 27 ललितपुर कॉलोनी,
डॉ. पी. एन. लाहा मार्ग, ग्वालियर, म.प्र.

कार्यालय जिला पंचायत अल्मोड़ा

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर समस्त जनपदवासियों को जिला पंचायत अल्मोड़ा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

जनपद वासियों से अनुरोध है कि कृपया उत्तराखंड जिला पंचायत अधिनियम 2016 के तहत बनाई गई उप विधियों के अनुरूप शासनादेश के अनुसार कर एवं लाईसेंस शुल्क विभव एवं संपत्ति कर की अदायगी समय पर करें। तथा पॉलीथीन का प्रयोग कदापि न करें। साथ ही वर्तमान में फैली कोरोना महामारी को दृष्ठिगत रखते हुए समस्त जनपदवासियों से अपील है कि भारत सरकार द्वारा जारी गाइड लाइन का पूर्णत: पालन करते हुए अपने तथा अपने परिवार सहित समाज व प्रदेश को सुरक्षित रखने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

जगदीश प्रसाद	*राजेंद्रसिंह कठैत*	*कांता रावत*	*उमा सिंह*
अभियंता	*अपर मुख्य अधिकारी*	*उपाध्यक्ष*	*अध्यक्ष*
जिला पंचायत अल्मोड़ा	*जिला पंचायत अल्मोड़ा*	*जिला पंचायत अल्मोड़ा*	*जिला पंचायत अल्मोड़ा*

बालप्रहरी समाचार

अल्मोड़ा। कोरोना काल में बालप्रहरी/ बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा ऑनलाइन कई गतिविधियों का आयोजन किया गया। ऑनलाइन कविता, निबंध, ड्राइंग प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। 18 बच्चों को डाक से प्रमाण पत्र तथा पुरस्कार में बालसाहित्य डाक से भेजा गया। ऑनलाइन गतिविधियां आयोजित कर प्रमाण पत्र ऑनलाइन भेजे गए।

● श्राद्ध पक्ष में 13 सितंबर को दादा-दादी विषय पर आयोजित काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. विष्णु शास्त्री तथा संचालन मोतीप्रसाद साहू ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. सतीश भगत, डॉ. महेंद्रप्रताप पांडे 'नंद', डॉ.पूनम गुप्त, दुर्गासिह झाला, नीरज पंत, कृपालसिंह शीला, रूबी शर्मा, सुशीला शर्मा,डॉ. धाराबल्लभ पांडेय, डॉ. दलजीत कौर,पुष्पा जोशी, कैलाश त्रिपाठी,प्रज्ञा गुप्ता, प्रमोद कांडपाल,विजयपाल सेहलंगिया, हंसा बिष्ट, नरेंद्र बहुगणा, डॉ. दिनेशप्रसाद साह, सुशील सरित आदि ने कविता पाठ किया।

● हिंदी दिवस पर 14 सितंबर को आयोजित बाल कवि सम्मेलन की अध्यक्षता उत्कर्ष धपोला तथा संचालन लावण्या कौशिक ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एम बी कालेज हल्द्वानी की हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. प्रभा पंत ने बच्चों को कविता लेखन की बारीकियां बताई।

● 20 सितंबर को डॉ. शील कौशिक की अध्यक्षता में संपन्न कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि डॉ.राकेश चक्र,नवीन डिमरी 'बादल', इंद्रा तिवारी, डॉ. पीतांबर अवस्थी,डॉ(मेजर) शक्ति राज शील, गोविंद बल्लभ बहुगुणा, कृपालसिंह शीला ने कविता पाठ किया। संचालन नीरज पंत ने किया।

● 20 सितंबर को आयोजित बाल कवि सम्मेलन में 23 बच्चों ने कविताएं पढ़ी।अध्यक्षता उपासना तिवारी तथा संचालन कनक जोशी ने किया। मुख्य अतिथि नवीन डिमरी 'बादल' ने बच्चों को बाल कविताएं सुनाई।

● 26 सितंबर को आयोजित बाल कवि सम्मेलन के मुख्य अतिथि डायट खंडवा, म.प्र. के वरिष्ठ प्रवक्ता अशोक कुमार नेगी ने बच्चों को आगे बढ़ने के लिए कई टिप्स दिए। अध्यक्ष कोमल रावत तथा संचालक संध्या गुप्ता सहित 24 बच्चों ने कविता पाठ किया।

● 26 सितंबर को सायंकालीन सत्र में डॉ. जयजय राम आनंद की अध्यक्षता में संपन्न कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि संतोषकुमार सिंह, महेंद्रसिंह राणा, सुकीर्ति भटनागर, प्रदीप बहराइची, जयसिंह आशावत, मीरा सिंह 'मीरा', हरीश सेठी, नरेंद्र परिहार तथा डॉ. जमुना कृष्णराज ने कविता पाठ किया। संचालन जगदीश पाठक ने किया।

● 27 सितंबर को डॉ. वेद मित्र शुक्ल की अध्यक्षता में संपन्न कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि श्याम पलट पांडेय, प्रो. यंशवंत कुमार, लखन प्रतापगढ़ी, डॉ. महावीर रवांल्टा, डॉ. वर्षा महेश 'गरिमा', सीमा जैन, अश्वनी यू नंबियार, चूकी भूटिया, तपेश भौमिक, डॉ. विजयानंद, डॉ. सुरभि बेहरा, सीमा सक्सेना आदि ने कविता पाठ किया।

11 वां राष्ट्रीय बालसाहित्यकार वेबीनार 2020

सलूंबर (राजस्थान)। नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली तथा साहित्यिक संस्था 'सलिला' के संयुक्त तत्वावधान में 11 वां राष्ट्रीय बालसाहित्यकार वेबीनार 2020 अक्टूबर 10 तथा 11 को संपन्न हुआ। इस ऑनलाइन वेबीनार के उद्घाटन सत्र में प्रो. गोविंदप्रसाद शर्मा, अध्यक्ष राष्ट्रीय पुस्तक न्यास दिल्ली, डॉ. विकास दवे अध्यक्ष मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य अकादमी, सेवानिवृत्त न्यायाधीश मुरलीधर वैष्णव, अनिल जायसवाल, प्रकाश तातेड़ आदि ने ऑनलाइन संबोधित किया। सलिला संस्था की अध्यक्ष डॉ. विमला भंडारी ने दो दिवसीय वेबीनार की रूपरेखा रखते हुए सलिला की विकास यात्रा प्रस्तुत की। इस अवसर पर बालसाहित्यकार मुरलीधर वैष्णव पर केंद्रित 'सलिल प्रवाह' वार्षिक पत्रिका के 10वें अंक का लोकार्पण भी किया गया।

अलग-अलग सत्रों में इंद्रजीत कौशिक (बीकानेर), अल्का प्रमोद (लखनऊ), प्रबोध कुमार गोविल (जयपुर), डॉ. जाकिर अली 'रजनीश' (लखनऊ)ओमप्रकाश क्षत्रिय (रतनगढ़), डॉ. मोहम्मद अरशद खान (शाहजहांपुर), शीला पांडेय (लखनऊ), संतोषकुमार सिंह (मथुरा), गुडविन मसीह (बरेली),राजेंद्र श्रीवास्तव (विदिशा), डॉ. मोहम्मद साजिद खान (शाहजहांपुर), डॉ. देशबंधु शाहजहांपुरी (शाहजहांपुर), कुसुम अग्रवाल (काकरोली), संगीता सेठी (मुबई), डॉ. शील कौशिक, अंजीव 'अंजुम', इंदिरा त्रिवेदी सहित 17 बालसाहित्यकारों ने अपनी-अपनी कहानी का वाचन किया। विभिन्न सत्रों में लखनऊ से प्रकाशित बाल पत्रिका 'बालवाणी' की संपादक डॉ. अमिता दुबे, नेशनल बुक ट्रस्ट दिल्ली के द्विजेंद्र कुमार, डॉ.दिविक रमेश, अनिल जायसवाल, संचय जैन, डॉ. संदीप अवस्थी, प्रकाश तातेड़,रेखा लोढ़ा 'स्मित', संजीव जायसवाल 'संजय'आदि ने कहानी विधा पर अपनी बात रखी।

बाल एकांकी सत्र में गोविंद शर्मा, उमेश चौरसिया, रजनीकांत शुक्ल, नीलम राकेश आदि ने अपने विचार रखे। विभिन्न सत्रों का संचालन डॉ. रेनू श्रीवास्तव ने किया। सलिला संस्था द्वारा प्रतिवर्ष दिए जाने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ओंकारलाल शास्त्री स्मृति पुरस्कार राजेंद्र श्रीवास्तव, प्रभा पारीक, सीमा जैन, डॉ. गोपाल राज गोपाल को संयोजक संजय शास्त्री(कोलकाता) के सौजन्य से दिए गए।

● 29 सितंबर को खुशालसिंह खनी की अध्यक्षता में संपन्न कहानी लेखन कार्यशाला में बालसाहित्यकार मुकेश नौटियाल ने बच्चों को कहानी लेखन की जानकारी दी। कार्यशाला में लगभग तीन दर्जन बच्चों ने भागीदारी की।

● 3 अक्टूबर को ओमप्रकाश शिव की अध्यक्षता में संपन्न कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि गोवर्धन यादव, डॉ. विजयानंद, डॉ. गीता नौटियाल, डॉ.संगम लाल त्रिपाठी, हरवीरसिंह, प्रेमा गड़कोटी, मीनू जोशी, सूबेदार के.पी.सिंह, पुष्पलता जोशी, नलिन खोईवाल आदि ने कविता पाठ किया। संचालन नीरज पंत ने किया।

● 3 अक्टूबर को आयोजित बाल कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि बालसाहित्यकार रमेशचंद्र पंत ने बच्चों को कविता लेखन की बारीकियां बताई। कवि सम्मेलन की अध्यक्ष मीनाक्षी रौतेला तथा संचालक आद्या त्रिपाठी सहित 28 बच्चों ने स्वरचित कविताएं प्रस्तुत की।

●4 अक्टूबर को कहानीकार डॉ. महावीर रवांल्टा की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में सुधा भार्गव ने अपनी कहानी का वाचन किया। कहानी पर बच्चों ने अपनी टिप्पणी दी। मुख्य अतिथि मनोहर चमोली 'मनु' ने कहानी लेखन की बारीकियां बच्चों को बताई।

● 9 अक्टूबर को संपन्न कवि सम्मेलन में प्रख्यात साहित्यकार प्रत्यूष गुलेरी सहित नीरज नैथानी, डॉ. प्रमोद शुक्ला, सुधा गोस्वामी, अजीत राठौर, कौशल पांडे, बृजेंद्र नेगी, नरेंद्र श्रीवास्तव, रेवती मोहन, गीता कन्नौजिया, विष्णु सक्सेना, श्री कृष्ण, डॉ.रितु गुप्ता, गीता जोशी ने कविताएं पढ़ी।

● 9 अक्टूबर को सायंकालीन सत्र में 'ऑनलाइन पढ़ाई पर मेरे विचार' विषय पर आयोजित परिचर्चा में 29 बच्चों ने ऑनलाइन सहभागिता की। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता ऊर्जा जोशी व संचालन रिया बिष्ट ने किया। इस सत्र के मुख्य अतिथि आकाश सारस्वत उप राज्य परियोजना निदेशक, शिक्षा विभाग देहरादून ने बच्चों से कोरोना से बचाव करते हुए पढ़ाई के साथ रचनात्मक कार्यो में भागीदारी करने को कहा।

● 16 अक्टूबर को आयोजित बाल कवि सम्मेलन में अध्यक्ष कनक जोशी, संचालक फाल्गुनी शक्टा सहित 32 बच्चों ने बालप्रहरी द्वारा दिए गए शब्दों के आधार पर स्वरचित कविताएं प्रस्तुत की। इस सत्र के मुख्य अतिथि बालसाहित्यकार सूर्यकुमार पांडेय ने बच्चों को कई बाल कविताएं सुनाई ।

● 17 अक्टूबर को पूरनचंद्र कांडपाल की अध्यक्षता में संपन्न कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि बाबा कानपुरी, संजीव द्विवेदी, रूपा राय, डॉ.सलमा जमाल, नरेंद्र श्रीवास्तव, ओमशरणआर्य 'चंचल', खुशालसिंह खनी, डॉ. अमित कुमार, बलदाऊराम साहू, डॉ. खेमकरन सोमन ने कविताएं पढ़ी। संचालन भीलवाड़ा की रेखा लोढ़ा स्मित ने किया।

● 18 अक्टूबर को कहानी वाचन कार्यशाला में बालसाहित्यकार मनोहर चमोली 'मनु' ने अपनी कहानी 'अब तुम गए काम से' सुनाई। कहानी पर बच्चों ने अपनी प्रतिक्रिया दी। उसके बाद सत्र के अध्यक्ष मुकेश नौटियाल तथा मुख्य अतिथि भगवतीप्रसाद द्विवेदी ने बाल कहानी के विभिन्न पक्षों की जानकारी दी।

कहानी:

धौली और देवदार

● डॉ. नंदकिशोर हटवाल

नदी बह रही थी। कल-कल। छल-छल-छल।

पास खड़े पेड़ ने पूछा, "क्या नाम है?"

नदी ने जवाब दिया, "धौली।"

तब नदी ने पूछा, "तुम्हारा क्या नाम है?"

पेड़ ने कहा, "देवदार"

नदी खित-खित हंसी। नदी ने कहा, "यह कैसा नाम है? देवदार!" देवदार भी हंसा, "अच्छा नाम तो है। तुम्हारा जो कौन अच्छा नाम है धौली।"

धौली थोड़ा लहराई। थोड़ा उछली। फिर उसने आंख चमकाई। खित-खित हंसते हुए कहा, "मेरा नाम अच्छा तो है। मैं साफ-सुथरी हूं। गंदी नहीं हूं। इसलिए मेरा नाम धौली है।"

इस बार देवदार धौली के साथ-साथ हंसा। वह धौली से दोस्ती करना चाहता था। उसने पूछा, "कहां से आती हो?"

धौली ने कहा, "बर्फ के पहाड़ों से। तुम कहां से आते हो?" अब हंसने की बारी देवदार की थी। वह जोर से हंसा। हा! हा! हा! हा! देवदार ने कहा, "मुझे कहां से आना है? मैं तो यहीं पर खड़ा रहता हूं।"

धौली भी साथ में हंसी, "अरे हां! भूल गई। तुम तो यहीं खड़े रहते हो।" इस बार धौली ने देर तक देवदार को देखा। तने से लेकर चोटी तक।

देवदार ने कहा, "मेरी दोस्त बनोगी? तुम बहती रहना। मैं यहां खड़ा रहूंगा।"

धौली ने मुस्कराते हुए ''हां'' कहा। वह आगे के तेज ढलान पर बहने लगी। कल-कल-कल। छल-छल-छल।

-एच-323, नेहरू कालोनी, देहरादून
मोबाइल -9412119112

''हमारा उद्देश्य'' ''आपकी उन्नति''

अल्मोड़ा अर्बन को-आपरेटिव बैंक लि.

(उत्तर भारत का सबसे बड़ा नगर सहकारी बैंक)

प्रधान कार्यालयः- लाला बाजार अल्मोड़ा (उत्तराखंड)

फोन- 05962-230743, 231947, फैक्स- 05962-237703

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

पी. सी. तिवारी — सचिव/महाप्रबंधक
सुनील कुमार अग्रवाल — उपाध्यक्ष
आनंदसिंह बगड्वाल — अध्यक्ष

पुस्तक प्राप्ति

पुस्तक : नई सुबह
रचनाकार : रामेंद्र कुशवाहा
संपर्क : कुंज विहार, बंजारावाला,अजबपुर खुर्द, देहरादून

पुस्तक : पत्र संबंध
रचनाकार : टीका ढुंगेल
संपर्क : नेपाली साहित्य परिषद, हुलाक,गांतोक, पूर्व सिक्किम

पुस्तक : आओ चांद सितारो खेलें
रचनाकार : भवानी शंकर गौड़,
संपर्क : 57 धोली बावड़ी मार्ग, सुथार वाड़ा, उदयपुर, राजस्थान-313001

पुस्तक : आंखिन-देखी
रचनाकार : डॉ. गौरीशंकर श्रीवास्तव 'पथिक'
संपर्क : पथिक कुटीर, गली-5, जवाहरनगर, सतना, म.प्र.

पुस्तक : जठराग्नि से आगे.....
रचनाकार : अमरेंद्रकुमार सिंह
संपर्क : पॉकेट-3,द्वारका, सै. 3 पोस्ट बाक्स 9645 जनकपुरी,दिल्ली-58

पुस्तक : मस्ती की पाठशाला
संपादक : डॉ. दलजीत कौर
संपर्क : 2571 सैक्टर 40 सी, चंडीगढ़

पुस्तक : बैजू का सपना
संपादक : डॉ. उषा शॉ
संपर्क : बी/4/12 मदिरा अपार्ट., 197 पाठक पाड़ा रोड, कोलकाता- 700060

पुस्तक : हमारा उत्तराखंड
रचनाकार : हिमांशु जोशी
संपर्क : अनुकंपा सदन, छतार,पुनेठी, चंपावत - 262523

पुस्तक : खो गई परियां
रचनाकार: डॉ. हूंदराज बलवाणी
संपर्क : 172 महारथी सोसाइटी, सरदारनगर, अहमदाबाद-382475

पुस्तक : फूलवारी
रचनाकार: मीना सुब्बा
प्रकाशक : मंदरा हिम, स्वस्तिक चौतारा, गांतोक,सिक्किम

पुस्तक : महान नारी कस्तूरबा गांधी
रचनाकार: स्नेहलता
संपर्क : 1/309 विकासनगर, लखनऊ, उ.प्र. 226022

पुस्तक : बच्चे जो जाते स्कूल
संपादक : केशरीप्रसाद पांडेय 'वृहद'
संपर्क : 527/25-ए, अर्पणनगर, न्यू जगदंबा कॉलोनी, जबलपुर,म.प्र.

पत्रिका : समय सुरभि अनंत
संपादक : नरेंद्रकुमार सिंह
संपर्क : शिवपुरी,जेल क्वार्टर से पश्चिम, बेगूसराय, बिहार - 851101

पत्रिका : दीवान मेरा
संपादक : नरेंद्रसिंह परिहार
संपर्क : सी-004 उत्कर्ष अनुराधा,सिविल लाइंस, नागपुर- 440001

पुस्तक : अलबेली चमेली
रचनाकार : सुनीता चौहान
संपर्क : आई- 1, फ्रेंडस एंक्लेव, शाहनगर, देहरादून

पुस्तक : सफेद फूल
रचनाकार : डॉ. चंद्रसिंह तोमर 'मयंक'
प्रकाशक : आमवाला(अपर) तपोवन, नालापानी, देहरादून

पत्रिका : नवल
संपादक : हरि मोहन 'मोहन'
संपर्क : उत्तराखंड प्रेस,रानीखेत रोड, रामनगर, नैनीताल - 244715

पत्रिका : बाल वाणी
संपादक : डॉ. अमिता दुबे
संपर्क : उ.प्र.हिंदी संस्थान, 6 महात्म गांधी मार्ग,हजरतगंज, लखनऊ,उ.प्र.

बालप्रहरी बाल क्लब

उन्मुख काण्डपाल, हल्द्वानी | सुदिति पंत, अहमदाबाद | नवन्या सांगा, अल्मोड़ा | रिया बिष्ट, कोटाबाग | रोमा चंद, हल्द्वानी | शिवांशी जोशी, गरुड़ | अभिज्ञान जोशी, बागेश्वर | सुवर्णा जोशी, गागरीगोल | ऋषि जोशी, लखीमपुर, खीरी

जागृति तिवारी, रानीखेत | सानिया अधिकारी, रानीखेत | आदित्य बोरा, अल्मोड़ा | ईशा तोमर, नागथात, देहरादून | खुशी बोरा, अल्मोड़ा | दिव्यांश तिवारी, हल्द्वानी | सृष्टि बिष्ट, बरेली | उदिता जोशी, लखीमपुर, खीरी | चैतन्य बिष्ट, अल्मोड़ा

रचित शक्टा, चम्पावत | कनिका पाल, देहरादून | अभिषि गुप्ता, जम्मू | उपासना तिवारी, दुगालखोला, अल्मोड़ा | मानवी बिष्ट, रानीखेत | अकजिता यादव, छिंदवाड़ा, म.प्र. | आद्या त्रिपाठी, लोहाघाट | आयुष नाथ गोस्वामी, नौलाकोट | खुशी, नागथात, देहरादून

पंजीकरण संख्या : 072020001874

बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा, उत्तराखंड

दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601

Web : www.balprahri.com E mail : balprahri@gmail.com Phone : 05962-297239 मोबा.: 9412162950

✦ सन् 2004 से त्रैमासिक बाल पत्रिका बालप्रहरी का नियमित प्रकाशन (पत्रिका के प्रत्येक अंक में लगभग 12 से अधिक पृष्ठों पर लगभग 50 बच्चों की रचनाओं का प्रकाशन) ✦ बाल पुस्तकालय का संचालन। ✦ आई.एस.बी.एन. नंबर सहित 25 पुस्तकों का प्रकाशन। ✦ बाल मेले/बाल विज्ञान मेले/पर्यावरण मेले/बच्चों की लेखन कार्यशाला सहित 1987 से अभी तक बच्चों की 5 दिवसीय 280 कार्यशालाओं का जन सहयोग से आयोजन। ✦ बालसाहित्य पर स्थानीय स्तर की कार्यशालाएं। ✦ सन 2006 से प्रतिवर्ष जून माह में बालसाहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन। ✦ बालसाहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अभी तक 185 बालसाहित्यकारों का जन सहयोग से सम्मान। ✦ 'उत्तराखंड के बालसाहित्य रचनाकार एवं उनका रचना संसार' ग्रंथ प्रकाशनाधीन। ✦ हिंदी के साथ ही कुमाउनी तथा अन्य आंचलिक भाषाओं में बालसाहित्य लेखन को बढ़ावा। ✦ कोरोना काल में ऑनलाइन कविता/कहानी लेखन कार्यशाला, पत्र लेखन कार्यशाला, बाल कवि सम्मेलन, कहानी वाचन, कविता वाचन, परिचर्चा, भाषण, कुमाउनी भाषण, चित्रकला, चुटकुलों, पहेलियों की कार्यशाला में लगभग 198 बच्चों की सहभागिता।

बालप्रहरी/बालसाहित्य संस्थान को मित्रों/शुभचिंतकों से सहयोग एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है।

(रतनसिंह किरमोलिया) अध्यक्ष | (नीरज पंत) उपाध्यक्ष | (प्रकाश जोशी) कोषाध्यक्ष | (उदय किरौला) सचिव

सदस्य: ✦ सर्वश्री मोहनलाल टम्टा ✦ प्रमोद तिवारी ✦ डॉ. महेंद्रप्रताप पांडेय 'नंद' ✦ गरिमा राना ✦ अनिल पुनेठा

ऊर्जा जोशी, कक्षा-8
डीम्ड पब्लिक स्कूल सिंगाही खीरी, उ.प्र.

आदित्य त्रिपाठी, कक्षा-8
गुरुकुल स्कूल लोहाघाट, चम्पावत

पूर्वांशी ध्यानी, कक्षा-7, रा.इ.का. धूमाकोट, पौड़ी

महिमा तिवारी, कक्षा-9, ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल, अल्मोड़ा

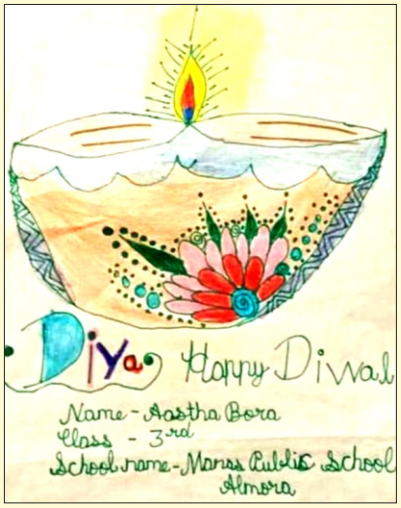

आस्था बोरा, कक्षा-3
मानस पब्लिक स्कूल, अल्मोड़ा

नवन्या सांगा, कक्षा-3
सरस्वती शिशु मंदिर, अल्मोड़ा

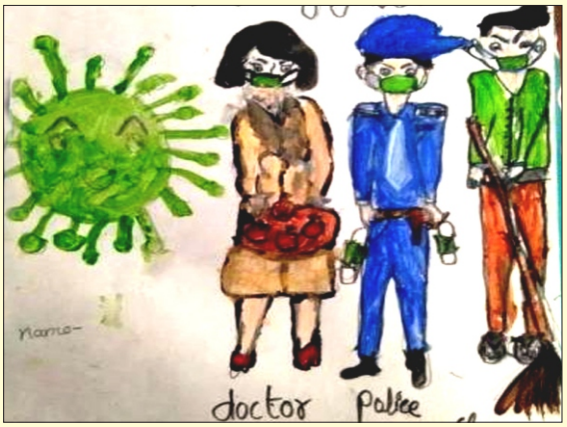

सुविज्ञा शर्मा, कक्षा-3
दतिया, मध्य प्रदेश

सुदीति पंत, कक्षा-3, पिक्स अहमदाबाद

विनोद सिंह मेहता, कक्षा-8, रा.जू.हा.स्कूल चचना मुनस्यारी

RNI No. UTTHIN/2004/18604

सेवा में,

प्रेषक : संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा, उत्तराखंड। मो. 9412162950

मुद्रक : प्रकाश पब्लिकेशन, हल्द्वानी। मो. : 9412092336, 9761464264